Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

एवं पावेहिं अप्पाणं,
अज्झप्पेण समाहरे।।

जैसे कछुआ अपने अंगों को अपने शरीर में समेट लेता है, इसी प्रकार पंडित पुरुष अपनी आत्मा को पापों से बचा अध्यात्म में ले जाए।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 30 • 1 - 7 मई, 2023 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 29-04-2023 • पेज : 28 • ₹ 10

गुरुवर, वंदन बारंबार!

सहज, सौम्य का उद्भव तुममें,
सहज विधायक चिंतन-धारा
प्राप्त तुम्हारी ऊर्जा पावन
है विश्वत यह संघ हमारा
जन जन की पीड़ा को हरते,
देकर के सबको सुख-सार!

निज-पर का कल्याण लक्ष्य तव
जीवन है शुभ श्रम की गाथा!
ऋजुता दृढता के संगम, हे!
तव श्रम सार्थक - ध्येय हमारा!
गुरुवर! तव दीक्षोत्सव पर हो
यौवन का सबमें संचार!

गुरुवर, वंदन बारंबार!

श्रद्धाप्रणतः तेरापंथ टाइम्स परिवार

आचार्य महाश्रमण दीक्षा कल्याण महोत्सव विशेषांक

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
1 - 7 मई, 2023

✦ *जितना-जितना आदमी के जीवन में संयम बढ़ता है, त्याग बढ़ता है, उससे धर्म की पुष्टि होती है और जितना जीवन में असंयम बढ़ता है, उससे अधर्म की वृद्धि होती है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

भक्ति में समर्पण व सम्मान का भाव होना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

भगवान महावीर यूनिवर्सिटी, वेसु-सूरत, २२ अप्रैल, २०२३

डायमंड नगरी एवं सिल्क सिटी के नाम से विख्यात गुजरात की व्यावसायिक राजधानी सूरत में शनिवार प्रातः से एक अलग ही अंदाज नजर आ रहा था। जहाँ तक नजर जा रही थी वहाँ तक तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता की जय-जयकार हो रही थी। लगभग २० वर्ष बाद तेरापंथ के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में विशाल कार्यक्रम आयोजित होने जा रहा था। अक्षय तृतीया कार्यक्रम के लिए आचार्यप्रवर ने प्रातः पर्वत पाटिया से विहार किया। उससे पूर्व हजारों श्रद्धालु अपने आराध्य के स्वागत में पहुँच चुके थे। समय के साथ जनता का सैलाब सूरत की चौड़ी सड़कों को आप्लावित बनाए हुए था। बुलंद जयघोषों के के साथ हर व्यक्ति महामहिम आचार्यप्रवर को निहार रहा था। जन-जन पर अपने दोनों हाथों से आचार्यप्रवर आशीष वृष्टि करते हुए अपने गंतव्य की ओर गतिमान थे। ग्यारह किलोमीटर के प्रलंब विहार को पूर्ण कर आचार्यप्रवर अपनी धवल सेना के साथ अष्टदिवसीय प्रवास हेतु भगवान महावीर यूनिवर्सिटी परिसर में बने भगवान महावीर इंटरनेशनल स्कूल के भवन में पधारे।

भक्तजनों के त्राता, आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के अनंतर पट्टधर आचार्यश्री महाश्रमणजी प्रातः अक्षय तृतीया पारणा महोत्सव हेतु विशाल जनमेदिनी के साथ सूरत के वेसु क्षेत्र में स्थित भगवान महावीर यूनिवर्सिटी में अष्ट दिवसीय प्रवास हेतु पधारे। जहाँ हजारों की संख्या में श्रद्धालु अपने आराध्य के स्वागत में साथ चल रहे थे तो वहीं सड़कों के दोनों किनारों पर मार्ग में आचार्यश्री के दर्शन के लिए आतुर भी हो रहे थे।

पूज्यप्रवर पर्वत पाटिया से विहार कर जब सिटीलाइट सभा भवन पधार रहे थे तो मुनि उदित कुमार जी एवं मुनि मोहजीत कुमार जी आदि संतों ने पूज्यप्रवर की अगवानी की। साध्वी मधुबाला जी एवं साध्वी लब्धिश्रीजी ने भी पूज्यप्रवर के मार्ग में दर्शन कर धन्यता का अनुभव किया। अनेक समणियों ने भी पूज्यप्रवर के दर्शन किए।

अणुव्रत द्वार से रैली के रूप में पूज्यप्रवर की यात्रा आगे बढ़ी और भगवान महावीर यूनिवर्सिटी पहुँचने पर यात्रा संपन्न हुई। चारों ओर श्रावक समाज हजारों की संख्या में नजर आ रहा था।

मानवता के मसीहा परम पावन ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि अध्यात्म की साधना में भक्ति का भी महत्त्व है। शुद्ध भाव से अपने आराध्य के प्रति जो निर्मल भक्ति होती है, वह शक्तिदायिनी बन सकती है। भक्ति में समर्पण और सम्मान का भाव हो, दिखावा न हो। भीतर से जो भक्ति होती है, वह मूल भक्ति का प्राण तत्त्व होता है।

शास्त्रों में चौबीस तीर्थंकरों को नमस्कार किया गया है—ऋषभ से लेकर महावीर तक। भक्ति अभिव्यक्त उनके प्रति की गई है। साथ में निर्ग्रन्थ प्रवचन के प्रति भी कहा गया है कि यह निर्ग्रन्थ प्रवचन सत्य और निरुत्तर है, सब दुखों से मुक्ति का मार्ग है। इन वाक्यों में विनय, भक्ति, समर्पण—ये ऐसे तत्त्व हैं कि इन तत्त्वों की जितनी निःस्वार्थता और निष्कामता हो, वह निर्मलता को पुष्ट करने वाली बात हो सकती है।

सशक्त समर्पण में कोई शर्त नहीं होनी चाहिए। समर्पण दो प्रकार का होता है—व्यक्तिपरक समर्पण और आदर्शपरक समर्पण। महान और वीर व्यक्ति महान पथ के प्रति समर्पित हो जाते हैं। समर्पण और भक्ति में शक्ति होती है। जहाँ अहंकार है, वहाँ भक्ति से विपरीत बात हो सकती है। अपने आराध्य के प्रति भीतरी भक्ति, निश्छल भक्ति, बिना कोई दिखावे की भक्ति होती है, उसका महत्त्व होता है।

कल अक्षय तृतीया भगवान ऋषभ से जुड़ा दिन है। तपस्या, वर्षीतप के साथ जुड़ा दिन है। वीतराग आत्मा, अर्हतों के प्रति हमारी भक्ति हो। जैन शासन में नमस्कार महामंत्र अत्यंत प्रचलित है। नमस्कार महामंत्र भक्ति का ही एक रूप है। प्रत्येक पद का प्रारंभ नमो-नमो से होता है। हमारा उत्तमांग मस्तिष्क वीतराग परमात्मा के प्रति झुक जाता है। राजा और देवता भी नमस्कार करते हैं। त्याग-संयम के प्रति सम्मान की अभिव्यक्ति होती है।

नमस्कार महामंत्र का उच्चारण श्रद्धा-भक्ति के साथ हो तो वह महान निर्जरा का कारण बन सकता है। भगवान ऋषभ से लेकर महावीर तक का नाम जो एक बार ले लेता है, तो वह संसार सागर से तारने वाला हो सकता है। भक्ति में शक्ति और चमत्कार हो सकता है। आत्मा परमात्मा पद को प्राप्त कर सकती है। निर्मलता की पराकाष्ठा का विकास हो जाता है।

वर्षीतप करना एक अच्छी साधना है। यह भी भगवान ऋषभ के प्रति भक्ति का प्रयोग है। वर्षीतप (एकांतर तप) का रास्ता भी बढ़िया रास्ता है। हमारा आराध्यों के प्रति भक्ति का भाव हो, नियमों के प्रति समर्पण का भाव हो। आचार्य भिक्षु ने शांति रखते हुए एक क्रांति की थी। लीक से हटकर कार्य किया था। समर्पण का भाव भी था। आचार्य तुलसी के कितने भक्तिपरक गीत हैं। साथ में सिद्धांत भी बताए हैं। जयाचार्य की चौबीसी भी भक्तिपरक है, साथ में तत्त्व ज्ञान भी भरा पड़ा है। साथ में साधना की भी बात है। इस तरह की भक्ति से हम निर्जरा के पात्र भी बन सकते हैं। हमारे में आध्यात्मिक भक्ति का विकास हो।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि वर्तमान की दुनिया में विष तो बहुत है, पर अमृत नहीं है। वृक्ष तो बहुत हैं, पर कल्पवृक्ष नहीं हैं। आज सूरत में एक ऐसा कल्पवृक्ष आचार्यप्रवर के रूप में आया है, जो आध्यात्मिक उद्देश्यों को पूर्ण करने वाला है। कल्पवृक्ष लोगों की चेतना को झंकृत करता है। आचार्यप्रवर लोगों की ज्ञान चेतना, विवेक चेतना को जागृत करने आए हैं। उपशम की चेतना जगाने आए हैं। गुरुदेव रत्नों के भंडार हैं।

मुनि उदित कुमार जी, मुनि मोहजीत कुमार जी, साध्वी मधुबाला जी, साध्वी लब्धिश्री जी ने अपनी-अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर के स्वागत में व्यवस्था समिति अध्यक्ष संजय सुराणा, वेसु के कॉर्पोरेटर हिमांशु भाई राउल ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। रमेश चोरड़िया ने ३१ की तपस्या एवं अन्य तपस्वियों व वर्षीतप के अंतिम उपवास के तपस्वियों ने पूज्यप्रवर से प्रत्याख्यान लिया। मिलन व संयम आंचलिया, किशोर मंडल ने भी अपनी-अपनी भावना अभिव्यक्त की। तेरापंथ समाज ने समूह गीत प्रस्तुत किया। ज्ञानशाला की सुंदर प्रस्तुति हुई।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

ज्ञान का सक्षम साधन है श्रोतेन्द्रिय : आचार्यश्री महाश्रमण

किम, सूरत (गुजरात), १८ अप्रैल, २०२३

तेरापंथ के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः अणुव्रत यात्रा के साथ लगभग १२ किलोमीटर का विहार कर किम में प्रवास हेतु पधारे। मंगल देशना प्रदान करते हुए तरुण तपस्वी ने फरमाया कि हमारे पास पाँच इंद्रियाँ हैं। पाँचवीं इंद्रिय है—श्रोतेन्द्रिय। श्रोतेन्द्रिय से प्राणी पंचेन्द्रिय बनता है।

श्रोतेन्द्रिय हमारे सुनने का साधन है। इससे प्राणी सुनकर शब्द ग्रहण कर लेता है। शब्द और अर्थ में संबंध है। शब्द सुनकर हम अर्थ का बोध कर पाते हैं। शब्द पुद्गल होते हैं। ये कान के द्वारा गृहीत होते हैं। ज्ञान का सक्षम साधन श्रोतेन्द्रिय है। अच्छा जानकार प्रवचन करने वाला अच्छा सुबोध प्रदाता बन सकता है। श्रोता जब ध्यान से सुने तो उसे बोध प्राप्त हो सकता है।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

मानव जीवन का सदुपयोग धर्मसाधना में करें : आचार्यश्री महाश्रमण

कामरेज, सूरत २० अप्रैल, २०२३

अध्यात्म के प्रेरक आचार्यश्री महाश्रमण जी विशाल जनमेदिनी के साथ प्रातः लगभग ११ किलोमीटर का विहार कर कामरेज के तेरापंथ भवन में प्रवास हेतु पधारे। कामरेज सूरत शहर के उपनगर जैसा ही है और श्रद्धा का अच्छा क्षेत्र है।

महामनीषी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन शासन में आगम शास्त्र है। हमारी परंपरा में ३२ आगम सम्मत हैं। आगमों का बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है। आगम एक दिशा निर्देशक, नियामक है। शास्त्र में बताया गया है कि मोक्ष मार्ग क्या है? चार चीजें बताई गई– ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप। ये चारों मिलकर एक मार्ग बनते हैं। अलग-अलग मार्ग नहीं हैं। कोरा ज्ञान, दर्शन, चारित्र या तप पर्याप्त नहीं है।

ज्ञान और आचार नदी के दो तट हैं। एक किनारे से दूसरे किनारे पर जाने के लिए पुल सहारा बनते हैं। विचार और आचार के लिए संस्कार का पुल होना चाहिए। ज्ञान को आचार में मिलने के लिए दर्शनरूपी पुल चाहिए। श्रद्धा-आस्था अच्छी हो जाए। सर्व दुःखमुक्ति-मोक्ष का मार्ग है–सम्यग् ज्ञान, सम्यग् दर्शन और सम्यग् चारित्र।

अच्छे विचारों को सुनना भी अच्छी बात है। आदर्श में आगे बढ़ने के लिए धीरे-धीरे आगे बढ़ें। जो बातें सुनी वो जीवन में आ जाएँ तो और अच्छी बात हो सकती है। कई बार एक-एक वाक्य कल्याण करने वाला हो सकता है। यह एक प्रसंग से समझाया कि बहुत गया, थोड़ा बचा, रंग में भंग मत डालो।

प्रवचन में कई बार ऐसे वाक्य आ जाते हैं कि वैराग्य हो सकता है, जीवन की समस्याओं का समाधान मिल सकता है। सम्यग् ज्ञान हो और उस पर आस्था दृढ़ हो फिर आचार भी ठीक हो जाए, इसका मतलब मोक्ष के मार्ग पर हम स्थित हो गए हैं, आगे बढ़ सकते हैं। चारित्र में महाव्रत धारण करना भी बड़ी बात है।

गृहस्थ जीवन में भी संयम का जितना विकास हो सके, साधना का प्रयास करें। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम जैन-अजैन किसी के भी जीवन में आ जाएँ तो आदमी का जीवन संवर सकता है। सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति से जीवन अच्छा बन सकता है। मानव जीवन को व्यर्थ न गँवाएँ, इसका धर्म साधना में अच्छा उपयोग करें। धन साथ में जाने वाला नहीं है, धर्म साथ में जाने वाला है, उस पर विशेष ध्यान दें।

आज कामरेज के तेरापंथ भवन में आना हुआ है। सबके जीवन में धार्मिक आचरण रहे। आत्म-कल्याणकारी अच्छे काम चलते रहें। जैन-अजैन सभी में अच्छे धार्मिक संस्कार पुष्ट होते रहें।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि एक शिष्य गुरु के पास जाकर बोला कि मुझे मोक्ष प्राप्त करना है। तो गुरु ने बताया कि मोक्ष को प्राप्त करने के लिए ज्ञान की क्यारी को सींचना होगा। श्रद्धा की आँच में अपने आपको तपाना होगा और चारित्र के पथ पर आगे बढ़ना होगा; तो लक्ष्य प्राप्त हो जाएगा। सम्यग् ज्ञान, दर्शन और चारित्र की आराधना से मोक्ष प्राप्त हो जाएगा। हम इन तीनों को समझकर जीवन में उतारने का प्रयास करें। गुरु हमारे मार्गदर्शक होते हैं।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्थानीय सभाध्यक्ष कंवरलाल धूपिया, महावीर गन्ना, तेयुप अध्यक्ष पिंटू मांडोत, प्रवीण बाबेल, कन्या मंडल, महिला मंडल, वर्धमान स्थानकवासी संघ से मुकेश कोठारी, चंदनबाला ने अपने भाव व्यक्त किए। स्थानकवासी विधायक मनुभाई पटेल ने पूज्यवर के दर्शन किए। महिला मंडल एवं तेयुप ने समूह गीत प्रस्तुत किया। किशोर मंडल व ज्ञानशाला की सुंदर प्रस्तुति हुई।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

ज्ञान का सक्षम साधन है ...

(पृष्ठ २ का शेष)

सुन करके आदमी कल्याण के बारे में जानता है, सुन करके आदमी पाप को भी जान लेता है। दोनों को जानने के बाद जो छेक-श्रेयस्कर हो उसका आचरण करना चाहिए। हम कान का अच्छा उपयोग करें। आजकल तो दूर बैठकर भी साक्षात सुना जा सकता है। अतीन्द्रिय ज्ञानी सूक्ष्म को जान सकता है। सुनने से जानकारियाँ मिल सकती हैं। कान का दुरुपयोग न हो।

भगवत-आर्षवाणी को कान से सुनें। अच्छी बातों को सुनने का प्रयास करें। न्यायाधीश को भी दोनों तरफ की बात ध्यानपूर्वक सुनकर तटस्थ फैसला लेना चाहिए। अच्छा वक्ता और अच्छा श्रोता मिल जाए। श्रोता सोता न रहे। तीन तरह के आदमी होते हैं–सोता, श्रोता और सरौता। समीक्षात्मक बुद्धि हो।

अच्छे व्यक्तियों के गुणगान हों, उनके प्रति प्रमोद भावना रहे। कान की शक्ति हमारे पास है, यह भी एक विशेषता है। सुनने का यथोचित्य प्रयास करें। दो व्यक्ति बात करते हों तो बीच में न जाएँ। मूर्ख कौन! जो चलता हुए खाए, जो हँसता हुआ बोले, बीती बात को बार-बार याद करे या किसी पर कोई उपकार कर दिया वो बार-बार गिनाए और दो आदमी जब बोल रहे हों तो उनके बीच में चला जाए वो मूर्ख आदमी होता है।

आज सूरत के पार्श्विक क्षेत्र किम आए हैं। यहाँ भी अच्छी धर्म चेतना रहे। साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि गुरु की महिमा अतिशय संपन्न होती है। गुरु के सामने चिंतामणि रत्न, कामधेनू और कल्पवृक्ष का महत्त्व भी बहुत कम हो जाता है। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें एक ऐसे गुरु प्राप्त हुए हैं, जो शिष्यों की मति के वैभव को बढ़ा रहे हैं। पूज्यप्रवर अणुव्रत यात्रा से मानव को मानव बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्थानीय सभाध्यक्ष सुरेश, किम के उप-सरपंच मनोहर, ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कन्या मंडल किम व महिला मंडल ने संयुक्त रूप से गीत प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

साध्वीप्रमुखाश्री के मनोनयन पर आध्यात्मिक उद्गार

अर्हम्

● **साध्वी शुभप्रभा** ●

वर्धापन करने उत्सुक है श्रद्धा भीगा पल्लव-पल्लव।
डाल-डाल पर पक्षी चहके मंगल गीतों का गुंजारल।।

भाव तरंगें मचल रही हैं छूने नभ की ऊँचाई को।
गिरती-उठती और मचलती पाने अंतः गहराई को।
किस्मत की किश्ती पहुँचाएँ तट पर आर-पार अर्णव।।

सम-शम-श्रम का अवलंबन ले चले चरण आरोहण करते।
तप-जप-ध्यान-मौन परकोटा भीतर का परिशोधन करते।
स्वाध्याय-नाद होता जब मुखरित चुप्पी साधे पंचम कलरव।।

संयम रक्षा-कवच तुम्हारा गुरुनिष्ठा का संबल साथ।
आत्म-सदन में सदा निहारा आर्यत्रयी का सिर पर हाथ।
पौरुष की प्रतिमान बनी हो, कालजयी बन जाए हर लव।।

सीखें तेरी सन्निधि में हम आत्म-विकास के गीत नए।
तन-मन-वचन-कर्म स्याही से लिखते जाएँ लेख नए।
शिक्षण-वीक्षण और समीक्षण, धार बहाओ तुम अभिनव।।

आज सलोनी भोर भई करने वंदन-अभिनंदन।
सतरंगे फूलों से सुरभित तेरापंथ का यह नंदनवन।
महातपस्वी महाश्रमण का अभिलेख बना गण का गौरव।।

उन्नत भाल पर तिलक लगाएँ चिन्मय जोत जले ज्योतिर्मय।
श्रुत-सागर में कर अवगाहन पाएँ मुक्ताफल अमृतमय।
यही सदाशय रहो निरामय, फैलाते आध्यात्मिक सीख।।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
1 - 7 मई, 2023

✦ *गुरु ज्ञानदाता होते हैं। वे संस्कार भरते हैं, अनुशासन करते हैं। जिनसे कुछ प्राप्त हुआ, उनके नाम को छिपाएँ क्यों?*
–आचार्यश्री महाश्रमण

विशेष लेख

अभिवंदना तेजस्वी संन्यास की

❐ साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा ❐

भारतीय संस्कृति ऋषियों की संस्कृति रही है। इसकी दो प्रमुख धाराएँ हैं–वैदिक संस्कृति और श्रमण संस्कृति। वैदिक संस्कृति में जीवन के ऊर्ध्वारोहण के लिए चार आश्रमों की व्यवस्था है–ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास, जिसमें 'योगेनान्ते तनुत्यजाम्' का स्वर बुलंद रहा है। श्रमण संस्कृति में जैन परंपरा निवृत्तिप्रधान है। इसने संन्यास आश्रम को महत्त्व दिया है।

प्रश्न होता है कि संन्यास कब लिया जाए? वेदों में संन्यास आश्रम व्यवस्था से भिन्न भी एक चिंतन प्राप्त होता है–**यदहरेव विरजेत् तदहरेव प्रव्रजेत्।** जिस दिन मन संसार से विरक्त हो जाए, उसी दिन दीक्षित हो जाना चाहिए। जैन परंपरा में भी यही मान्यता है। भगवान् महावीर के पास कोई वैरागी आता तो उनका एक ही निर्देश रहता **'अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह'**–देवानुप्रिय! तुम जैसा चाहो करो। विलंब मत करो! अहिंसा, संयम और तप की चेतना का जागरण होने पर साधक मोक्ष मार्ग की दिशा में प्रस्थित हो जाता है, किंतु जीवन के प्रभात काल में, शैशव अवस्था में इस साधना में संलग्न हो जाना, इंद्रिय और मन के निग्रह में रत हो जाना विशिष्ट बात है। बचपन के कोमल व ग्रहणशील मस्तिष्क में सुसंस्कारित अध्यात्म के बीज का वपन हो जाए तो जीवन को दिशा और गति उपलब्ध हो जाती है। इसी आशय से जैन परंपरा में साधिक आठ वर्ष में संन्यास जीवन में प्रवेश मान्य किया गया है।

संन्यास को स्वीकार करना जीवन की महत्त्वपूर्ण घटना है। उस संन्यास को सूर्य के समान प्रकाशवान, दीप्तिमान और तेजस्वी बनाना दिव्यता की अभिव्यक्ति का लक्षण है। खेत में केवल बीज के वपन मात्र से कार्य संपन्न नहीं होता, अपितु अपेक्षानुसार प्रकाश, पानी व पुरुषार्थ की युति ही सम्यक् निष्पत्ति ला सकती है। इसी प्रकार संन्यास जीवन में प्रवेश करने के पश्चात् साधना के विविध आयामों का दीर्घकालीन अभ्यास तेजस्विता को प्रवर और प्रखर बनाता है। इसका जीवंत निदर्शन है जैन श्वेतांबर तेरापंथ के उज्ज्वल, ऊर्जस्वल, तपोमय व तेजोमय ग्यारहवें पट्टधर आचार्य महाश्रमणजी।

बालक मोहन ने उदीयमान दिनकर तुल्य सौम्य आभा के साथ साधिक बारह वर्ष की अल्पायु में तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षित होकर आत्मारोहण की दिशा में चरणन्यास किया। वर्धमान अवधिज्ञान की तरह श्रमण मुदित की साधना बढ़ती रही। अंतर्मुखी और ऊर्ध्वमुखी व्यक्तित्व से निखरते तेजस्वी संन्यास ने आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के हृदय में विश्वास का दीप प्रज्वलित कर दिया। फलस्वरूप उन्होंने मुनि मुदित को उच्च पद पर आसीन कर दिया। श्रमण से महाश्रमण बना दिया। संघ शिरोमणि आचार्य महाश्रमणजी का संन्यास तेजस्वी संन्यास है, जिसके मूल में है–उनकी निवृत्ति मार्ग की साधना। महाव्रत के महापंथ पर गति करते हुए उन्होंने इस पद्य को चरितार्थ किया है–

'नहीं किसी सूं नेह, देह का सुख नहीं चाहे।
सीत उसन सिर सहै, आदि अन्त एसी निर्वाहे।।'

उनकी निःसंगता, निर्लिप्तता, अनासक्ति, तटस्थता, जागरूकता व अहिंसा, संयम, तप से भावित हर सांस ने उनके संन्यास को तेजस्वी बनाया है। उनके संन्यास की तेजस्विता में हेतुभूत कई तथ्य हैं, उनमें से कुछ बिंदु यहाँ उल्लिखित हैं।

दर्शनाचार से दर्शन विशोधि

आचार्य के संन्यास की तेजस्विता उत्तरोत्तर निखार पा रही है। इसका पहला हेतु है–दर्शनाचार। आचार्य महाश्रमणजी की अर्हत-भक्ति एवं गुरु-भक्ति अनिर्वचनीय है। अर्हत-आज्ञा की सम्यक् अनुपालना ही आचार्य महाश्रमणजी की अर्हत आराधना है, आगम-वाणी पर सुदृढ़ श्रद्धा उनकी अर्हत-उपासना है। साथ ही भिक्षु परंपरा से प्राप्त सिद्धांत, मान्यता और मर्यादाओं का संघ में सम्मान और समाचरण उनकी गुरु-भक्ति है। आंधी में वृक्ष उखड़ सकते हैं, भूकंप में पर्वत हिल सकते हैं, किंतु आचार्य महाश्रमणजी की अर्हत-भक्ति और गुरु-भक्ति अविचल है, अप्रकंप है। यही राज है उनकी दर्शन विशोधि का। यह दर्शन की विशुद्धि उनके संन्यास को तेजस्वी बना रही है।

दर्शन को पुष्ट करने के लिए आचार्यप्रवर बारह व्रती श्रावक और सुमंगल साधना करने वाले साधक-साधिकाओं को तैयार कर रहे हैं। अपने प्रवचनों में भी सम्यग्-दर्शन को व्याख्यायित करते रहते हैं।

अद्भुत है ज्ञान का आलोक

आचार्य महाश्रमणजी के तेजस्वी संन्यास का दूसरा आधार है–ज्ञान का आलोक। दादूदयाल के शब्दों में कहें तो–

'आतम के आस्थान हैं, ज्ञान, ध्यान बेसास।
सहज सील संतोष सत, भाव भगति निधि पास।।'

ज्ञान के साथ जुड़ी आचार्यश्री महाश्रमणजी की निर्मलता, उदारता व नित्य नवीनता उनकी आभा व प्रभा को प्रकृष्टता प्रदान करने वाली है। उनके ज्ञान के निर्मल पर्यव स्मृति-सौष्ठव का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। दीपक प्रकाश फैलाता है। आचार्य महाश्रमणजी का ज्ञान प्रदीप सहस्रों भव्य आत्माओं के भीतर निर्मल ज्ञान प्रदीपों को प्रज्वलित करने वाला है।

श्रुत की अविच्छिन्न परंपरा के संवाहक आचार्यश्री महाश्रमणजी संघ के हर सदस्य को ज्ञानाराधना की प्रेरणा प्रदान करते हैं। उन्हें ज्ञान-संपन्न बनाने के लिए अपने समय व शक्ति का नियोजन करते हैं। भीलवाड़ा चातुर्मास में साधु-साध्वियों की ज्ञान-चेतना के विकास हेतु प्रशस्त क्रम शुरू हुआ। महाश्रमणी साध्वी प्रमुखाश्री साध्वियों के साथ सूर्योदय के समय पूज्यवर के प्रवास स्थल पर दर्शनार्थ पधारते थे। आचार्यवर को वंदन करते ही ज्ञानाराधना का क्रम प्रारंभ हो जाता। आचार्यश्री भिक्षु द्वारा रचित नव पदार्थ की वाचना व जिज्ञासा-समाधान का उपक्रम श्रोताओं को तत्त्वज्ञान की गहराई में ले जाने का निमित्त बना। उसी चातुर्मास में भिक्षु-दर्शन कार्यशाला ने तेरापंथ की मान्यताओं को युगीन संदर्भों के साथ समझने का अवसर दिया। मध्याह्न में आचार्यवर की सन्निधि में तत्त्वार्थ भाष्यानुसारिणी के वाचन का क्रम चल रहा है। वह क्रम संभवतः विराटनगर (नेपाल) में प्रारंभ किया था। उस समय महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी की उपस्थिति रहती थी। तब से शुरू किया गया वह वाचन वर्तमान में भी चल रहा है। इस अध्यापन में परमपूज्य आचार्यवर की व्यस्तता के कारण बीच-बीच में अवकाश भी मिलता रहता है।

ज्ञान की समृद्धि में विविध भाषाओं का ज्ञान भी सहायक होता है। आचार्य महाश्रमणजी प्राकृत, संस्कृत, अंग्रेजी, हिंदी, राजस्थानी आदि भाषाओं के विज्ञाता हैं। संस्कृत, प्राकृत आदि भाषाओं की कोई रचना उनके सामने प्रस्तुत की जाती है तो वे सूक्ष्मता से उसका श्रवण कर उसकी शुद्धि-अशुद्धि पर तत्काल उचित निर्देश प्रदान कर देते हैं।

जैन आगम दसवेंआलियं में कहा गया है–साधु वह होता है, जो **'सज्झायसज्झाणरयस्स'** स्वाध्याय और ध्यान में रत रहता है। आचार्य रामसेन ने तत्त्वानुशासन में लिखा है–

'स्वाध्यायाद् ध्यानमध्यास्तां,
ध्यानात् स्वाध्यायमामनेत्।
ध्यानस्वाध्यायसम्पत्त्या,
परमात्मा प्रकाशते।।'

स्वाध्याय और ध्यान के योग से परमात्मा प्रकाशित होता है। आचार्यश्री महाश्रमणजी का आभामंडल इसी परमात्म-प्रकाश का उदाहरण है। उनकी ज्ञान और ध्यान चेतना ने उनकी तेजस्विता व दिव्यता को साकार किया है। वे कभी भी और कहीं भी हो, अंतर्निहित भगवत्ता के सान्निध्य में होते हैं, अतः सतत ध्यान में होते हैं, जागरूकता का जीवन जीते हैं।

आलोक रश्मियाँ आचार की

ज्ञान व ध्यान का अवतरण जब आचार और व्यवहार में होता है तो संन्यास तेजस्वी बनता है। स्वीकृत व्रतों की निरतिचार परिपालना में उत्थित आचार्यश्री महाश्रमणजी परम आचार कुशल हैं। उनकी पापभीरूता एवं अप्रमत्तता ने उनको आचार के उच्च शिखर पर आरूढ़ किया है। आचार्यवर की 'समणोऽहं' सूक्त की जागरूक साधना सबके लिए आदर्श है।

शिष्य के प्रमाद का परिहार और जागरूकता का प्रबोधन उनकी अनुशासन शैली है। एक बार यात्रा में साधु-साध्वियों का गंतव्य स्थल अलग-अलग था। साध्वियों का प्रवास स्थल पूज्यप्रवर से पहले था। मार्ग में हमें पूज्यश्री के दर्शन करने थे। आचार्यवर के विराजने के लिए साध्वियों ने कुर्सी लगा दी। जैसे ही आचार्यप्रवर उस स्थल पर पधारे, संतों से कहा–कुर्सी का प्रतिलेखन करो। प्रतिलेखन करते ही ज्ञात हुआ कि कुर्सी के अधोवर्ती भाग में जंतुओं के जाले हैं। कुर्सी को एक तरफ रख दिया। कम्बल पर खड़े होकर हमें दर्शन दिए। शब्दों से कुछ भी नहीं कहा, किंतु अपने आचार की जागरूकता से सबको प्रतिबोध दे दिया।

आचार्यवर का यह लक्ष्य रहता है कि साधु-साध्वियाँ शुद्ध चारित्र का पालन करें। यदा-कदा ऐसे अवसर भी आते हैं, जब साधु-साध्वियों को अपवाद मार्ग का सेवन करना पड़ता है। प्रायः पूज्यप्रवर उनको यह संकेत कर देते हैं कि तुम यह चिकित्सा करवा रहे हो, तुम्हें प्रायश्चित का लक्ष्य सामने रखना है।

आलोक तपस्या का

संन्यास को तेजस्वी बनाने का एक हेतु है तप। सामान्यतया तप का अर्थ समझा जाता है–उपवास, बेला आदि तपस्या करना। आचार्य महाश्रमणजी की तपस्या में रुचि है। तप करने वाले का अनुमोदन करते हैं। युवाचार्य अवस्था में प्रायः अमावस्या के दिन उपवास करते थे। उनके उपवास को आचार्य महाप्रज्ञजी ने अनुसरणीय बताया। एक बार का प्रसंग है–सन् २००६ जेतोमंडी में आचार्य महाप्रज्ञजी प्रवास कर रहे थे। हम साध्वियाँ पाक्षिक क्षमायाचना के लिए पूज्यपाद आचार्यवर के उपपात में पहुँची। क्षमायाचना के पश्चात आचार्यवर ने युवाचार्यप्रवर की ओर संकेत करते हुए पूछा–आज महाश्रमण के क्या है? मैंने कहा–युवाचार्यवर के उपवास का पारणा है। साध्वी सुप्रभाजी भी वहाँ उपस्थित थी। उन्होंने निवेदन किया–आचार्यश्री युवाचार्यश्री को विहार में उपवास क्यों कराते हैं? आचार्य महाप्रज्ञजी दार्शनिक थे, पर उनके जीवन में सरसता थी। कभी-कभी विनोद भी करते थे। उन्होंने साध्वी सुप्रभाजी को कहा–'क्या करें, मेरी बात मानते नहीं हैं।' इस संदर्भ में आचार्य महाप्रज्ञजी ने संत लोंगोवाल के प्रसंग को उद्धृत किया। संत लोंगोवाल ने आचार्यश्री तुलसी को कहा–'आचार्यजी! आप कहें वह कर सकता हूँ, पर राजीवजी से बात नहीं करूँगा। अमावस्या के उपवास में महाश्रमणजी भी वैसी ही बात कर रहे हैं।' मैंने विनत शब्दों में निवेदन किया–युवाचार्यप्रवर तो आपकी दृष्टि के बिना एक कदम भी नहीं रखते। आचार्यवर ने फरमाया–महाश्रमण अमावस्या के उपवास के साथ प्रतिबद्ध हो गए हैं। इनका उपवास अनुकरणीय है। इस संदर्भ में पूज्यश्री ने उपवास के तीन प्रकार बतलाए–(१) लंघन उपवास, (२) सश्रम उपवास, (३) जप सहित उपवास। महाश्रमण का उपवास इन तीनों बिंदुओं के साथ जुड़ा हुआ है, इसलिए अनुकरणीय है।

एक बार आचार्य महाप्रज्ञजी ने युवाचार्यश्री की तपस्या को रक्षाकवच के रूप में स्वीकार किया। आचार्यप्रवर के उपपात में आगम का कार्य चल रहा था। एक भाई दर्शनार्थ आया और कहने लगा–भंते! कल ग्रहण है। आचार्यवर ने फरमाया–'ग्रहण है तो अच्छा है, सब 'ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं' का जप करेंगे। मैं भी उस समय आगम कार्य में संलग्न थी। मैंने कहा–युवाचार्यवर के तो कल उपवास होगा। आचार्यवर ने सहजता से फरमाया–'अच्छा है, महाश्रमण उपवास कर रहे हैं। हम सबकी रक्षा हो जाएगी।' चारों ओर वातावरण में स्मित हास्य प्रस्फुटित हो गया।

तप का एक अर्थ है श्रम। आचार्य महाश्रमणजी का श्रम श्लाघनीय है। तेरापंथ धर्मसंघ के विकास के लिए वे अनवरत पुरुषार्थ कर रहे हैं। अष्टवर्षीय अहिंसा यात्रा में उन्होंने जो श्रम किया है, उसे जड़ शब्दों के द्वारा व्याख्यायित नहीं किया जा सकता। ब्रह्ममुहूर्त में चार बजे से लेकर लगभग रात्रि के दस बजे तक अनवरत कुछ न कुछ कार्य चलता रहता है।

आचार्य महाश्रमणजी तप की बहुत सुंदर और व्यावहारिक परिभाषा फरमाते हैं–शुभयोगस्तपः। शुभ योग में रहना तप है। इस तप की साधना भी दुष्कर है, पर आचार्यवर की यह साधना उनके संन्यास को तेजस्वी बना रही है।

जैन संन्यास 'तिन्नाणं-तारयाणं' के ताने-बाने से बना हुआ है। स्वयं तरें, औरों को तारें। जनता-जनार्दन में भगवत्ता का दर्शन करने वाले आचार्य महाश्रमणजी उनके नैतिक उत्थान के प्रति सतत पुरुषार्थ कर रहे हैं।

जयपुर में एक बार उपनगरों का स्पर्श करते हुए युवाचार्यश्री महाश्रमणजी अणुविभा में पधारे। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी उनकी अगवानी में पधारे। उनका हस्तावलंबन लेकर सभागार में उपस्थित हुए और युवाचार्यश्री महाश्रमणजी की श्रमनिष्ठा का उल्लेख करते हुए फरमाया–

'परिस्वेदेन निष्णातः युवाचार्यः समागतः।
तपसा लभ्यते सर्वः तपोनिष्ठा गरीयसी।।'

तेरापंथ धर्मसंघ के भाल पर दीप्तिमान आचार्य महाश्रमणजी का नेतृत्व संघ के हर सदस्य को तेजस्विता के सूत्र देने वाला है। उनके निर्मलतम, पवित्रतम, ज्योतिर्मय और तेजस्वी संन्यास की अभिवंदना हर एक के भीतर की भव्यता को जगाने का निमित्त बन सके, यही काम्य है।

विभिन्न विधाओं के लेखनी सम्राट थे आचार्य महाप्रज्ञ

दिल्ली।

शासनश्री साध्वी संघमित्राजी एवं साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में अणुव्रत भवन में जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, दिल्ली के तत्त्वावधान में आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का १४वाँ महाप्रयाण दिवस मनाया गया। इससे पूर्व दोनों साध्वीवृंद का अणुव्रत भवन के ऊपरीतल में आध्यात्मिक मिलन हुआ। विनय व वात्सल्य की धारा का अवलोकन कर श्रावक समाज अभिभूत हो गया।

शासनश्री साध्वी संघमित्राजी ने कहा कि अध्यात्म क्षितिज के देदीप्यमान दिनकर आचार्यश्री महाप्रज्ञजी देदीप्यमान दिनकर आचार्य महाप्रज्ञजी ने अपनी प्रज्ञा की प्रखर लौ से संघ-गगन को तेजोदीप्त कर दिया। उनके प्रज्ञारूपी स्तंभ का सहारा लेकर सैकड़ों संघ-चमन की लताएँ पल्लवित-पुष्पित एवं विकसित हुई जो आज संघ-उपवन को सुवासित कर रही हैं। प्रज्ञा के विराट रूप आचार्यश्री महाप्रज्ञजी को शत्-शत् नमन।

शासनश्री साध्वीश्री जी ने कहा कि आज हमारे धर्मसंघ की एक प्रबुद्ध एवं प्रभावशाली साध्वी अणिमाश्री जी से हमारा मिलना हुआ है। इन्होंने दक्षिण भारत, पूर्वांचल एवं पश्चिमांचल की प्रभावी यात्राएँ कर संघ की प्रभावना की है।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि अज्ञ से विज्ञ, विज्ञ से प्रज्ञ एवं प्रज्ञ से महाप्रज्ञ बनने की एक सफल यात्रा का नाम है—आचार्य महाप्रज्ञ। कवि, लेखक, वक्ता, संगायक, दार्शनिक, वैज्ञानिक, गणितज्ञ, आगमज्ञ, तत्त्वज्ञ, पंडित, आशुकवि आदि अनेक उपमाओं से उपमित महामानव का नाम है—आचार्य महाप्रज्ञ। उनकी नवोन्मेषी प्रज्ञा ने साहित्य जगत को समृद्ध बनाया। अनिर्वचनीय विलक्षण लेखनी के धनी आचार्य महाप्रज्ञ को श्रद्धा का अर्घ्य समर्पित करते हुए यही मंगलकामना करती हूँ कि हमारी भी प्रज्ञा जागृत हो एवं वो प्रज्ञा संघ विकास में योगभूत बने।

साध्वीश्री जी ने कहा कि आज वर्षों बाद शासनश्री के दर्शन पाकर मन आह्लादित एवं प्रफुल्लित है। शासनश्री हमारे धर्मसंघ की अति विशिष्ट साध्वी हैं। आचार्य तुलसी के युग में इन्होंने प्रबंध निकाय का दायित्व संभालकर अपने प्रबंध कौशल का परिचय दिया है। आपकी लेखनी में दम एवं वाणी में ओज है। आप निरामय रहते हुए साधना करें एवं समाधि का वरण करते रहें। शासनश्री साध्वी शीलप्रभाजी आदि सभी साध्वियों का वात्सल्य मुखरित हो रहा है।

शासनश्री साध्वी शीलप्रभाजी, साध्वी कर्णिकाश्री जी, साध्वी डॉ० सुधाप्रभाजी, साध्वी ओजस्वीप्रभाजी, साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने अपने आराध्य की अभिवंदना में भाव सुमन अर्पित किए। साध्वी समत्वयशा जी एवं साध्वी समाधिप्रभाजी ने अपने सुमधुर स्वरों से स्वरांजलि प्रस्तुत की।

मंच संचालन डॉ० साध्वी सूरजयशा जी ने किया। साध्वी शीलप्रभाजी, साध्वी समाधिप्रभाजी, साध्वी ओजस्वीप्रभाजी ने साध्वियों की भक्ति में गीत की प्रस्तुति दी। साध्वीवृंद द्वारा गीत के माध्यम से अभिव्यक्ति दी।

दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, शाहदरा सभा के अध्यक्ष पन्नालाल बैद, डालमचंद बैद, रमेश कांडपाल, ओसवाल समाज के मंत्री राजेंद्र सिंघी आदि वक्ताओं ने विचार व्यक्त किए। शाहदरा महिला मंडल ने मंगल संगान प्रस्तुत किया।

महावीर जन्म-कल्याणक महोत्सव का आयोजन

अमरनगर, जोधपुर।

साध्वी कुंदनप्रभा जी के सान्निध्य में आयोजित हुए कार्यक्रम में सरदारपुरा भजन मंडली व महिला मंडल की बहनों द्वारा भगवान महावीर के भजनों का संगान किया गया।

साध्वी चारित्रप्रभा जी, साध्वी गौतमप्रभा जी, साध्वी मध्यस्थप्रभा जी, साध्वीवृंद, तेमम, जितेंद्र गोगड, सुनील बैद, बाल कलाकार कवि जैन आदि ने भक्तिमय गीत से भगवान महावीर की स्तुति की।

भगवान महावीर के जीवनवृत्त को बताते हुए साध्वी चारित्रप्रभा जी ने कहा कि भगवान का जीवन अहिंसा से ओत-प्रोत था। वे समता के आराधक थे और कष्टों व संघर्षों के सहते-सहते स्वयं को सिद्ध किया।

साध्वी विद्युतप्रभा जी ने कहा कि हम अहिंसा, समता व मैत्री के पुरोधा का जन्मदिवस मना रहे हैं। महावीर ने ममता का, समता का त्याग किया और समता में प्रतिष्ठित हो गए। हम भी उनके जीवन से प्रेरणा लेकर राग और द्वेष को त्याग सिद्धत्व की दिशा में प्रस्थान करें, यह मंगलकामना।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

✻ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✻ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✻ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✻ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✻ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✻ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✻ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✻ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✻ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✻ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✻ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✻ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
✻ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
✻ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
✻ श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000
✻ श्री छत्तरमल गणेशमल विनीतकुमार बैद, राजलदेसर-चेन्नई	5,00,000

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

भूमि पूजन

रायसिंहनगर।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप, रासयिंहनगर द्वारा तेरापंथ भवन का भूमि पूजन जैन संस्कार विधि से समणी जयंतप्रज्ञा जी और समणी सन्मतिप्रज्ञा जी के सान्निध्य में जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा भवन में करवाया गया।

संस्कारक सुनील जैन ने समवेत मंत्रोच्चार के साथ मंगलभावना पत्रक स्थापित करवाया एवं भूमि पूजन विधि को संपादित करवाया।

आंचलिक समिति के अध्यक्ष देवेंद्र श्यामसुखा, महासभा के आंचलिक प्रभारी देवेंद्र बांठिया, महासभा के क्षेत्रीय प्रभारी भोजराज जैन, महासभा के क्षेत्रीय प्रभारी स्थानीय सभा सचिव डॉ० संजय जैन और गजसिंहपुर, रिडमलसर से आए श्रावकों सहित स्थानीय श्रावकों द्वारा मंगलभावना व्यक्त की गई। तेयुप की ओर से तेरापंथी सभा परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया। सभा परिवार की ओर से सभी का आभार ज्ञापित किया गया।

अहमदाबाद।

जितेंद्र कुमार कालूराम कोठारी के भूमि पूजन मुहूर्त जैन संस्कार विधि से करवाया गया। संस्कारक आनंद बोथरा, प्रकाश धींग, वैभव कोठारी ने मंगलभावना पत्रक स्थापित करवाया एवं भूमि पूजन संपादित किया।

कार्यक्रम का संचालन संस्कारक प्रकाश धींग ने किया। परिषद की ओर से कोठारी परिवार को मंगलभावना पत्रक की भेंट दी गई। कोठारी परिवार की ओर से परिषद एवं संस्कारकों के प्रति आभार ज्ञापित किया।

नूतन गृह प्रवेश

चेन्नई।

नवरतनमल दरला के नूतन गृह प्रवेश का कार्यक्रम जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक पदमचंद आंचलिया एवं मांगीलाल पितलिया ने पूरे विधि-विधान से कार्यक्रम संपादित करवाया।

कार्यक्रम में माणकचंद बोहरा, प्रमोद चोपड़ा एवं उपासिका पुष्पा चोपड़ा कोप्पल ने अपनी भावनाएँ व्यक्त की।

सरदारपुरा।

सुदर्शन संचेती और ललिता संचेती के नव गृह प्रवेश कार्यक्रम जैन संस्कारक कैलाश जैन ने विधिवत मंत्रोच्चार के साथ संपन्न करवाया।

संस्कारक ने परिवार का आभार जताया एवं जैन विधि के सिद्धांतों का भी उल्लेख किया। परिवार की तरफ से संस्कारक व तेयुप, सरदारपुरा का आभार व्यक्त किया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

चेन्नई।

विजयराज-ममता दुगड़ के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा हुआ। नमस्कार महामंत्र से प्रारंभ कर जैन संस्कारक पदमचंद आंचलिया एवं मांगीलाल पितलिया ने विधि-विधान पूर्व कार्यक्रम संपादित करवाया।

कार्यक्रम में दुगड़ परिवार के साथ अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। दुगड़ परिवार को बधाई एवं संस्कारकों का आभार व्यक्त किया।

औरंगाबाद।

छत्रपती संभाजीनगर प्रवासी राहुल सेठिया का नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ पूरे विधिविधानपूर्वक संपन्न करवाया गया। इस अवसर पर संस्कारक अंकुर लुणिया एवं विवेक बागरेचा ने संपूर्ण कार्यक्रम विधिवत संपन्न करवाया।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा से राहुल सेठिया, ज्ञानशाला प्रशिक्षिका सुनीता सेठिया, कन्या मंडल से निधि सेठिया, किशोर मंडल से लोकेश सेठिया आदि पारिवारिकजन उपस्थित रहे।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
1 - 7 मई, 2023

✦ *व्यक्ति का हृदय परिवर्तन हो और व्यवस्था भी अनुकूल हो तो दोनों के योग से 'नैतिकता की सरिता, महक उठे मानवता' की बात उजागर हो सकती है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

विशेष लेख

मेरे त्राण

❐ साध्वी नवीनप्रभा ❐

मेरी पूजा मेरी अर्चा तूँ मेरा भगवान है।
तेरा साया मेरा जीवन तू मेरा वरदान है।
मन-मंदिर के ओ मुरलीधर तू मेरा अभिमान है।
दिव्य दिवाकर सिद्धि-शिवालय तू मेरा सम्मान है।।

कहा जाता है सद्गुरु का मिलना शिष्य की पुण्याई और सद्भाग्य का सूचक होता है। लेकिन ऐसे वीर्यधर, ज्योतिर्धर, कीर्तिधर, धृतिर्धर अनंगकेतु गुरु जो जन-जन के जीवन को उजालों से भरने वाले महासूर्य अलौकिक प्रज्ञा का महाशिखर, हर समस्या का समाधान देने वाले महासमंदर, नई ऊर्जा का महापर्याय जिनके विचारों में महावीर की साधना बुद्ध की करुणा, कृष्ण का कर्म योग, माधुर्य मीरा की भक्ति, कबीर की क्रांति के दर्शन होते हैं ऐसे ऐश्वर्य संपन्न महासुमेरु गुरु का प्राप्त होना शिष्य के लिए कितने सद्भाग्य की बात है कि मुझे ऐसे गुरु का सान्निध्य प्राप्त है। आगम में जब पढ़ा–'न यावि मोक्खो गुरुहीलणाए' तब मन में प्रश्न उठा गुरु ऐसी क्या चीज होती है? जिसके लिए आगम में भी ऐसा कहा गया है पर जब मैंने अपने गुरु आचार्यश्री महाश्रमण जी को देखा तब लगा वास्तव में यह उचित है। गुरु कितनी महनीय चीज होती है। मैं अपने गुरु को देखती हूँ तो गर्व होता है कि ऐसे असाधारण व्यक्तित्व मेरे गुरु हैं। मैंने अपनी जिंदगी में अनुभव किया कि जहाँ जैसी परिस्थिति हो मेरे गुरु किस तरह मेरी ढाल बनकर रहे हैं। वैशाख कृष्णा दूज २०१६, अचानक ही पेरेलिसिस का स्टोक आ गया। लगभग १ घंटा बेहोशी की हालत, सबको लग रहा था कि अब क्या होगा? कुछ समय बाद जब मैं होश में आई मेरे से बोला नहीं जा रहा था। मैंने फोटो के लिए इशारे से कहा लोगों का सुझाव था कि जगह चेंज कर दो। वहाँ तक चलकर मैं कैसे गई मुझे पता ही नहीं चला। डॉक्टर को दिखाया गया, पूरी हिस्ट्री सुनी, डॉक्टर ने कहा आप जिस तरह से बता रहे हो उसके एकोर्डिंग तो आप या तो ऊपर होते या बैड़ पर। मेरे को आश्चर्य हो रहा है, आपको मेरे सामने देखकर। मैंने कहा–डॉक्टर मेरे गुरु का फोटो हाथ में आने के बाद क्या हुआ, मुझे पता नहीं। डॉक्टर ने कहा हमारी मेडिकल साइंस नहीं मानती पर मुझे आश्चर्य हो रहा है। इतने महान आपके गुरु हैं क्या? डॉक्टर ने कहा Life Time साधु जीवन की चर्या भी नहीं पाल सकोगे। आपका शरीर वैसा नहीं रहा है। बस दवाई के भरोसे जिंदगी निकालो। वहीं पर मेरे डॉक्टर आचार्यश्री महाश्रमण जी के लगभग ४० संदेश आ गए, हर संदेश में आशीर्वाद, मंगलकामना और मोटिवेशन; यह है मेरे गुरु की गुरुता। मुँह टेढ़ा हो गया था, बोलने की बहुत दिक्कत हो रही थी, सोच रही थी क्या होगा? सुबह जैसे उठी मेरे भगवान के दर्शन हुए, समस्या का समाधान देते हुए उन्होंने 'ॐ' का जप बताया। अभी लगता ही नहीं क्या वो समस्या थी क्या? इंदौर के अंदर जब मैंने बताया शासनमाता ने कहा आश्चर्य हो रहा है कैसे गुरुदेव ने इस स्थिति में संभाला। ३०-४० संदेश किसको कहते हैं। डॉक्टर जय ने कहा नेच्यूरोपैथी ट्रीटमेंट मैं दे रहा हूँ और पता नहीं कैसे १० प्रतिशत की जगह २०-२५ प्रतिशत आराम मिल रहा है। वास्तव में मुझे आश्चर्य हो रहा है।

जब गुरुदेव के संदेश डॉक्टर ने पढ़े तब कहा–वास्तव में जहाँ ऐसे गुरु संभालते हैं वहाँ किस बात की चिंता। मेरे गुरु की शक्ति वात्सल्य और मंगलकामना से अभी लगभग १५, १७, १६ किलोमीटर चल लेती हूँ। लगभग सब कार्य कर लेती हूँ। जहाँ डॉक्टर ने कहा था आधा पार्ट बॉडी का काम नहीं कर रहा है, आप एक जगह बैठ जाइए वहाँ मेरे गुरु के चरैवेति-चरैवेति के आशीर्वाद काम कर रहे हैं। इतना ही नहीं २०२१ में इंदौर में एक साध्वीजी की सेवा में थी कुछ प्रॉब्लम हुई डॉक्टर ने डाइग्नोस्ट किया। गाँठ हो गई है। अभी ऑपरेशन करना पड़ेगा, वरना बड़ा रूप ले लेगी। मैंने कहा अभी डेट फिक्स नहीं कर सकती। भीलवाड़ा में गुरुदेव की सेवा छुटेगी। गुरुदेव के दर्शन किए। साध्वी गौरवयशा जी ने निवेदन किया। पूज्यप्रवर ने मंगलपाठ लगभग २-३ बार सुनाया, जप के लिए फरमाया। लगभग १ साल के पीरियड में बिना दवाई, बिना ऑपरेशन मुझे स्वस्थ कर दिया। इतनी क्रिटिकल कंडीशन में मेरे गुरु मेरे त्राण बने हैं। एक कदम और आगे चलूँ तो मेरे गुरु करुणा के भी अजस्र स्रोत हैं। लाडनूं के अंदर एक बार स्वास्थ्य खराब हो गया। मैं पूज्यप्रवर के पास मंगलपाठ सुनने गई मेरे से चला नहीं जा रहा था। पूज्यप्रवर ने फरमाया तुमको क्या हुआ है? जैसे ही बोलने लगी उस कृपासिंधु ने फरमाया तू मत बोल मेरे को कष्ट हो रहा है ना? मैं तुमको मंगलपाठ सुना देता हूँ। ऐसी कई घटनाएँ हैं जो मेरे गुरु की गुरुता के दर्शन कराती हैं। ऐसे दिव्यता के दिवाकर, भव्यता के भास्कर, अध्यात्म योगी, प्रज्ञा महर्षि, ऊर्जापुंज के दीक्षा कल्याणक अवसर पर आपके दीर्घायु, चिरायु होने की कामना करती हूँ। आप तेरापंथ की ही वल्गा नहीं पूरे विश्व की वल्गा को अपने हाथ में थामते हुए युग का उद्धार करो। हे युगप्रधान! युग को तुमसे बहुत आशा है। आप अपने कोमल कदमों से युग की धरती को, कोने-कोने को नाप रहे हैं आपको पता है युग की आपसे क्या आशा है। हिंसा आदि के तांडव में कैसे अहिंसा की, शांति की अपेक्षा है। यही मंगलकामना कर रही हूँ कि आप क्रोड दिवाली राज करो और हम शिष्यों को आपश्री के लंबे सान्निध्य के साथ आपश्री की छत्रछाया में साधना करने का मौका मिले। मेरे गुरु हम शिष्यों को मोटिवेशन देते हुए फरमाते हैं–पंखों पर विश्वास नहीं वह परिंदा क्या? चरणों पर विश्वास नहीं वह चरिंदा क्या? साँस लेने का काम जिंदगी नहीं है, अपने आप पर विश्वास नहीं वह जिंदा क्या? ऐसे हमारे जीवन को संवारते हैं। ऐसी अनेक घटनाएँ मेरे जीवन की, मेरे गुरु के साथ जुड़ी हुई है, जिसके आधार पर मैं कह सकती हूँ कि मेरे गुरु मेरे प्राण हैं, मेरे त्राण हैं, मेरे विश्वास हैं। मेरे जीवन के आधार हैं। जहाँ पर मेरे गुरु की परोक्ष सन्निधि भी इतना काम कर रही है। इतना पॉवर है वहाँ प्रत्यक्ष सन्निधि में कितना पॉवर होगा। वास्तव में मेरे गुरु पूरी दुनिया के लिए आदर्श हैं। 'सत्यं-शिवं-सुंदरं' के महासमंदर हैं। ऐसे गुरु के चरणों में शत्-शत् वंदन-अभिनंदन।

आचार्यश्री महाश्रमण दीक्षा कल्याण महोत्सव पर

● साध्वी रौनकप्रभा ●

जय ज्योतिचरण जय महाश्रमण गुरुराज की।
करते अभ्यर्थना भैक्षवगण सरताज की।।

नेमामां के राज दुलारे, तात झूमर के हैं ध्रुव तारे।
दुगड़ कुल के हैं उजियारे, हम सब के हैं तारणहारे।।

मुनि सुमेर से दीक्षा पाई, तुलसी की थी कृपा सवाई।
महाप्रज्ञ ने प्रज्ञा जगाई, शासन हित में बने वरदाई।।

मुस्काता मनहारा चेहरा, सजगता का पल-पल पहरा।
आगम वाङ्मय ज्ञान है गहरा, करुणा की नित बहती लहरा।।

अपने आपमें मस्त हैं रहते, सत्कार्यों में व्यस्त हैं रहते।
सबका मार्ग प्रशस्त हैं करते, परीषहों से त्रस्त न रहते।।

तुझको पाकर महके गणवन, टूटे भवसागर के बंधन।
युगप्रधान करते अभिनंदन, प्राणों में भर दो नव स्पंदन।।

हर तंत्री के तार तुम्हीं हो, आस्था के आधार तुम ही हो।
करुणा के अवतार तुम ही हो, मधुरिम जीवन धार तुम ही हो।।

विघ्न विनायक महाश्रमण हैं, शांतिप्रदायक महाश्रमण हैं।
सुखदायक प्रभु महाश्रमण हैं, जन उन्नायक महाश्रमण हैं।।

हैं गणनायक धर्म धुरंधर, उन्नति पथ पर बढ़ूँ निरंतर।
दोनों हाथ से दो आशीर्वर, संघ सेवा करूँ जीवन-भर।।

करे अर्चना सर्व कलाएँ, अर्पित है सब भाव ऋचाएँ।
दीक्षा कल्याणक हम मनाएँ, युगों-युगों तक शासना पाएँ।।

लय : ये रामायण है---

सफलता का सूत्र है अणुव्रत

नई दिल्ली।

अणुव्रत अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में अणुव्रत व्याख्यानमाला का आयोजन उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी स्वामी के सान्निध्य में ग्रीन फील्ड्स पब्लिक स्कूल, विवेक विहार, दिल्ली में अणुव्रत समिति ट्रस्ट द्वारा किया गया। कार्यक्रम में अणुविभा की संगठन मंत्री डॉ० कुसुम लुनिया ने अणुव्रत अमृत महोत्सव के विभिन्न प्रकल्पों में विद्यालय परिवार की सहभागिता सुनिश्चित करने की प्रेरणा देते हुए अणुव्रत संकल्पों से सबको संकल्पित किया।

अणुव्रत समिति ट्रस्ट, दिल्ली के अध्यक्ष शांतिलाल पटावरी ने दिल्ली की गतिविधियों से सबको परिचित करवाते हुए आगामी महत्त्वपूर्ण आयोजनों की जानकारी दी। विद्यालय प्रिंसिपल नमिता गुप्ता ने मुनिवर को अभिवंदन व अणुव्रत परिवार का अभिनंदन किया। कन्वीनर दीपा नाहटा ने आभार ज्ञापन किया। अंशु जैन, स्नेह छाजेड़, आकाश शर्मा व देवेंद्र पुगलिया का विशेष सहयोग रहा।

मासखमण तप का अभिनंदन

गंगाशहर।

तेरापंथी सभा, गंगाशहर द्वारा तपोनिष्ठ श्राविका शारदा देवी पुगलिया के मासखमण तपस्या करने पर तप अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सेवाकेंद्र व्यवस्थापिका शासनश्री साध्वी शशिरेखा जी ने कहा कि जिस व्यक्ति का मनोबल मजबूत होता है और संकल्प शक्ति दृढ़ होती है, वही तपस्या कर सकता है। ऐसे में वर्षीतप के साथ-साथ मासखमण की तपस्या करना बहुत बड़ी बात है। तपस्या कर्म निर्जरा का बहुत बड़ा साधन है। तपस्या हर व्यक्ति नहीं कर सकता। कर्म निर्जरा के साथ-साथ तप से शरीर भी स्वस्थ रहता है।

साध्वी ललितकला जी ने सभा को तपस्या का महत्त्व बताते हुए कहा कि इस भयंकर गर्मी में शारदा देवी ने तप का बड़ा काम किया है, उन्होंने वर्षीतप के साथ-साथ २८ की तपस्या की है।

इस अवसर पर कुसुम देवी चोपड़ा ने भी वर्षीतप के साथ-साथ ११ की तपस्या की है। मैं दोनों के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना करती हूँ। साध्वी योगप्रभा जी ने कहा कि तपस्या शरीर के लिए एक ऐसी हितकारी औषधि है जो न धरती पर उपजती है, न आकाश से प्रकट होती है, न पर्वत पर पाई जाती है और न ही जल में प्राप्त होती है। अभिनंदन कार्यक्रम का शुभारंभ चैनरूप छाजेड़ द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण से किया गया। पुगलिया परिवार तथा चोपड़ा परिवार की तरफ से गीतिका का संगान किया गया। साध्वीवृंद ने सामूहिक गीतिका का संगान किया।

तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अमरचंद सोनी, तेममं अध्यक्षा ममता रांका, तेयुप अध्यक्ष अरुण नाहटा ने तप अनुमोदना में अपना वक्तव्य दिया। महिला मंडल द्वारा गीत की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम का संचालन संजू लालानी ने किया। तपस्विनी बहन का पताका साहित्य व अभिनंदन पत्र द्वारा सम्मान किया गया।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के दीक्षा कल्याण महोत्सव पर उद्गार

आप्तज्ञानी अमृतपुरुष आचार्यश्री महाश्रमण

● **साध्वी स्वर्णरेखा** ●

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी मध्यकालीन सामंतशाही का इतिहास लिखने वाले केवल प्रतापी आचार्य नहीं सबके विश्वास स्तंभ हैं। आघात-प्रतिघात से काँपने वाले चिर-अर्जित हस्तकौशल, भाग्यकौशल से सबके मन को लहराने वाले, भावों को जगाने वाले प्रकाश स्तंभ हैं। धीरता, वीरता, गंभीरता को समाहित करने वाली निर्मल चेतना है। सोच में मोच नहीं है, सधी हुई-निखरी हुई सोच से हिताहित का निर्णय करने वाले समाधायक भी हैं। वे बुद्धि के घुमावदार मार्ग पर चलने वाले राही नहीं, दर्शन के ऋजुमार्ग पर चलने वाले सांई हैं। जो व्यक्ति के दुःख को अपने भावात्मक तल पर महसूस करते हैं तथा हर किसी की व्यथा की कथा सुनकर द्रवित दिल से दूर करने का प्रयत्न करते हैं। धरती के तीर्थस्थल बनकर पतितों को पावन बना रहे हैं, मझधारों में डूबते हुए को भव्य नाव बनकर भवसिंधु पार लगा रहे हैं। जिनके जीवन में सिद्धपुरुष का सिद्धत्व मुखर है, देह में विदेह सम वीतराग साधना से गहन एवं रहस्यमय दिखने वाले शांत और अंतर में अपार करुणा के मालिक हैं। ज्ञान-दर्शन-चारित्र से सभी दिशाओं में त्वरित गति से लंबे-लंबे डग भरने वाले ज्ञान ज्योति से समृद्ध आप्तज्ञानी संत के रूप में समादृत हैं। ऐसे आप्तज्ञानी, अंतर्दर्शी, अमृतपुरुष अपनी क्रांतदृष्टि से हमें कमनीय बना दें, अमृतवृष्टि से अंतर्लीन बना दें। अमृत महोत्सव पर मिला यह वरदान हमें अणु से पूर्णता की राह दिखा पाएगा।

अर्हम्

● **शासनश्री साध्वी पानकुमारी 'प्रथम'** ●

महाश्रमण आचार्यप्रवर री आरती उतारां म्हैं।
मंगल भावां रो ले उपहार हो।।

सोने रो सूरज उग्यो है, भैक्षव शासन आँगण में।
दूधारी बरसे अमृत धार हो।।

छायो है सुरंगो रंग, तेरापंथ शासन में।
खुशियाँ रो उमड्यो पारावार हो।।

गुरुदेव ऐ सूझ-बूझ री जावां म्हैं बलिहारी हो।
हीरो निकाल्यों सुखकार हो।।

मंगल बेला में म्हैं आज मोत्यां चौक पुरावां हो।
कुंकुम रा पगल्या उतर्‌या आंगणै।।

करो अचका राज जुग जुग शासना हो सांतरी।
तेरापंथ गण री जय-जय कार।।

लय : तेजा रे---

गुरुवर दीदार तेरा

● **शासनश्री साध्वी सोमलता** ●

गुरुवर दीदार तेरा, लगता है सबको प्यारा।
लगता है सबको प्यारा, लाखों आँखों का तारा।।आं०।।

बिंदु में सिंधु समाया, बिरुआ बरगद लहराया।
रजकण मेरु कहलाया।।

रूं रूं में विनम्रता है, साँसों में समरसता है।
नयनों में वत्सलता है।।

पावन आचार तेरा, मधुमय व्यवहार तेरा।
उज्ज्वल आचार तेरा।।

जय-जय हो जय संघ प्रभाकर, जय-जय हो जैन दिवाकर।
जयतु जय महाश्रमणवर।।

पट्टोत्सव पर्व मनाएँ, गुण गा भू नभ गुंजाएँ।
'सोमा' कण-कण सरसायें।।

लय : भिक्षु गणिराज तेरे----

अर्हम्

● **साध्वी डॉ० परमयशा** ●

जिनवर सम गुरुवर का दरबार सुहाता है।
करुणानिधि प्रभुवर का हर भक्त दीवाना है।
पाँचों पद जहाँ रहते उन्हें शीष झुकाना है।।

णमो अरहंताणं के सर्वोत्तम प्रतिनिधि हैं।
अमृतमय प्रवचन से देते प्रजानिधि हैं।
सात्त्विक तात्त्विक चिंतन शिखरों चढ़ाना है।।

णमो सिद्धाणं का ध्येय भव्यों को देते हैं।
अक्षय अतुल्य अविचल आनंद लेते हैं।
निश्चल महाज्योति का हमें ध्यान लगाना है।।

णमो आयरियाणं है भवसागर तारणहार।
ये अष्ट संपदा के महामालिक पारावार।
मनमोहक मुद्रा में बसता खजाना है।।

णमो उवज्झायाणं ज्यों अनुशीलन करवाते।
आर्हत् वाङ्मय महिमा जन-जन को बतलाते।
महाज्ञानी महाश्रमण का गौरव माना है।।

णमो लोए सव्वसाहूणं अद्भुत आराधक है।
जब देखो जहाँ देखो समतामय साधक है।
पावन प्रशस्त जीवन जाना पहचाना है।।
गणपाल करे रिधपाल, स्वस्तिक सजाना है।।

लय : ऐ मेरे दिल---

परिवार कार्यशाला का आयोजन

सिकंदराबाद।

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में आयोजित 'परिवार कार्यशाला', 'परिवार आनंद का आधार' विषय पर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि साधना का उद्देश्य होता है, आनंद की अनुभूति। चिंतनीय विषय है, समूह में रहकर आनंद का जीवन कैसे जीएँ। शांति कैसे प्राप्त करें। साध्वीश्री जी ने कहा यदि परिवार में आनंद है तो सातों वार सुख देंगे। हम सभी संसार के रंगमंच पर किरदार की भूमिका निभा रहे हैं। आवश्यकता है हर व्यक्ति अपने कर्तव्यों, दायित्वों का सम्यक् निर्वहरण करे। समस्याओं को समाहित करने का प्रयत्न करें।

परिवार में समस्या का मुख्य कारण है—वाणी का असंयम। आग्रह की चेतना परिवार की शांति को भंग कर देती है। आवश्यकता है, परिवार का हर सदस्य शिष्टता के साथ बात करें। सहनशीलता एक ऐसा महत्त्वपूर्ण सूत्र है, जो जिंदगी की गाड़ी को ठीक तरह चला सकता है। अहंकार की वृत्ति को कम करने का प्रयास-आनंद और शांति देगा। हर अभिभावक अपनी भावी पीढ़ी में सद्संस्कार भरें। उसका मार्ग प्रशस्त करें।

श्री महेश्वरी विद्यालय, कबूतरखाना के विशाल प्रांगण में आयोजित कार्यक्रम में स्थानीय बहनों ने मंगल-स्वागत-स्वर प्रस्तुत किए। विद्यालय की प्रिंसिपल मोनिका जैन ने विद्यालय परिवार की ओर से साध्वी परिवार का स्वागत किया। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी, साध्वी सिद्धियशा जी, साध्वी डॉ० राजुलप्रभा जी, साध्वी डॉ० चैतन्यप्रभा जी एवं साध्वी डॉ० शौर्यप्रभा जी ने गीत का सामूहिक संगान किया। साध्वी राजुलप्रभा जी ने अपने विचार व्यक्त किए। हर परिस्थिति में सोच को सकारात्मक बनाए रखें। संकल्प करें, हमारा सही दिशा की ओर सही प्रस्थान हो।

साध्वी डॉ० चैतन्यप्रभा जी ने संयोजकीय वक्तव्य में कहा कि परिवार को आनंद का देवालय समझें और अपने मधुर व्यवहार की निरंतर साधना करते चलें। साध्वीश्री जी के सान्निध्य में कबूतरखाना में इस मुख्य आयोजन एवं प्रवास हेतु विजय आंचलिया ने आभार प्रदर्शित किया। अमृतलाल आंचलिया ने अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से उपस्थित पार्षद सोनम राजमोहन जी का एवं विद्यालय की प्रिंसिपल मोनिका वर्मा का तेरापंथ सभा की ओर से सम्मान किया गया।

एक दिवसीय संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन

पूर्वांचल-कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में एक दिवसीय संस्कार निर्माण शिविर बांगुर एवेन्यू स्थित तुलसीधाम लोदी भवन में तेरापंथी सभा, कोलकाता-पूर्वांचल ट्रस्ट द्वारा आयोजित किया गया। शिविर में लगभग १२५ बालक-बालिकाओं ने भाग लिया।

मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि जीवन को सुसंस्कृत करने का महत्त्वपूर्ण घटक है आचार, विचार, संस्कार, व्यवहार। आचार प्रथम धर्म है। आचार के बिना जीव पंगु है। चरण की नहीं आचरण की पूजा करें, चित्र की नहीं चारित्र की पूजा करें। जिसका आचरण श्रेष्ठ होता है वह अच्छा इंसान कहलाता है। सकारात्मक विचार से व्यक्ति का आभामंडल पवित्र होता है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि व्यक्ति की पहचान संस्कार से होती है। संस्कार हमारे जीवन की अनमोल संपदा है। जीवन की थाती है। बालकों को संस्कारवान बनाने की शाला है ज्ञानशाला। ज्ञानशाला के माध्यम से बालक संस्कारी बन सकते हैं, अच्छे इंसान बन सकते हैं।

मुनि कुणाल कुमार जी ने गीत का संगान किया। बांगुर ज्ञानशाला के बच्चों ने लघु नाटिका प्रस्तुत की। शिविर में मुनि जिनेश कुमार जी, मुनि परमानंद जी, उपासक सुरेंद्र सेठिया एवं उपासक मालचंद भंसाली ने प्रशिक्षण दिया। शिविर में चित्रकला प्रतियोगिता हुई, जिसमें प्रथम स्थान नेहा जैन, दमदम, द्वितीय स्थान राशि भंडारी, तृतीय जेनिका गोयल, जूनियर में प्रथम स्थान पिसा तातेड़ ने प्राप्त किया। सभी को सभा द्वारा पुरस्कृत किया गया।

शिविर में ज्ञानशाला की २१ प्रशिक्षिकाओं ने अपनी सेवा दी।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
1 - 7 मई, 2023

✦ *यदि धार्मिकता की भी प्राथमिकता रहे तो जीवन संतुलित रह सकता है और धन पर धर्म का अंकुश भी रह सकता है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

साध्वीप्रमुखाश्री जी के मनोनयन दिवस पर विशेष

नेतृत्व का सुखद सफर

❐ साध्वी सरलयशा ❐

कर्तृत्व की धुरा पर निखरा नेतृत्व सफलता का सकुन दे रहा है। एक वर्ष का सुनहरा सफर उपलब्धियों के आँकड़ों से सजा है। जिसका उत्स है महासतिवरा का संघ-संघपति के प्रति अविकल समर्पण। साध्वीप्रमुखा समर्पण की स्याही से स्वर्णिम आलेख लिख रही हैं। वो सकल साध्वी समाज के लिए प्रेरणा प्रदीप हैं।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा जी का साध्वीप्रमुखा पद पर चयन धर्मसंघ में खुशियों की बहार लेकर आया। तीन युगप्रधान आचार्यों की सूझबूझ का प्रतीक बना यह चयन। पूर्व साध्वीप्रमुखाओं का कौशल वर्तमान साध्वीप्रमुखा में मूर्तिमान देखकर सकल समाज प्रमुदित है।

प्रमुखा पद के नेतृत्व सफर को किसी एवरेस्ट की चढ़ाई से कम नहीं आँक सकते। हिलेरी ने एवरेस्ट पर परचम फहराया, उससे पहले उसने पुनः-पुनः आल्पस की पहाड़ियों पर चढ़ने का भरपूर अभ्यास किया था। इस तुला पर देखें तो आज साध्वीप्रमुखा विश्रुविभाजी नेतृत्व के जिस ओहदे पर आरूढ़ हैं उसकी पृष्ठभूमि में उन्होंने नेतृत्व के अनेक शिखर पार किए हैं। उसमें एक निर्मापक मनोरम पायदान रहा समण श्रेणी। समण श्रेणी की प्रथम समणी नियोजिका बनने का आपको सौभाग्य मिला। हमउम्र सदस्यों के बीच नेतृत्व का जो पहाड़ा सीखना शुरू किया वो पूर्णता से प्राप्त हो गया। इस बात की संपूर्ण समणी एवं साध्वी समाज को प्रसन्नता है।

अप्रमत्त साधिका : मैंने हमेशा आपको 'समयं गोयम! मा पमायए' सूक्त की समुपासिका के रूप में देखा है। न केवल स्वयं अप्रमत्त रहते हैं अपितु अपने इर्द-गिर्द रहने वालों में भी सदैव अप्रमत्त रहने की प्रेरणा भरते रहते हैं। प्रातः देरी से उठने वालों को आप 'उठ जाग रे मुसाफिर---/यह है जगने की बेला' आदि स्वर लहरी से उठाते। मेरा अपना अनुभव है समणी पर्याय में जब प्रातः दसवें कालिक सूत्र से स्वाध्याय में उत्तराध्ययन की गाथाएँ बोलने लगती तब आप मुझे सहज करने का प्रयत्न करते।

प्रबंधन कुशल : सह-दीक्षित समणियों, साध्वियों ने प्रारंभ से ही जीवन प्रबंधन के मौलिक गुर जैसे—खाना-पीना, सोना-उठना, वार्ता-व्यवहार, कार्य के प्रति सतर्कता का अनुभव किया है।

प्रबंधन कौशल से आपने अनेक समणियों का निर्माण किया। नेतृत्व कौशल नयनों में बसता है। भले शब्दों से समय पर कुछ न भी कहते हैं पर सामने वाला शख्स स्वयं समझ जाता है कि आप क्या चाहते हैं? प्रबंधन कौशल की मिसाल है व्यस्त दिनचर्या में भी निरंतर सृजन कार्य संपादित करना।

सरस्वती मेधा संपन्न : साध्वीप्रमुखाश्री में सरस्वती के बुद्धि वैभव को देखा जा सकता है। इस मंतव्य को एक वाकये से जान सकते हैं—एकदा मर्त्यलोक में लक्ष्मी, पार्वती और सरस्वती तीनों सैर करने आई। निर्जन कानन में विश्राम किया। लक्ष्मी सौंदर्यप्रिय होने से कचनार के फूलों को चुनती है, पार्वती पलास और सरस्वती आम्रनिकुंज के नीचे डेरा डालती है। लक्ष्मी और पार्वती ने बसंत ऋतु में फूल खिलने का आनंद लिया। कुछ दिन बाद फूल समाप्त हो गए। समय आगे बढ़ा, अब सरस्वती ने आम खाने शुरू किए। सरस्वती ने दोनों सहेलियों को बुलाया। दोनों ने मीठे आम खाए। मन तृप्त हो उठा। दोनों ने सोचा सच्चा सुख फूलने में नहीं फलने में है। पद-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान में मुख्य नियोजिकाजी कहीं फूले नहीं बस स्वयं को फलवान बनाने का प्रयत्न जारी रखा। उसी प्रयत्न की निष्पत्ति है प्रमुखा पद का वरण।

समय पारखी : 'वक्त को वक्त पर वक्त से बदलते देर नहीं लगती।' इस उक्ति को आपने बखूबी पहचाना है। बदलते वक्त के साथ समझौता करने वाला व्यक्ति अपने भाग्य की इबादत को सफलता के आइने में मढ़ सकता है। बशर्ते तीन गुणों का अधिष्ठाता हो—जागरूकता, पुरुषार्थ परायणता और आत्मविश्वास। आपकी सफलता में तीनों गुणों की अहम् भूमिका देखी जा सकती है। समय की नब्ज को पहचानते हुए सफलता को हासिल किया जा सकता है। इस आदर्श का प्रतिमान है वर्तमान साध्वीप्रमुखाश्री जी का जीवन-वृत्त।

नेतृत्व की सुखद वार्षिक परि-संपन्नता पर ढेर सारी शुभकामनाओं की सौगात समर्पित करती हूँ। आपने अल्प समय में ही गुरुदृष्टि की सर्वात्मना आराधना एवं अपने कार्य कौशल से नए सफर को आनंदमय बनाया है। आपसी कुशल अनुशासना में संपूर्ण साध्वी समाज युगों-युगों गौरव वृद्धि करता रहे। आपके चिरायु होने की मंगलकामना। दो पंक्तियों में समर्पित करती हूँ—

तुम जीओं हजारों साल,
साल के दिन हो कई हजार।
दिवस का उत्तरार्ध, पूर्वाध,
अंतहीन पाएँ विस्तार।।

साध्वीप्रमुखा वर्धापन

● साध्वी रौनकप्रभा ●

चयन दिवस पर संघ चतुष्टय देखो प्रमुदित मन

धन्य हुई है चंदेरी और धन्य है मोदी परिकर।
अभिनंदन करते सब मिलकर चयन दिवस शुभ अवसर।।

समता, क्षमता और ममता की मूरत है मनहारी।
सहनशील गंभीर धीर और प्रतिभा प्रखर तुम्हारी।।

मोह विलय की साधिका, वैरागी जीवन सुंदर।
जप प्रेमी स्वाध्यायलीन, तप में भी बढ़े निरंतर।।

गुरुवर महाश्रमण किरपा से शोभित है नवमानस।
गुरु इंगित आराधन से बन गए सबके आश्वासन।।

रहो निरामय करो शासना तुम हो मंगलकारी।
बढ़ो चढ़ो शिखरो शुभ भावों की ये भेंट हमारी।।

लय : स्वामी! पथ दिखाओ जी----

अर्हम

● साध्वी कनकश्री (राजगढ़) ●

सतिशेखरे! मनोनयन के मंगल पल में,
शत-शत वंदन अभिनंदन।
तन कोसों दूर भले पर मन श्रीचरणों में,
गण में भर दो अभिनव पुलकन।।

उदीयमान व्यक्तित्व तुम्हारा किन शब्दों में हम बतलाएँ,
देदीप्यमान कर्तृत्व निराला संघ भाल पर शोभा पाएँ।
तप से दीपित जप से सुरभित संयम से शोभित तव जीवन।।

नवती साध्वीप्रमुखाश्री जी नवनिधि से भंडार भरो,
शक्ति पुंज के शक्ति स्रोत से हम सबमें शक्ति संचार करो।
हे सरस्वती! सुखसाये में महके श्रमणीगण मधुवन।।

स्नेहिल अभिसिंचन देकर जन-मानस की पीर हरो,
अमरबेल बन बढ़ो अनवरत फलो फूलो जय विजय वरो।
साध्वीप्रमुखा रहो निरामय तव चरणों में तन-मन अर्पण।।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के प्रति

अर्हम्

● साध्वी श्रुतिप्रभा ● साध्वी सिद्धांतप्रभा

महातपस्वी महायशस्वी अभिनंदन शत् बार।
हर्षित दशों दिशाएँ पुलकित हो आज बधाएँ।।

सुरगण मिलकर तेरे चरण पखारे,
जय-जय नंदा जय-जय भद्दा उचारे,
तेरी पावन सन्निधि पाने तरस रहे नर-नार।।

निर्मल आभामंडल सबको लुभाए,
दर्शन को जो भी आप सुख-शांति पाए,
ऐसे गणशेखर को पाकर जग की क्या दरकार।।

ज्योतिचरण तेरी यश गाथा गाएँ,
श्रद्धा समर्पण का अर्घ्य चढ़ाएँ,
युग-युग तेरे संरक्षण में संघ रहे गुलजार।।

दूरदर्शिता गुरुवर की रची नई ऋचाएँ,
संकल्प शक्ति अनुपम दृश्य नए दिखाएँ,
वैरागी संख्या वृद्धि का स्वप्न बने साकार।।

अमृत महोत्सव अवसर वरदान चाहें,
पावन श्रुत गंगा में नित अवगाहें,
तारणहारे प्रभुवर तुम हो आस्था के आधार।।

लय : स्वर्ग से सुंदर----

ज्योति पुरुष की अभ्यर्थना

● साध्वी सुमनश्री ●

लो अभिनंदन शत्-शत् वंदन तेरापंथ सरताज।
आज मौसम मुस्काया, कल्पतरु लहराया।।आं०।।

सूरज की स्वर्णिम किरणें आज उतारे तेरी आरती।
अम्बर धरती झूमै गाती, दिशाएँ मंगल भारती।
आज दिवाली, भोर रूपाली, उतरे देव कुमार।।

अमृत का छलका दरिया बह रही आनंद की धार है।
स्वस्तिक उकेरे आँगन खुशियों का उमड़ा पारावार है।
पुण्य ऋचाएँ, छंद रचाएँ, घर-घर मंगलाचार।।

कीर्ति पुरुष तेरी मलयज सी सौरभ फैले संघ में।
रंग दो चुनरियाँ तुम गहरी श्रद्धा बासंती रंग में।
महातपस्वी, परमयशस्वी, श्रद्धानत् संसार।।

चाँद सितारों की तुमको लग जाए उमरियाँ कामना।
अक्षय हो ज्ञान ज्योति वर्धमान संपदा हो भावना।
हे ज्योतिर्मय, रहो निरामय, जीवन सदा बहार।।

लय : मिलो न तुम तो----

साध्वीप्रमुखाश्री मनोनयन दिवस पर विशेष

दो अध्यात्म विभूतियों में समानता

❐ समणी सत्यप्रज्ञा ● समणी रोहिणीप्रज्ञा ❐

सत् अनंत धर्मात्मक होता है। जैन दर्शन सात नयों के माध्यम से सत् की व्याख्या करता है। नय का एक भेद संग्रह नय है। यह अभेदग्राही होता है। इसे सामान्यग्राही भी कह सकते हैं। यह एकता या समानता का सूचक है।

'एक' में सामान्य या समानता की बात संभव नहीं होती। कम से कम 'दो' हों, वहीं सामान्य की बात सामने आती है। 'एक' तो विशेष का सूचक है। तेरापंथ धर्मसंघ में आचार्य एक ही होते हैं। यह विशेषग्राही अभिव्यक्ति है। आचार्य की तुलना में कोई भी व्यक्ति नहीं होता। हाँ, द्रव्य निक्षेप के अनुसार पूर्ववर्ती आचार्यों आदि से उनकी समानता का विश्लेषण अवश्य किया जा सकता है।

आचार्य, संघ की सुव्यवस्था के लिए कुछ विशिष्ट नियुक्तियाँ करते हैं, वर्तमान में साध्वीप्रमुखा का मनोनयन व साध्वीवर्या का सृजन इसका उदाहरण है। इन दोनों में समानता के विविध पक्ष ध्यान आकृष्ट करने वाले हैं।

काम करेगी-काम आएगी : सन् १९९२ में समणी स्मित प्रज्ञा जी अमेरिका की यात्रा करके आए और लाडनूं में विराजित आचार्यश्री तुलसी एवं युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ के समक्ष निवेदन किया—अब मुझे अंतर्यात्रा का अवसर दिराएँ, श्रेणी आरोहण कराएँ। युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ ने इसमें सहमति जताई। आचार्यश्री तुलसी ने फरमाया—ये तो समण श्रेणी में कार्य करने वाली हैं। अभी, साध्वी बनने की बात क्यों? युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ ने कहा—यहाँ काम करेगी। इस कथन के साथ ही आचार्यवर का मानस भी तैयार हो गया और समय के साथ समणी स्मितप्रज्ञा साध्वी विश्रुतविभा बन गई।

जसोल की समता सालेचा का मन था दीक्षा लेने का। समता के बहन-भाई पहले से दीक्षित थे पर समता को भी दीक्षा देने के लिए पारिवारिकजन तैयार नहीं को पा रहे थे। साध्वी मलयश्रीजी व मुनि विश्रुत कुमार जी भी माता-पिता को इस अनुमति के लिए तैयार नहीं कर पाए। आखिर दिल्ली में समता आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के पास पहुँच गई, अपनी स्थिति निवेदित की। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने उनके पिता श्री सोहनराजजी सालेचा को समझाते हुए कहा—समता को रोकते क्यों हो! यहाँ हमारे काम आएगी। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के उन शब्दों का जादुई-सा असर हुआ और उन्होंने समता को साधना पथ पर बढ़ने के लिए स्वीकृति दे दी।

समानता के आलोक में यहाँ दोनों का ही संबंध आचार्यश्री महाप्रज्ञजी से है। दोनों के संदर्भ में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के लगभग समानता लिए शब्द अभिव्यक्त हुए—यहाँ काम करेगी और हमारे काम आएगी। आज इन दोनों कथनों के फलितार्थ रूप सामने हैं। आचार्यश्री महाश्रमणजी की दायीं-बायीं आँख के रूप में साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी काम कर रही हैं, साध्वीवर्याश्री सम्बुद्धयशा जी काम आ रही हैं।

सेतु की भूमिका : तेरापंथ धर्मसंघ में साध्वीप्रमुखा का मनोनयन जयाचार्य के युग से होता रहा है। आचार्य तक साध्वी समाज के संवाद-संप्रेषण में वे सेतु की भूमिका निभाते हैं। महिला संन्यास वर्ग की सार-संभाल में, चित्त समाधि की व्यवस्था कराने में तथा अवसर पर आचार्यवर को उचित निवेदन में साध्वीप्रमुखा की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। आचार्य तुलसी के युग में पारमार्थिक शिक्षण संस्था व समण श्रेणी के दायित्व की कड़ी भी साध्वीप्रमुखा से जुड़ गई।

समय के साथ साध्वीप्रमुखाश्री जी के साथ महाश्रमणी पद आचार्य तुलसी द्वारा दिया गया। समणीगण के व्यवस्था के संदर्भ में साध्वीप्रमुखाश्री जी को भी सहयोग मिले, इसके लिए मुख्य नियोजिका पद सामने आया। पहली बार यह पद साध्वी विश्रुतविभा के साथ जुड़ा। चूँकि साध्वी विश्रुतविभा पहले समणी पर्याय में प्रथम समणी नियोजिका स्मितप्रज्ञा के रूप में समणीगण की व्यवस्था को संभाल चुकी थी, मुख्य नियोजिका के रूप में भी समणीगण व मुमुक्षु बहनों को प्रत्यक्ष उनका मार्गदर्शन उपलब्ध हुआ।

२ जून, २०१६ को तेजपुर, आसाम के अंचल में आचार्य महाश्रमण ने एक महनीय दायित्व से जुड़े नए पद का सृजन 'साध्वीवर्या' के रूप में किया। साध्वी सम्बुद्धयशा जी इस घोषणा से सामने आए और साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी के रूप में वे प्रतिष्ठित हैं।

नवम् साध्वीप्रमुखा के रूप में आचार्यश्री महाश्रमणजी ने १५ मई, २०२२ को सरदारशहर में मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा के नाम की घोषणा की और विशेषतः साध्वी समाज से जुड़े दायित्व की चादर उन्हें ओढ़ा दी गई।

आचार्यप्रवर के इंगित अनुरूप वर्तमान में तेरापंथ के साध्वी गण की सार-संभाल, देख-रेख, सारणा-वारणा आदि का विशेष दायित्व साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी एवं समण श्रेणी व मुमुक्षु बहनों के योगक्षेम का विशेष दायित्व साध्वीवर्या सम्बुद्धयशाजी पर है। आचार्यवर द्वारा दृष्टि प्राप्त इन दोनों के मार्गदर्शन में आज तेरापंथ धर्मसंघ का महिला संन्यास वर्ग गतिशील है।

अध्यात्म-विभूतियाँ : साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा एवं साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा तेरापंथ धर्मसंघ की दो अध्यात्म विभूतियाँ हैं। इनके बाह्य व आंतरिक व्यक्तित्व से जुड़े कई पहलू समानता का दर्शन कराते हैं। 'सं वो मनांसि जानताम्' अर्थात् हमारे मन समान हों। इस वैदिक प्रार्थना में सफलता का मंत्र निहित है। कुछ समानताएँ वास्तविक होती हैं, कुछ दिखाई देती हैं। समान कार्यक्षेत्र में समान रुचि वालों का समागम शांत व सौहार्दमय वातावरण का सृजन करता है क्योंकि अनौपचारिक सुदृढ़ व्यवस्था के सूत्र वहाँ सहज उपलब्ध होते हैं। व्यक्तित्व के मूर्त और अमूर्त कुछ विशेष गुण, क्रिया, स्वभाव आदि पहलुओं की समानता यहाँ प्रस्तुत हैं।

जन्म की समानता : संन्यासी को द्विजन्मा कहा जाता है। एक जन्म इस धरती पर माँ की कुक्षि से होता है। दूसरा जन्म संन्यास की धरती पर समर्पित चेतना का, जो गुरु की अमिय दृष्टि पाकर होता है।

साध्वीप्रमुखा व साध्वीवर्या के जन्म के संदर्भ में दिखाई दे रही समानता यह है कि एक का पहला और एक का दूसरा जन्म, समय की काफी समीपता लिए हुए है। साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने समणी दीक्षा में १९८०, कार्तिक शुक्ला द्वितीया के दिन चरणन्यास किया। जबकि साध्वीवर्या ने इनके तीन दिन बाद ही, सन् १९८०, कार्तिक शुक्ला पंचमी के दिन माँ को निर्भार करते हुए इस धरती पर चरण रखे। कार्तिक माह, शुक्ल पक्ष, सन् १९८० आदि समानताएँ यहाँ सहज उपलब्ध हैं।

नामकरण में समानता

जन्म के साथ ही व्यक्ति इस दुनिया में परिचय व पहचान की अभिधा पाता है। क्षेत्र, समय, परिकर-परिसर का भाव आदि इस अभिधान में योग देता है। दोनों के अभिधान की कुंडली भी कुछ समानता दर्शाती है। समण श्रेणी में समण स्मितप्रज्ञा व समणी समताप्रज्ञा के रूप में दोनों रहे। स्वर नहीं, पर व्यंजन दोनों के नाम के साम्यता लिए हुए है। इससे पूर्व संस्था प्रवेश के साथ साध्वीप्रमुखाजी को सविता व जन्म के साथ साध्वीवर्याजी को समता अभिधान से जाना गया। दोनों के अभिधान में 'स' और 'ता' समानता है। आचार्य महाश्रमण ने दोनों के ही घर में पुकारे जाने वाले अभिधान में त् को द्वित्व करके तेरापंथ धर्मसंघ के पदस्थ व्यक्तियों में स्थापित कर दिया। साध्वीप्रमुखा व साध्वीवर्या जैसे गौरव मंडित पद पर सुशोभित कर दिया।

पारिवारिक पृष्ठभूमि व संघ में 'सीर' : दोनों के ही परिवार पीढ़ियों से जिन शासन, भिक्षु अनुशासना से समृद्ध तेरापंथ धर्मसंघ के समर्पित परिवार रहे हैं। दोनों के ही परिवार से संघ में 'सीर' है अर्थात् पूर्व में भी इनके परिवार से कुछ सदस्य दीक्षित हुए हैं।

साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी के संसारपक्षीय मासीजी साध्वी चंद्रलेखाजी थे एवं साध्वी सोमप्रभाजी मासीजी की पुत्री हैं। साध्वी जिनप्रभाजी, साध्वी मंगलप्रभाजी, मुदितयशा जी भी आपके परिवार से संबंधित हैं। साध्वीवर्या सम्बुद्धयशाजी के संसारपक्षीय साधु-साध्वीगण की सुदीर्घ सूची है। साध्वी मलयश्रीजी आपकी अग्रजा एवं मुनिश्री विश्रुत कुमारजी आपके अनुज हैं। साध्वी ख्यातयशाजी आपकी मौसेरी व चचेरी बहन तथा साध्वी उदितयशाजी चचेरी बहन हैं। साध्वी चारित्रप्रभाजी भी आपके परिवार से संबंधित हैं।

क्षेत्र में समानता : दोनों ही भारत के राजस्थान राज्य से संबंध रखती हैं। राजस्थान को मुख्यतः तीन भागों में विभाजित किया जाता है—मारवाड़, थली, मेवाड़। इस विभाजन में भी दोनों का जन्म स्थान मारवाड़ सीमा में आता है।

दोनों के ही जन्म स्थान का नाम तीन-तीन अक्षरों वाला है—लाडनूं-जसोल। दोनों के क्षेत्रों की पहचान नगर के रूप में है।

शारीरिक अवस्था में समानता : शारीरिक दृष्टि से दोनों ही गौर वर्ण हैं। सहज स्फूर्ति उनके सुघटित शरीर में विद्यमान है। आसन, प्राणायाम, ध्यान व श्रम चेतना के संस्कार से दोनों ही बलवती प्रतीत होती हैं।

मानसिक अवस्था में समानता : गुरु चरणों में सर्वात्मना समर्पित व्यक्ति के मन की कहानी गुरु के मन से अलग नहीं होती। गुरु चरणों में तीन मन वाली दोनों ही भगवती आत्माओं का ध्यान गुरु इंगित आराधना से ही जुड़ा हुआ है। आचार्यवर का वरदहस्त उन्हें प्राप्त है और उसी से ऊर्जा प्राप्त कर वे गुरु-शिष्य संबंध को प्रत्यक्षतः कार्यकारी कर रही हैं। दोनों के विचार, भावनाएँ, चित्त उद्देश्य एकमात्र गुरु दृष्टि के अनुरूप आचरण से आबद्ध हैं।

दीक्षा में समानता : दोनों ने ही वैराग्यभाव के साथ तेरापंथ धर्मसंघ में संन्यास के मार्ग को स्वीकार करने का निर्णय किया। दीक्षा से पूर्व तैयारी-शिक्षा-साधना हेतु पारमार्थिक शिक्षण संस्था में प्रवेश किया। आचार्यवर से दृष्टि प्राप्त कर समण श्रेणी में दीक्षित हुए। एक दशक से अधिक समय समण श्रेणी में रहकर शिक्षा, साधना व संयम के संस्कारों का गहन सिंचन पाया। यात्राओं के माध्यम से प्राप्त संस्कारों के प्रचार-प्रसार में योगदान दिया। अंतर्यात्रा की तीव्र पिपासा के साथ दोनों ने समण श्रेणी से आरोहण करते हुए साध्वी जीवन में प्रवेश पाया। दोनों की ही समणी दीक्षा व बाद में श्रेणी आरोहण कर साध्वी दीक्षा भी अपनी-अपनी जन्मभूमि में ही हुई। समणी स्मितप्रज्ञा सन् १९९२ में, कार्तिक कृष्णा सप्तमी के दिन साध्वी विश्रुतविभा बन गए। समणी समताप्रज्ञा सन् २०१२ में, कार्तिक कृष्णा छठ के दिन साध्वी सम्बुद्धयशा बन गए। दशक के दूसरे वर्ष तथा कार्तिक कृष्ण पक्ष में आरोहण की समानता यहाँ भी द्रष्टव्य हैं। दोनों की ही दीक्षा के समय एक साथ इक्कीस सदस्यों ने दीक्षा ग्रहण की।

शिक्षा में समानता : दोनों की ही प्रतिभा निखार में उच्च शैक्षणिक योग्यता की भूमिका रही है। दोनों ने ही घर में रहते हुए बारहवीं कक्षा तक का अध्ययन किया। समण श्रेणी में रहकर जैन विश्व भारती संस्थान से एम०ए० किया है। दोनों ने ही भाषा के क्षेत्र में विशेष अध्ययन करते हुए अंग्रेजी, गुजराती, प्राकृत, संस्कृत भाषा में कौशल हासिल किया है। हिंदी व राजस्थानी भाषा पर तो आपका सहज अधिकार है ही।

अध्यात्म में समानता : अहिंसा की आत्मा अपरिग्रह में विराजती है। पदार्थ से अनासक्त चेतना ही आत्मा के सन्मुख हो सकती है। जो व्यक्ति संग्रह करना नहीं जानता, उसके भीतर का परमात्मा बोलना शुरू कर देता है। दोनों का ही जीवन साफ-सुथरा है, शैली कलात्मक है। दोनों की ही अपरिग्रही, अल्पोपधि चेतना समाधि दर्शाने वाली है। अध्यात्म के सार को हस्तगत कर चुकी आपकी असंग्रही मनोवृत्ति आदरणीय है।

व्यवस्थापक्ष संबंधी समानता : व्यक्ति-व्यक्ति होता है लेकिन प्रतिनिधि बनते ही उसकी अभिव्यक्ति विस्तार पा लेती है। दोनों संघीय स्तर पर अंतरंग व्यवस्था पक्ष से जुड़ी हैं। इस व्यवस्था पक्ष को लेकर भी दोनों की कुछ समानताएँ उभरकर सामने आती हैं। जैसे—दोनों के ही व्यवस्था संबंधी प्रारंभिक तार मुमुक्षु बहनों व समण श्रेणी की व्यवस्था से जुड़े हैं। साध्वीप्रमुखाश्री जी ने पहले मुमुक्षु सविता के रूप में, बाद में समणी स्मितप्रज्ञा व मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा के रूप में संस्था में मुमुक्षु बहनों की व्यवस्था का दायित्व बखूबी निभाया है। साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी का भी व्यवस्था से जुड़ा पक्ष मुमुक्षु बहनों से शुरू हुआ। वर्तमान में समण श्रेणी व मुमुक्षु बहनों के प्रबंधन का सूत्र सीधा साध्वीवर्या सम्बुद्धयशाजी से जुड़ा हुआ है। वे युगानुरूप कौशल के साथ साधक आत्माओं के निर्माण में सजग हैं।

साध्वीप्रमुखाश्री जी समण श्रेणी की प्रथम नियोजिका से लेकर अनेक रूपों में प्रबंधन से जुड़े रहे। वर्तमान में वे साध्वी समुदाय का योगक्षेम निर्वहन कर रहे हैं। आचार्यवर के मार्गदर्शन-अनुरूप संपूर्ण महिला संन्यास वर्ग के नव निर्माण हेतु साध्वीप्रमुखाश्रीजी एवं साध्वीवर्याजी तत्पर हैं।

बहुश्रुत पार्षद् : संघीय स्तर पर दोनों ही बहुश्रुत परिषद् की माननीया सदस्या हैं। अपने उर्वर मस्तिष्क, मौलिक चिंतन, व्यापक दृष्टिकोण, उदार व्यवहार व प्रशस्त नीति के माध्यम से पूज्यप्रवर के भार को कम करने व संघ को नई गहराइयाँ व ऊँचाइयाँ प्रदान करने में श्रमरत हैं।

(शेष पृष्ठ १० पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
1 - 7 मई, 2023

✦ *जीवन में जब पाप का उदय होता है तो प्रतिकूलता प्राप्त होती है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

दो अध्यात्म विभूतियों में...

(पृष्ठ ६ का शेष)

द्वितीय स्थान : दोनों ने ही आचार्यवर के कार्य में सहभागिता साध्वी समुदाय के अद्वितीय द्वितीय स्थान पर रहकर की हैं एवं कर रही हैं। आचार्यवर के अनुग्रह से महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी की विद्यमानता में मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी को द्वितीय स्थान का अधिमान दिया जाता था। साध्वीप्रमुखा पद पर इनको परम पूज्य आचार्यवर द्वारा प्रतिष्ठित किए जाने से साध्वीवर्या सम्बुद्धयशाजी का स्थान द्वितीय हो गया।

अध्ययन में योगक्षेम : इस संसार में विकास की कहीं कोई इतिश्री नहीं होती। दोनों का ही जीवन इस सच्चाई का दर्शन कराने वाला है। सतत अध्ययन एवं प्रयोग आपके प्रिय विषय हैं। जैन धर्म एवं तुलनात्मक धर्म दर्शन, विज्ञान, मनोविज्ञान से जुड़ी जानकारी से परिचित होने में तत्परता आपमें दिखाई देती है। प्रेक्षाध्यान, जप व योग प्रयोगों से समृद्ध अनुभव समूह में आप वक्ताओं के माध्यम से व व्यक्तिगत स्तर पर सुझावों के माध्यम से बाँटते हैं।

प्राकृत, संस्कृत व हिंदी में निबद्ध व रचित अनेक स्तोत्र आदि आपके दैनिक स्वाध्याय के विषय हैं। कंठस्थ के पुनरावर्तन में स्वाध्यायशीलता दोनों की ही प्रेरणास्पद हैं। नवीन व सीखे हुए ज्ञान के अर्थ पर विचार करने में दोनों सजग हैं। लक्ष्य से इधर-उधर ले जाने वाली किसी भी बात में रस न लेते हुए, उसमें समय जायज न करते हुए व्यक्तिगत स्तर पर दोनों ही सम्यग् ज्ञान चेतना की संवाहक हैं।

विकास की यह यात्रा एकाकी नहीं, सामूहिक हों, इसके लिए भी उदाहरण दोनों के स्वभाव में हैं। संघ में कला, भाषा, दर्शन, गणित, विज्ञान, प्रबंधन, अध्यात्म व धर्म की शाखाओं को अनवरत विकसित, पुष्पित, पल्लवित करने में ये योग दे रहे हैं।

कुशल लिपिकार : छोटे-छोटे सुघड़, सुंदर अक्षर आप दोनों की विशेष पहचान है। साध्वी विश्रुविभाजी को प्रायः आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के सान्निध्य में उनकी आत्मकथा आदि के लेखन में लिपिकार बनने का सौभाग्य मिला। साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी आचार्यश्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में आचार्यवर की आत्मकथा आदि के लेखन कार्य में रत हैं।

विशेष ध्यातव्य बिंदू यह है कि यहाँ लिपिकार की भूमिका केवल श्रुतलेखन ही नहीं है। श्रुतलेखन के मध्य कुछ प्रासंगिक बिंदुओं पर अपने विचार, जिज्ञासा, तर्कशक्ति का उपयोग, उचित निवेदन आदि भी वे करते हैं। उससे विषय के स्पष्टीकरण के साथ कई नए पहलुओं को भी उभरकर आने का अवसर मिलता है।

कुशल वक्ता : ओजपूर्ण वाणी, सारपूर्ण कथ्य, शोधपूर्ण प्रस्तुति, सैद्धांतिक व प्रायोगिक विषय का प्रतिपादन तथा जनभोग्य प्रवचन शैली आपकी कुशल वक्तृत्व कला का प्रमाण है।

कुशल संवाहक : कोई भी व्यवस्थापक अपने सदस्यों की योग्यता व कमजोरी से परिचित होता ही है। उनको ध्यान में रखते हुए औचित्यपूर्ण प्रोत्साहन, प्रेरणा, सारणा-वारणा की शैली आपने पाई है। पदस्थ गरिमा के अनुरूप समय पर साहसपूर्ण कथन व विवेकपूर्वक मौन का रहस्य दोनों में सहज है।

स्वभाव की सौम्यता, समाधान देने में सहयोगी वृत्ति के कारण आपने सबकी शुभकामनाएँ पाई हैं और गुरु के आशीर्वाद से निरंतर शुभभाग्य को पुष्ट कर रहे हैं।

परिणाम दर्शक : अपने चिंतन-विचार कार्य की समीक्षा सुनने व उसके अनुरूप ध्यान देने में भी आप तत्पर हैं। परिणाम दर्शन की आपकी शैली से ही संघ में विविध स्तरीय साधना व शिक्षा के उपक्रम जारी हैं। आपने मर्यादित व अनुशासित शैली व उदार दृष्टिकोण के आधार पर नित नवीन प्रयोगधर्मिता से चित्त समाधि के विकास को संघीय सदस्यों की मानस भूमि में प्रतिष्ठित किया है, कर रहे हैं।

परम कुशल छत्र-छाँव : गुरुदेव की महत्ती कृपा वत्सलतामय छत्र-छाँव में अनुकूल परिस्थितियों का सहयोग दोनों को उपलब्ध है। आचार्यश्री महाश्रमण जी की दृष्टि के अनुरूप इनका योगदान संघ के सौभाग्य की श्रीवृद्धि में निमित बनता रहे—यही शुभ भावना है।

समानता की खोज में कुछ सूत्रों की तलाश होती है, जो पहले न देखा हो, उस पर प्रकाश डालने का प्रयास होता है। यही प्रयास यहाँ किया गया है। समानता के ये ऐसे सत्य हैं जो सबके द्वारा समान रूप से स्वीकार किए जा सकते हैं। विस्तार से विवेचना के लिए अवकाश सदा उपलब्ध है।

साध्वीप्रमुखाश्री मनोनयन दिवस पर विशेष

अभ्यर्थना विलक्षण साध्वीप्रमुखाश्री जी की

❐ साध्वी प्रसन्नयशा ❐

वि०सं० २०७६, तेरापंथ की राजधानी सरदारशहर में तेरापंथ के सरताज परम पावन परमपूज्य गुरुदेवश्री का सानंद प्रवास चल रहा था। वैशाख शुक्ला चतुर्दशी का पावन दिन। पूज्यप्रवर ने अपने दीक्षा कल्याणक दिवस के पुनीत प्रसंग पर संपूर्ण तेरापंथ धर्मसंघ को एक विलक्षण उपहार प्रदान किया। गत दो माह से धर्मसंघ में साध्वीप्रमुखा का स्थान रिक्त था उसे आज के दिन पूज्यप्रवर ने पुनः भरकर संपूर्ण धर्मसंघ को निश्चिंत कर दिया। गत कई वर्षों से साध्वी समाज में द्वितीय स्थान पर सुशोभित मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुविभा जी को पूज्यप्रवर ने आज ही के दिन प्रथम स्थान पर अर्थात् साध्वीप्रमुखा पद पर मनोनीत कर मानो सबके दिलों को संतुष्टि प्रदान कर दी।

● वैशाख शुक्ला चतुर्दशी। वि०सं० २०८० का दिन। साध्वीप्रमुखाश्री जी का प्रथम वार्षिक मनोनयन दिवस है। मैं इस उपलक्ष्य में साध्वीप्रमुखाश्री जी की एक विलक्षण साध्वीप्रमुखा के रूप में अभ्यर्थना करती हूँ। श्रीचरणों में सभक्ति श्रद्धा समर्पित करती हूँ। तेरापंथ धर्मसंघ को आप एक विलक्षण साध्वीप्रमुखा के रूप में प्राप्त हैं, ऐसा मेरा मानना है।

● सर्वप्रथम परमपावन परमपूज्य गुरुदेवश्री ने आपश्री के मनोनयन के अवसर पर अपने उपयोग में आने वाले रजोहरण को आपश्री को बकसाया। पूज्यप्रवर ने अपने उपयोग में आने वाली प्रमार्जनी भी उसी समय आपको प्रदान करवा दी। तेरापंथ के साध्वीप्रमुखा इतिहास में ऐसा पहले कभी हुआ है, शोध का विषय है। मैं इसे एक विलक्षण घटना मानती हूँ।

● आपश्री के मनोनयन के तुरंत बाद जब आप साध्वियों के प्रवास स्थल पर पधारीं तो आदरास्पद साध्वीवर्याजी ने गुरुदेवश्री द्वारा प्रदत्त ग्रास की वह सुंदर-सी तोपसी आपश्री के हाथों में थमाई। आपश्री ने कहा कि आश्चर्य है, सामान्यतया गुरुदेव किसी को ग्रास बकसाते ही नहीं। पता नहीं आज कैसे बक्सा दिया। तत्काल साध्वीवर्याजी ने कहा—यह कोई सामान्य बात थोड़े ही है। अर्थात् साध्वीप्रमुखा के मनोनयन पर उन्हें ग्रास प्रदान करना एक विलक्षण घटना ही है।

● आप विलक्षण साध्वीप्रमुखा हैं क्योंकि आज तक कोई भी साध्वीप्रमुखाश्री पहले समणी रहकर साध्वीप्रमुखा नहीं बनी अर्थात् उनका श्रेणी आरोहण नहीं हुआ।

● आज तक की कोई साध्वीप्रमुखा ऑफिशियल एम०ए० की डिग्री प्राप्त कर साध्वीप्रमुखा नहीं बनीं।

● निर्देशों में धर्म प्रचार कर साध्वीप्रमुखा पद को सुशोभित करने वाली आप पहली साध्वी प्रमुखा हैं।

● आज तक की कोई साध्वी प्रमुखाश्री अंग्रेजी भाषा का अधिकृत अध्ययन प्राप्त कर साध्वी प्रमुखा नहीं बनी।

● आज तक की कोई साध्वी प्रमुखा पारमार्थिक शिक्षण संस्था की निर्देशिका रहकर साध्वी प्रमुखा नहीं बनीं।

● आज तक कोई साध्वी प्रमुखा समणी नियोजिका पद पर भी प्रतिष्ठित नहीं रहीं।

● आप पहली साध्वी प्रमुखाजी हैं जिन्होंने वर्षों तक मुख्य नियोजिका पद पर कार्य कर साध्वी प्रमुखा पद को सुशोभित किया है।

मेरे लिए यह अत्यंत आह्लाद एवं गौरव का विषय है कि वर्तमान साध्वीप्रमुखाश्री जी समण श्रेणी में मेरे ग्रुप लीडर रहे हुए हैं। मुझे उनके सान्निध्य एवं निर्देशन में रहकर विकास एवं साधना करने का सौभाग्य ही प्राप्त नहीं हुआ, अपितु आपश्री की कृपादृष्टि एवं वात्सल्यवृष्टि से मैं सदा सराबोर रहती थी। वे क्षण मेरे स्मृति पटल पर सदैव अंकित रहेंगे। आपश्री द्वारा प्रदत्त संस्कारों का पुलिंदा आज भी मुझे सजग किए रहता है।

मैं श्रद्धेया साध्वीप्रमुखाश्री जी के प्रथम मनोनयन दिवस पर अपने अंतस्तल की असीम भक्ति समर्पित करती हूँ एवं आपश्री के चिर सफल नेतृत्व की मंगलकामना करती हूँ।

हर्षित मन से आज बधाएँ

❐ साध्वी अणिमाश्री ● साध्वी सुधाप्रभा ❐

सा – साध्वी प्रमुखा विश्रुतविभा जी, मुदितमना हम आज बधाएँ।
प्रथम मनोनयन दिन तेरा, बोलो, क्या उपहार सजाए।

ध् – ध्येय तुम्हारा रहता सम्मुख, प्राणवान है साधना।
जप-तप में रहती लीन सदा तुम, करती हो आत्माराधना।।

वी – वीतरागता मंजिल तेरी, वीतराग-पथ पर गतिमान।
उपशम भाव में तन्मय बनकर करती रहती स्व-संधान।।

प्र – प्रथम नियोजिका समणी-गण की, गुरु तुलसी ने तुम्हें बनाया।
जो भी मिला दायित्व उसको, बखूबी तुमने सदा निभाया।।

मु – मुख्य नियोजिका बनकर गण में, तुमने नव इतिहास रचाया।
शासन माता की सन्निधि में, अनुभव कौशल खूब बढ़ाया।।

खा – खाते-पीते, सोते-उठते, नाम गुरु का सम्मुख रहता।
महर-नजर जो पाता गुरु की, रिती गागर वो ही भरता।।

श्री – श्री, ह्री, धी संपन्नता हो तुम धृति, शक्ति, शांति सहचारी।
नंदी की उपासिका हो तुम, तेज, शुक्ल तेरा मनहारी।।

वि – विनय, समर्पण अद्भुत तेरा, गुरु के दिल में स्थान बनाया।
त्रय गुरुओं ने हर पल, हर क्षण, प्रगति-पंथ पर सदा बढ़ाया।।

श्रु – श्रुतोपयोग है तेरा निर्मल, ज्ञानराशि तेरी बेजोड़।
सम्मान मिला जो गण में तुमको, नहीं है उसका कोई जोड़।।

त – तपस्या तव जीवन शृंगार, तप ही है जीवन आधार।
साध्वी प्रमुखा पद जो पाया, वो भी मानो तप उपहार।।

वि – विमल भावों में रहती निशदिन, उज्ज्वल चिंतन, उन्नत आचार।
विमल भावों से सति शेखरे! जीवन हुआ तेरा गुलजार।।

भा – भास्कर-सा है भाल तेजस्वी, मुख पर चंदा-सी शीतलता।
चिंतन तेरा हिमगिरी सम है, सागर सी गंभीरता।।

जी – जीवन की मनहर पोथी पर, सुंदर-सा इतिहास रचाओ।
अपने विजन, चिंतन द्वारा भिक्षु-गण का मान बढ़ाओ।।

लो – लोचन सुख दे छवि तुम्हारी, सूरत तेरी है मनहारी।
नेतृत्व निराला पाकर तेरा, खिल रही गण की क्यारी-क्यारी।।

ब – बधाई, बधाई, बधाई देते, गुरुवर ने पहनाया ताज।
युगों-युगों तक करो शासना, श्रमणी-गण के अल्फाज।।

धा – धार बहाओ ज्ञानामृत की, ज्ञानामृत का पान कराओ।
शासनमाता के इस पट की, महामाते! तुम शान बढ़ाओ।।

ई – ईख जैसी मधुर वाणी, सुनकर सबका मन हरसाए।
अणिमा-वर्ग दिल्ली में बैठा, हर्षित मन से आज बधाएँ।।

साध्वीप्रमुखाश्री मनोनयन दिवस पर विशेष

अप्रमत्त योग की परम साधिका साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा

❐ साध्वी मुदितयशा ❐

१५ मई, २०२२ का मंगल प्रभात। तेरापंथ भवन, सरदारशहर का विशाल हॉल। आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि। लोगों की आँखें आतुर थीं कुछ नया देखने के लिए। कान उत्कर्ण थे कुछ अभिनव सुनने के लिए। आचार्यश्री महाश्रमण जी ने नवम साध्वीप्रमुखा पद के लिए साध्वी विश्रुतविभा जी के नाम की उद्घोषणा कर लोगों की अभिनव सुनने की प्यास को तृप्त कर दिया। अपने पवित्र हाथों से रजोहरण, प्रमार्जनी एवं ग्रासदान का अद्भुत दृश्य प्रस्तुत कर लोगों की आँखों को आनंद-सागर में निमज्जित कर दिया। एक पुराना और परिचित नाम नए रूप में लोगों के अधरों पर तैरने लगा–साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा।

जप, तप और स्वाध्याय की अद्भुत समन्विति का नाम है साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा।

आत्मनिष्ठा, गुरुनिष्ठा और संघनिष्ठा की सुंदर त्रिपदी है साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा।

समर्पण, सहिष्णुता और अनुशासनप्रियता की त्रिपथगा है साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा।

आचार्यश्री तुलसी के द्वारा दीक्षित, आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के द्वारा प्रशिक्षित और आचार्यश्री महाश्रमण जी के द्वारा प्रतिष्ठित एक विशिष्ट व्यक्तित्व का नाम है साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी अप्रमत्त योग की परम साधिका है। तलहटी से शिखर पर आरोहण की उनकी यात्रा का मुख्य सूत्र रहा–अप्रमत्तता।

अप्रमत्तता किसके प्रति?

अप्रमत्तता अपनी साधना के प्रति

अप्रमत्तता ज्ञान की आराधना के प्रति

अप्रमत्तता गुरु-इंगित की अनुपालना के प्रति

अप्रमत्तता दायित्व के निष्ठापूर्वक निर्वहन के प्रति

अप्रमत्तता आचार और व्यवहार के प्रति

अप्रमत्तता गुणात्मक विकास के प्रति

आकर्षण साधना का

साधना के दो मुख्य आयाम हैं–स्वाध्याय और ध्यान। व्यक्ति की चेतना जब स्वाध्याय और ध्यान से भावित होती है, भीतर का परमात्म तत्त्व प्रकाशित होने लग जाता है। इसी सचाई को उजागर करते हुए आचार्य रामसेन ने लिखा है– **"स्वाध्यायध्यानसम्पत्त्या परमात्मा प्रकाशते"** साध्वीप्रमुखाश्री जी की स्वाध्यायशीलता उल्लेखनीय है। रात्रि में देर से सोए या कदाचित् जल्दी भी सोना पड़े, पर प्रातः चार बजे से पहले-पहले उठकर ध्यान-साधना में लीन हो जाना नियत है। चार बजे स्वाध्याय का क्रम शुरू हो जाता है। ज्ञातव्य है कि ब्रह्ममुहूर्त में स्वाध्याय का क्रम उस समय शुरू हुआ था जब आप पारमार्थिक शिक्षण संस्था में थीं। तब से अब तक यह क्रम अविच्छिन्न बना हुआ है। इतने लंबे समय तक ब्रह्म बेला में जागरण, साधना और स्वाध्याय की अविच्छिन्नता जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि है। स्वाध्याय और ध्यान की भाँति जप में भी आप अपना काफी समय नियोजित करती हैं।

तपस्या साधना का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। तपस्या में साध्वीप्रमुखाश्री जी की सहज अभिरुचि है। आप प्रतिमाह प्रायः सात उपवास करती हैं और वह भी बड़ी सहजता और अप्रमत्तता के साथ। बेला, तेला आदि करना भी आपके लिए बहुत सहज है। तपस्या के साथ-साथ आपका आहारसंयम भी उल्लेखनीय है।

बहुमान ज्ञान के प्रति

ज्ञानचेतना के विकास की पहली शर्त है ज्ञान के प्रति बहुमान का भाव। साध्वीप्रमुखाश्री जी के मन में ज्ञान एवं ज्ञानी के प्रति हमेशा बहुमान का भाव रहता है। ज्ञान का विकास होता रहे, इसके लिए आप सतत प्रयत्नशील रहती हैं। स्वयं अध्ययन करना, दूसरों को पढ़ाना, अध्ययन की प्रेरणा देते रहना, अध्ययन करने वालों को प्रोत्साहित करना, अध्ययनरत व्यक्तियों के प्रति प्रमोदभाव व्यक्त करना–ये सारी बातें साध्वीप्रमुखाश्री जी के जीवन में बहुलता से देखी जा सकती हैं। यही कारण है कि आपके ज्ञान में उत्तरोत्तर निखार आ रहा है।

जिज्ञासा ज्ञान को बढ़ाने का एक महत्त्वपूर्ण उपाय है। चाहे तत्त्व की बात हो या दर्शन की, संस्कृत का सामान्य ग्रंथ पढ़ना हो या किसी गंभीर ग्रंथ का वाचन चले, कोई भी अस्पष्ट बात जब तक स्पष्ट नहीं होती, आप उस विषय में जिज्ञासा और समाधान का प्रयत्न करती रहती हैं। सचमुच श्लाघनीय है ज्ञान के विषय में आपकी अप्रमत्तता एवं पराक्रशीलता।

जागरूकता गुरु-इंगित की आराधना के प्रति

गुरु और शिष्य का संबंध विनय और वात्सल्य का संबंध है। शिष्य के लिए सफलता की मुख्य कसौटी है गुरु के प्रति सर्वात्मना समर्पण। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी गुरु इंगित की आराधना के लिए हमेशा सजग और सचेष्ट रहती है। आपके भीतर गुरुभक्ति का भाव उच्चता लिए हुए है।

सरदारशहर में युगप्रधान पदाभिषेक, षष्टिपूर्ति समारोह, साध्वीप्रमुखा मनोनयन आदि अनेक महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम परिसंपन्न हुए। उसके बाद परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने बीकानेर संभाग की यात्रा की। आचार्यप्रवर 'कालू' में सुदीर्घजीवी साध्वी बीदामांजी को सेवा-उपासना करा रहे थे। शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी की गुरुभक्ति का प्रसंग चल रहा था। आचार्यवर ने प्रसंग को आगे बढ़ाते हुए फरमाया–"साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा का भी गुरुभक्ति का भाव उल्लेखनीय है।" आचार्यवर ने एक प्रसंग के द्वारा अपनी बात को स्तुत करते हुए कहा–काठमांडो की यात्रा की योजनाएँ बन रही थीं। एक चिंतन यह भी आया कि सात साध्वियाँ आचार्यवर की सेवा में रहें और शेष साध्वियाँ अन्य मार्ग से काठमांडो पहुँच जाएँ। मुख्य नियोजिका जी ने मुझसे कहा–गुरुदेव! सात साध्वियाँ आपश्री के साथ जा रही हैं, आठवीं साध्वी के रूप में एक मुझे भी आप अपने साथ ले जाने की कृपा कराएँ।

आचार्यप्रवर ने कहा–"मुख्य नियोजिका के पद पर होते हुए भी जब इन्होंने यह कहा कि एक मुझे भी ले जाएँ तो मुझे यह बहुत बड़ी बात लगी। मुझे इनकी गुरुभक्ति और गुरुसेवा का भाव उल्लेखनीय प्रतीत हुआ।" गुरुभक्ति का निदर्शन है साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी का जीवन।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी के लिए गुरुदृष्टि सर्वोपरि है। आचार्यवर काठमांडो की यात्रा संपन्न कर पहाड़ों से नीचे पधारे। साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी आदि साध्वियों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश फरमाया–"काठमांडो की यात्रा में मुख्य-नियोजिका जी आदि अनेक साध्वियाँ हमारे साथ रहीं। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी की भाँति मुख्य-नियोजिका जी भी गुरु इंगित के प्रति हमेशा सजग रहती। ये छोटे से छोटा कार्य भी हमारी दृष्टि प्राप्त करके ही करती थी। इनमें भी विनय और समर्पण का भाव अच्छा है।"

काठमांडो नेपाल की यात्रा के बाद शिलोंग मेघालय की यात्रा हुई, जगदलपुर आदि नक्सलवादी क्षेत्रों की यात्रा हुई, कोटा संभाग की यात्रा हुई और रायपुर से इंदौर की यात्रा हुई, इन सारी यात्राओं के दौरान साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी की अनुपस्थिति में आपने गुरु इंगित की आराधना करते हुए सारी व्यवस्थाओं का बड़े कौशल के साथ संचालन किया।

जागरूकता दायित्व-निर्वहन के प्रति

तेरापंथ धर्मसंघ में एक नेतृत्व की परंपरा है। सारे निर्णय और निर्देश गुरु के द्वारा दिए जाते हैं। गुरु व्यक्ति को छोटा दायित्व भी सौंप सकते हैं और बड़ा दायित्व भी सौंप सकते हैं। सफलता की कसौटी है जागरूकता। दायित्व के निर्वहन में जागरूक रहने वाला उस कसौटी में उत्तीर्ण हो जाता है।

आचार्यश्री महाश्रमण जी ने समय-समय पर साध्वीप्रमुखाश्री जी को अनेक कार्य सौंपे, अनेक जिम्मेवारियाँ दीं। आपने हर जिम्मेवारी को, हर कार्य को अच्छे ढंग से पूर्ण किया। महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी के अवसर पर महाप्रज्ञ वाङ्मय के संपादन का विशाल कार्य करना-कराना हो या आचार्य महाप्रज्ञ जी की कम से कम २१ पुस्तकों के अंग्रेजी भाषा में अनुवाद करने-कराने की जिम्मेवारी हो। महाप्रज्ञ श्रुताराधना पाठ्यक्रम के संचालन का दायित्व हो या साध्वीप्रमुखा अमृत महोत्सव पर 'अमृतम्' ग्रंथ के समायोजन का दायित्व हो। कोरोना के दौरान 'कर्मवाद' पर ऑनलाइन दो माह तक लगातार भाषण शृंखला चलाने की बात हो या पूज्यप्रवर के प्रवचन से पूर्व महीनों तक उपदेश देना हो, आपने हर जिम्मेवारी का निष्ठा से निर्वहन किया। कभी-कभी आपके सामने अनेक कार्य रहते हैं, पर गुरुदेव ने जो निर्देश दे दिया, उसकी क्रियान्विति आपके लिए सर्वोपरि हो जाती है।

साध्वी दीक्षा स्वीकार करने से पहले समण श्रेणी में भी आपको जब जो दायित्व मिला आपने उसका बखूबी निर्वहन कर गुरुओं का विश्वास अर्जित किया। अपनी कार्यनिष्ठा से नई पहचान बनाई।

जागरूकता आचार-व्यवहार के प्रति

आचार हमारा परम धर्म है। आचारनिष्ठ व्यक्ति प्रत्येक छोटी-बड़ी मर्यादा का अंतर्मन से पालन करता है। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी की आचार विषयक जागरूकता श्लाघनीय है। जो करणीय है उसकी क्रियान्विति के प्रति आप जितनी जागरूक हैं, अकरणीय को न करने के प्रति भी उतनी ही सजग हैं। साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी अनेक बार कहती थी–"मुख्य-नियोजिका जी छोटे से छोटे कार्य के लिए भी पहले आज्ञा लेती है। यह बात अन्य सब साध्वियों को इनसे सीखनी चाहिए।" जो व्यक्ति स्वयं जागरूक होता है वही दूसरों को जागरूक बना सकता है। साध्वीप्रमुखाश्री जी की हर प्रवृत्ति जागरूकता की जीवंत प्रेरणा है।

साधु का एक नियम है–मार्ग में चलते समय बात न करना। साध्वीप्रमुखाश्री जी अन्य नियमों की भाँति इस नियम का भी बड़ी दृढ़ता से पालन करती हैं। कभी बोलना आवश्यक हो जाए तो पाँव रोककर ही बात करती हैं। विहार के समय प्रायः आपके मौन ही रहता है।

एक बार का प्रसंग है, आचार्यश्री महाश्रमण जी के उपपात में विहारों में प्रहर के संदर्भ में चर्चा चल रही थी। आप उस समय मुख्य-नियोजिका जी के रूप में उपासना में आसीन थी। चर्चा के दौरान आपने कहा–गुरुदेव! विहार के समय मेरे तो प्रायः दो प्रहर हो जाती है। आचार्यवर ने आश्चर्य के साथ पूछा–दो प्रहर कैसे? आपने कहा–गुरुदेव! एक प्रहर तो चौविहार प्रत्याख्यान के रूप में हो जाती है और एक प्रहर मौन की हो जाती है। जो व्यक्ति लक्ष्य के प्रति जागरूक होता है उसके लिए हर क्षण एक उपलब्धि बन जाता है।

विनम्रता और निरहंकारिता

साध्वीप्रमुखाश्री जी के व्यवहारों में सहज शालीनता है। आपने अपने संयत, विनम्र और मृदु व्यवहारों से सबके मन को आकर्षित किया है। आचार्यवर की सन्निधि में महाप्रज्ञ वाङ्मय के लोकार्पण का कार्यक्रम था। कार्यक्रम बड़े गरिमामय रूप में समायोजित हुआ। आखिरी चरण में पूज्यप्रवर का उद्बोधन था। आचार्यवर ने मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभा जी की कार्यनिष्ठा, विनम्रता और निरहंकारिता का उल्लेख करते हुए फरमाया–"मुख्य नियोजिका जी हमारे धर्मसंघ में पदस्थ हैं। इतने बड़े पद पर होते हुए भी मैंने देखा–जब भी वाङ्मय के विषय में संतों के साथ विमर्श करना होता, एक सामान्य साध्वी की तरह आसन लगाकर नीचे बैठ जाती। मुझे यह बहुत बड़ी बात लगी। सचमुच विनम्रता और निरहंकारिता का उदाहरण है साध्वीप्रमुखाश्री जी का जीवन।

व्यवहारों के सौष्ठव में उपशांत कषाय की साधना का भी बड़ा योग रहता है। साध्वीप्रमुखाश्री जी के कषाय सहज शांत हैं। धैर्य और संतुलन आपके नित्य सहचारी हैं। आपकी सोच ऊँची और सकारात्मक है। हर व्यक्ति के जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। परिस्थितियाँ कभी अनुकूल होती हैं तो कभी प्रतिकूल भी हो सकती हैं, पर जिसकी सोच सम्यक् और सकारात्मक होती है, वह सारी परिस्थितियों से अप्रभावित रहता हुआ आगे बढ़ जाता है। साध्वीप्रमुखाश्री जी के जीवन में सकारात्मक सोच का पक्ष प्रभावी रहा है। हर स्थिति में संयत और संतुलित रहते हुए आपने हमेशा आत्मविकास के सोपानों पर आरोहण किया है। अपनी गुणात्मक सुवास से सबको सुवासित किया है।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
1 - 7 मई, 2023

✦ *हमारे जीवन में आत्मबल और मनोबल का बहुत महत्त्व है। जिस व्यक्ति में आत्मबल और मनोबल नहीं होता, उसके लिए थोड़ा-सा कठिन कार्य करना भी मुश्किल हो जाता है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

साध्वीप्रमुखाश्री मनोनयन दिवस पर विशेष

'प्रथम' विशेषण से विभूषित साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा

❐ साध्वी तन्मयप्रभा ❐

विक्रम संवत् २०७९, रविवार १५ मई, २०२२ वैशाख शुक्ला चतुर्दशी के दिन आचार्यश्री महाश्रमण जी ने तेरापंथ धर्मसंघ की नवम साध्वीप्रमुखा के पद पर साध्वी विश्रुतविभाजी को मनोनीत किया। आचार्यवर ने फरमाया—साढ़े पाँच सौ से अधिक साध्वियाँ हैं, उनमें सर्वोच्च स्थान पर, सर्वोच्च अधिकार से युक्त, सर्वोच्च दायित्व-संपन्न साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी हैं। इस प्रकार साध्वी समुदाय में प्रथम नंबर पर साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी हैं। आचार्यवर के मुख से मैंने जैसे ही 'प्रथम' शब्द सुना, साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी की जीवनपोथी के अनेक पृष्ठ उभरकर मेरी आँखों के सामने आ गए। मुझे लगा यह 'प्रथम' शब्द कितनी बार आपके नाम के साथ जुड़ चुका है।

– प्रथम समणी दीक्षा में दीक्षित समणी
– प्रथम समणी नियोजिका
– प्रथम मुमुक्षु निर्देशिका
– प्रथम विदेश यात्रा
– अंग्रेजी भाषा की विज्ञ प्रथम साध्वीप्रमुखा
– स्नातकोत्तर में गोल्ड मेडल प्राप्त प्रथम साध्वीप्रमुखा
– प्रथम साध्वीप्रमुखा जिनका श्रेणी आरोहण युवाचार्य द्वारा घोषित
– प्रथम मुख्यनियोजिका
– साध्वीप्रमुखाश्री जी की प्रथम अनंतर सहयोगी
– अद्वितीय मनोनयन

प्रथम समणी दीक्षा में दीक्षित समणी : आचार्य तुलसी ने सन् १९८० में समण श्रेणी की शुरुआत की। उस श्रेणी में पहली बार दीक्षित होने वालों के सामने अनेक प्रश्न थे, अनेक चुनौतियाँ थीं। छः बहनों ने हर तरह की चुनौती को स्वीकार किया और गुरु चरणों में अपने आपको पूर्णतया समर्पित कर दिया। समणी दीक्षा के उस इतिहास दुर्लभ क्षण से जुड़ने वाली उन छह बहनों में एक नाम था मुमुक्षु सविता का, दीक्षित होने के बाद जिनका नाम रखा गया समण स्मितप्रज्ञा, जो आज हमारे संघ में साध्वीप्रमुखा के महनीय पद पर आसीन हैं।

प्रथम समणी नियोजिका : इस श्रेणी में प्रथम बार दीक्षित होने वाली उन छः समणीजी में समणी स्मितप्रज्ञाजी को समणी नियोजिका बनाया गया। नई श्रेणी के नए सदस्य होने पर भी आचार्यवर ने समणीजी की देख-रेख का दायित्व आपको सौंपा। दीक्षा के मात्र दो सप्ताह बाद ही प्रशासनिक क्षेत्र में आपका प्रवेश हो गया। श्रेणी में प्रथम सदस्य न होते हुए भी प्रथम समणी नियोजिका बनाया गया। इसमें गुरु कृपा के साथ-साथ निश्चित रूप से आपकी अर्हताएँ भी निमित्त बनी। उल्लेखनीय है कि साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने लगातार छः वर्षों तक नियोजिका के पद पर कार्य करते हुए श्रेणी की सार-संभाल की और संघ में विशेष पहचान बनाई।

प्रथम मुमुक्षु निर्देशिका : पारमार्थिक शिक्षण संस्था का प्रारंभ सन् १९४८ में हुआ। उसकी देख-रेख का दायित्व संघ के वरिष्ठ श्रावकों पर था। आचार्य तुलसी ने सन् १९८७ में एक नया क्रम प्रारंभ किया और संस्था की अंतरंग व्यवस्था का दायित्व समणीजी को सौंपा। आचार्य तुलसी ने प्रथम बार निर्देशिका के रूप में समणी स्मितप्रज्ञाजी को नियुक्त किया। निर्देशिका के रूप में आप लगभग चार वर्षों तक पारमार्थिक शिक्षण संस्था में रहे और मुमुक्षु बहनों के व्यक्तित्व विकास में योगभूत बने।

प्रथम विदेश यात्रा : समण श्रेणी में विदेश यात्रा का क्रम वर्षों से चल रहा है। प्रतिवर्ष अनेक ग्रुप विदेशों में जाते हैं और संघीय प्रभावना के उपक्रम चलाते हैं। वर्तमान में विदेश यात्रा सामान्य बात है। ज्ञातव्य है समण श्रेणी में जब प्रथम बार विदेश यात्रा का प्रसंग आया, अनेक आशंकाएँ और अनेक प्रश्न थे। उस माहौल में सर्वप्रथम विदेश यात्रा करने वाली समणियों में प्रथम नाम समणी स्थितप्रज्ञा (साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी) का था। आपकी उस यात्रा ने अनेक देशों की एवं अनेक समणीजी की विदेश यात्रा का द्वार उद्घाटित कर दिया।

आचार्य तुलसी के वर्षों से संजोए सपने को साकार करने का प्रथम श्रेय समणी स्मितप्रज्ञा को मिला। स्मितप्रज्ञाजी ने समण श्रेणी में रहकर अनेक देशों की यात्रा की, जिनमें बेल्जियम, हॉलेंड, जर्मनी, स्विट्जरलैंड, ईटली, अमेरिका, कनाड़ा आदि प्रमुख हैं।

अंग्रेजी भाषा की वेत्ता प्रथम साध्वीप्रमुखा : साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी अंग्रेजी भाषा की विज्ञ प्रथम साध्वीप्रमुखा है। हिंदी, संस्कृत आदि की भाँति अंग्रेजी भाषा पर भी आपका अच्छा अधिकार है। आपने देश-विदेशों की यात्रा के दौरान अंग्रेजी भाषा में अनेक वक्तव्य दिए हैं। परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की अनेक कृतियों का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया है। इतना ही नहीं अंग्रेजी भाषा में आपने स्वतंत्र रूप में पुस्तकों का लेखन भी किया है। उदाहरणार्थ—

– An Introduction to Jainism
– An Introduction to Terapanth
– Basics of Jainism
– Acharya Shri Tulsi - Legend of Humanity

आपको अंग्रेजी भाषा की प्रथम वक्ता, प्रथम लेखिका और प्रथम अनुवादिका साध्वीप्रमुखा के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

स्नातकोत्तर में गोल्ड मेडल प्राप्त प्रथम साध्वीप्रमुखा : शिक्षा के क्षेत्र में भी आपकी अलग पहचान है। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी प्रथम साध्वीप्रमुखा हैं, जिन्होंने स्नातकोत्तर की परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की। आपश्री ने जैन विश्व भारती संस्थान से जैनोलॉजी में गोल्ड मेडल प्राप्त किया। शिक्षा के क्षेत्र में गोल्ड मेडल प्राप्त करने वाली आप प्रथम साध्वीप्रमुखा हैं।

प्रथम साध्वीप्रमुखा जिनका श्रेणी आरोहण युवाचार्य द्वारा घोषित : तेरापंथ धर्मसंघ में प्रायः साधु-साध्वियों की दीक्षा या श्रेणी आरोहण का आदेश आचार्य स्वयं देते हैं। साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी को श्रेणी आरोहण का आदेश युवाचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने दिया। सन् १९९२, लाडनूं चातुर्मास के दीक्षा समारोह में दीक्षित होने वाले २० मुमुक्षुओं के नाम घोषित हो गए। दीक्षा में मात्र छः दिन अवशेष थे। तब आचार्य तुलसी ने इक्कीसवीं दीक्षा की घोषणा का दायित्व युवाचार्य महाप्रज्ञ को सौंपा। युवाचार्यश्री ने इक्कीसवाँ नाम समणी स्मितप्रज्ञाजी का घोषित किया। अतः आप प्रथम समणी हैं जिनके श्रेणी आरोहण की घोषणा युवाचार्यश्री के द्वारा की गई।

प्रथम मुख्यनियोजिका : आचार्य महाप्रज्ञजी ने अपने युग में दो नए पदों का सृजन किया—मुख्यनियोजक और मुख्यनियोजिका। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने अपने शासनकाल में ही मुख्यनियोजिका पद पर साध्वी विश्रुतविभा जी को प्रतिष्ठित किया। आप प्रथम साध्वी हैं, जिनको मुख्यनियोजिका बनाकर अधिकृत रूप से समण श्रेणी की व्यवस्थाओं के संचालन का दायित्व सौंपा गया। आपने १२ वर्षों तक मुख्य नियोजिका के रूप में आचार्यों के निर्देशानुसार समणश्रेणी की देख-रेख की और संघ सेवा में अपनी शक्ति का नियोजन किया।

प्रथम अनंतर सहयोगी : तेरापंथ धर्मसंघ में आचार्य सर्वेसर्वा होते हैं। नेतृत्व की बागडोर एकमात्र आचार्य के हाथ में होती है, अपेक्षा होने पर आचार्य अपने कार्यों में दूसरों का सहयोग लेते हैं। आचार्यश्री महाश्रमणजी ने सन् २०१७, भागलपुर में अक्षय तृतीया के अवसर पर आपको साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी के अनंतर सहयोगी बनाकर मुख्यनियोजिका पद पर प्रतिष्ठित किया। किसी भी साध्वी को साध्वीप्रमुखा की अनंतर सहयोगी नियुक्त करने का यह प्रथम अवसर था। यह अवसर भी साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी को प्राप्त हुआ।

अद्वितीय मनोनयन : तेरापंथ धर्मसंघ में साध्वीप्रमुखा का मनोनयन आचार्य स्वयं करते हैं। आचार्य तुलसी ने अपने शासनकाल में तीन बार साध्वीप्रमुखा का मनोनयन किया। आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सरदारशहर में साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी का मनोनयन किया। यह उनके शासनकाल का पहला अवसर था। लेकिन आपने जिस ढंग से साध्वीप्रमुखा का मनोनयन किया, वह अद्वितीय एवं भव्यता लिए हुए था। आचार्यवर ने साध्वीप्रमुखाश्री का मनोनयन कर तत्काल अपने पावन करकमलों से आपको अपनी निश्रा के रजोहरण और प्रमार्जनी प्रदान किए। सभा के मध्य ग्रास प्रदान किया। ऐसा कोई भी उपक्रम अतीत में नहीं हुआ। यह इतिहास का दुर्लभ अवसर सर्वप्रथम आपको प्राप्त हुआ।

इस प्रकार साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी के जीवन में 'प्रथम' का साहचर्य अनेक बार पुनरावृत्त हुआ है। आपने उस प्रथम की चाह कभी नहीं की किंतु कभी पुरुषार्थ के योग से तो कभी भग्य के योग से प्रथम का नैकट्य बना रहा। प्रथम चयन दिवस के अवसर पर आपके प्रति यही मंगलकामना है कि आप आचार्य महाश्रमण के युग में सुदीर्घकाल तक अपनी सेवाएँ प्रदान करने वाली प्रथम साध्वीप्रमुखा के रूप में प्रतिष्ठित हों। आपके प्रेरक पथदर्शन में अनेक साध्वियाँ विभिन्न क्षेत्रों में अपनी उपयोगिता सिद्ध करें।

अप्रमत्त योग की परम साधिका...

(पृष्ठ ११ का शेष)

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी का जीवन साधना के सुमनों से सज्जित है। आपके जीवन में अप्रमत्तता का दीप हमेशा प्रज्ज्वलित रहा है। आपने समण श्रेणी में बारह वर्षों तक अपनी साधना, ज्ञानाराधना के साथ व्यवस्थाओं का कुशलता से संचालन किया। अनेक व्यक्तियों के निर्माण में योगभूत बनी। देश-विदेशों की यात्राएँ कर संघीय प्रभावना का अध्याय सृजित किया। श्रेणी आरोहण के बाद आपको विशेष रूप से आगम अध्ययन, आगम कार्य में नियोजित किया गया। इसके साथ-साथ आपको आचार्यश्री महाप्रज्ञ के साहित्य से जुड़कर कार्य करने का और आगे बढ़ने का एक सुंदर अवसर प्राप्त हुआ। आपके चरण सदा गतिमान रहे। विकास का ग्राफ ऊपर उठता चला गया।

समण श्रेणी के धवल समारोह में आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने आपको समण श्रेणी की मुख्य नियोजिका बनाकर श्रेणी की देखरेख की जिम्मेवारी सौंपी। कुछ ही समय पश्चात् साध्वी समाज में साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के बाद द्वितीय स्थान पर नियुक्त कर आपके गौरव को मानो शतगुणित कर दिया।

आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आपको साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी की अनंतर सहयोगी बनाकर मुख्य नियोजिका के पद पर प्रतिष्ठित किया। आचार्यप्रवर ने अनेक बार इस कथन को दोहराया—साध्वी समाज में पहला स्थान साध्वीप्रमखा कनकप्रभाजी का है और दूसरा स्थान मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी का है। शासनमाता के महाप्रयाण के मात्र दो माह बाद पूज्यवर ने आपश्री को साध्वीप्रमुखा के पद पर नियुक्त करके साध्वी समाज का सिरमोर बना दिया। नवम साध्वीप्रमुखा के रूप में आप सदैव निरामय रहते हुए साध्वी समाज का पथदर्शन करें। संघ में अपनी विशिष्ट सेवाएँ प्रदान करें। आपके कुशल नेतृत्व में साध्वीवृंद, समणीवृंद और महिला समाज विकास के नए शिखरों का स्पर्श करे। आपश्री के जीवन का हर क्षण मंगलमय हो, हर दिन उपलब्धि भरा हो। प्रथम मनोनयन दिवस पर आपके प्रति अनंत-अनंत मंगलकामना।

भगवान महावीर जन्म कल्याणक के विविध आयोजन

कांदिवली

शासनश्री साध्वी विद्यावती जी 'द्वितीय' के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में महावीर जन्मोत्सव मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत तेरापंथ सभा मंत्री अशोक हिरण के मंगलाचरण से की गई।

मलाड सभा अध्यक्ष इंद्रमल कच्छारा, कांदिवली महिला मंडल अध्यक्षा नीतू नाहटा, कांदिवली सभा अध्यक्ष पारसमल दुगड़ ने संबोधन दिया। इस अवसर पर साध्वी डॉ० रिद्धियशा जी ने कविता प्रस्तुत की। महिला मंडल द्वारा गीत प्रस्तुत किया। तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन अध्यक्ष विनोद बोहरा ने संबोधित किया।

साध्वी मृदुयशा जी ने गीत का संगान किया। अभातेममं के पूर्व अध्यक्ष तरुण बोहरा ने अपने विचार रखे। साध्वी प्रेरणाश्री जी ने मुक्त द्वारा प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों द्वारा व महिला मंडल द्वारा नाटक प्रस्तुत किया। मुंबई महिला मंडल अध्यक्षा रचना हिरण, विनीत संघवी ने अपने विचार रखे। ललित चपलोत ने गीत का संगान किया। इस अवसर पर मंच संचालन साध्वी प्रियंवदा जी ने किया।

किशनगढ़

अणुव्रत मार्ग स्थित तेरापंथ भवन में भगवान महावीर के २६२२वें जन्म कल्याणक महोत्सव का आयोजन किय गया। प्रातःकालीन प्रभात फेरी का आयोजन किया गया। तेरापंथ भवन से प्रारंभ हुई प्रभात फेरी शार्दुल स्कूल, मुख्य चौराहा, पुरानी मिल, सुमेर सिटी सेंटर, सब्जी मंडी होते हुए पुनः तेरापंथ भवन पहुँची।

भगवान महावीर के प्रति आस्था अभिव्यक्ति करते हुए तेरापंथी सभा, तेयुप, महिला मंडल, कन्या मंडल सदस्य एवं ज्ञानशाला के बच्चे अपने-अपने गणवेश में नारों के गुंजन से जुलूस की शोभा बढ़ा रहे थे।

समणी डॉ० कुसुमप्रज्ञा जी, समणी जिज्ञासाप्रज्ञा जी के सान्निध्य में मुख्य कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। कार्यक्रम का मंगलाचरण सुमन दुगड़ द्वारा किया गया। स्वागत उद्‌बोधन सभा अध्यक्ष माणकचंद गेलड़ा द्वारा किया गया।

समणी जिज्ञासाप्रज्ञा जी ने भगवान महावीर के प्रमुख तीन सिद्धांतों—अहिंसा, अनेकांतवाद व अपरिग्रह का वर्णन करते हुए बताया कि कैसे ये दूरगामी सिद्धांत जैन और जैनेत्तर व्यक्ति के दिन-प्रतिदिन के जीवन में उपयोगी साबित हो सकते हैं।

समणी निर्देशिका डॉ० कुसुमप्रज्ञा जी ने कहा कि आज के युग में विडंबना है कि सभी महावीर को मानते हैं। उनका जन्मदिवस, निर्वाण दिवस मनाते हैं पर जब बात आती है आचरण की, महावीर के सिद्धांतों को जीवन में अपनाने की, महावीर को जीने की, तब हम सभी पीछे हट जाते हैं। हम महावीर को जीने का प्रयास करें, तब यह मानव जीवन मिलना सार्थक हो सकेगा। भगवान ने जीवनोपयोगी क्षमायाचना का सूत्र, इच्छा का सीमाकरण व क्रोध के अल्पीकरण का सूत्र दिया। भगवान ने स्वयं आहार का, इंद्रियों का, निंद्रा का संयम किया और जनमानस को जीवन निर्माण के सूत्र दिए। हम भगवान के जीवन से प्रेरणा लें और अप्रमत्तता की साधना करें।

महिला मंडल, तेयुप, जागृत गेलड़ा, सुरभि सुराणा, महिला मंडल अध्यक्षा अंजू छाजेड़ ने गीत व वक्तव्य के माध्यम से श्रद्धा सुमन अर्पित किए। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री निखिल संचेती ने किया। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री डॉ० अक्षय कवाड़ ने किया।

तिरुकलीकुंड्रम

साध्वी लावण्यश्री जी के सान्निध्य में श्रमण भगवान महावीर का जन्म कल्याणक महोत्सव आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी के नमस्कार महामंत्रोच्चार के साथ हुआ। मंगलाचरण कर्मणा जैन महाबलीपुरम् की महिलाओं ने किया।

साध्वी लावण्यश्री जी ने कहा कि हमें प्रभु महावीर के अनुयायी होने का गौरव प्राप्त हुआ। अनेक सिद्धांतों की प्रासंगिकता आज भी है। साध्वी सिद्धांतश्री जी ने कहा कि आज का युग कम्पेरिजन का युग है। हम भी अपनी तुलना उस परम आत्मा से कर परम को प्राप्त करने का, मंजिल हासिल करने का नव संकल्प सजाएँ।

ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों एवं महिला मंडल ने मिलकर महावीर स्वामी के जन्म से मोक्ष तक की यात्रा पर प्रस्तुति दी। चेन्नई तेरापंथ सभाध्यक्ष उगमराज सांड, मंत्री अशोक खतंग, महिला मंडल अध्यक्षा पुष्पा हिरण, तिरुकलीकुंड्रम सभाध्यक्ष संपतराज वरोला, मंत्री प्रशांत दुगड़ सहित, चेन्नई तेयुप अध्यक्ष विकास कोठारी सहित अनेक गणमान्यजनों ने अपने विचार व्यक्त किए। आभार ज्ञापन पूर्व अध्यध्क्ष बाबूलाल खांटेड़ ने किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी दर्शितप्रभा जी ने किया।

कोटा

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में गुलाबबाड़ी स्थित तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी धनश्री जी के सान्निध्य में भगवान महावीर के जन्म कल्याणक दिवस का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का प्रारंभ तेयुप के आनंद दुगड़, महावीर हीरावत, सौरभ दसानी ने मंगलाचरण की प्रस्तुति से किया। शासनश्री साध्वी धनश्री जी ने कहा कि आचार्य भगवन के शब्दों में समता के तीन आयाम मैत्री भावना, सहनशीलता एवं निर्भयता—ये हृदयस्थ बैठ जाते हैं, वहाँ प्रभु बनने की तैयारी हो जाती है। भगवान महावीर का अनेकांत का सिद्धांत आज के जीवन में बहुत ही प्रासंगिक है।

साध्वी शीलयशा जी ने भगवान महावीर की जीवनी का वृत्तांत सुनाया। साध्वी सलिलयशा जी एवं साध्वी विदितप्रभा जी ने गीतिका प्रस्तुत की। ज्ञानशाला के बच्चों ने गीत प्रस्तुत किया। बच्चों को पुरस्कृत किया गया।

महिला मंडल की सदस्याओं ने त्रिशला माँ के चौदह स्वप्नों का चित्रण करते हुए नाट्य की प्रस्तुति दी। सभा अध्यक्ष संजय बोथरा, मंत्री धरमचंद जैन, अणुव्रत समिति के भूपेंद्र बरड़िया, महिला मंडल की सुनीता जैन ने अपने विचार प्रस्तुत किए। सभा मंत्री धरमचंद जैन ने आगंतुकों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी सलिलयशा जी ने किया।

सूरत

भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव का आयोजन सिटीलाइट, सूरत में मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में किया गया। कार्यक्रम का आगाज नमस्कार महामंत्र एवं महावीर स्तुति के साथ हुआ।

मुनि मोहजीत कुमार जी ने कहा कि महावीर का जन्म सदियों पहले हुआ। उनका जन्म जीवंत धर्म के आचरण का आधार है। महावीर ने उस जीवंत धर्म को अहिंसा, अनेकांत और अपरिग्रह युक्त चेतना की जागृति का संदेश दिया। इस अवसर पर मुनि भव्य कुमार जी ने महावीर के प्रति विनयांजलि प्रस्तुत की। मुनि जयेश कुमार जी ने महावीर जयंती की सार्थकता को वर्तमान के संदर्भ में धर्म, विज्ञान, जीवन सत्त्व के तथ्यों को प्रकट किया।

कार्यक्रम में महिला मंडल, सूरत ने गीत की प्रस्तुति दी। तेरापंथी सभाध्यक्ष नरपत कोचर, महिला मंडल अध्यक्षा राखी बैद, तेयुप मंत्री अभिनंदन गादिया, टीपीएफ मंत्री धर्मेंद्र सेठिया ने भावाभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री अनुराग कोठारी ने किया।

राजलदेसर

भगवान महावीर जन्म कल्याणक दिवस शासनश्री साध्वी मानकुमारी जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। साध्वीश्री जी ने नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया। तत्पश्चात साध्वी स्नेहप्रभाजी ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा कव्वाली की प्रस्तुति दी गई। इस अवसर पर साध्वी कुशलप्रज्ञा जी, साध्वी कीर्तिरेखा जी, सभा अध्यक्ष विमल सिंह दुधेड़िया, तेयुप अध्यक्ष मुकेश श्रीमाल एवं ज्ञानशाला प्रशिक्षिका ज्योति बरड़िया ने अपने विचार व्यक्त किए। तेरापंथी सभा द्वारा प्रभातफेरी का आयोजन किया गया। जिसमें सभा, तेमम, तेयुप, कन्या मंडल, किशोर मंडल, अणुव्रत समिति के पदाधिकारियों एवं सदस्यों तथा ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने भाग लिया। समारोह में प्रारंभ से लेकर अंत तक राजलदेसर थाने के पुलिस अधिकारियों की विशेष उपस्थिति रही। तेरापंथी सभा की तरफ से पुलिस अधिकारियों का स्वागत सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी इंदुयशा जी ने किया।

लुधियाना

भगवान महावीर की मूल शिक्षा है—अहिंसा। अहिंसा ही सबसे बड़ा धर्म है। किसी के अस्तित्व को मिटाने की अपेक्षा उसे शांति से जीने दो और स्वयं भी शांति से जियो। इसी में सभी का कल्याण है। सभी जीव-जंतुओं के प्रति अर्थात् पूरे प्राणिमात्र के प्रति अहिंसा की भावना रखकर किसी प्राणी की अपने स्वार्थ व जीभ के स्वाद आदि के लिए हत्या न तो करें और न ही करवाएँ और हत्या से उत्पन्न वस्तुओं का भी उपयोग नहीं करें। यह शब्द मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने भगवान महावीर जन्म कल्याणक दिवस पर आचार्य तुलसी कल्याण केंद्र तेरापंथ भवन में व्यक्त किए।

कार्यक्रम में संगरूर, समाना, नाभा, अहमदगढ़, फिलौर, शेरपुर, जगराओं पंजाब के विभिन्न क्षेत्रों से श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन मुनि सुपास कुमार जी ने किया।

शासनश्री मुनि विमल कुमार जी ने कहा कि भगवान महावीर ने अपने प्रवचनों में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह पर सबसे अधिक जोर दिया। उन्होंने कहा कि जो जिस अधिकार का हो, वह उसी वर्ग में आकर सम्यक्त्व पाने के लिए आगे बढ़े। जीवन का लक्ष्य है समता पाना।

मुनि स्वास्तिक कुमार जी ने कहा कि अपनी बात को सही और दूसरों की बात को गलत मानने के कारण ही समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। लेकिन महावीर स्वामी का अनेकांत दर्शन हमें किसी भी समस्या पर खुले नजरिए से सोचने की दृष्टि देता है। महावीर स्वामी ने अनेकांत दर्शन की अवधारणा दी।

मुनि धन्यकुमार जी ने कहा कि भगवान महावीर का एक महत्त्वपूर्ण संदेश है—क्षमा। यदि भगवान महावीर की इस शिक्षा को हम व्यावहारिक जीवन में उतारें तो फिर क्रोध एवं अहंकार मिश्रित जो दुर्भावना उत्पन्न होती है और जिसके कारण हम घुट-घुटकर जीते हैं, वह समाप्त हो जाएगी।

कार्यक्रम में मुनि अक्षय कुमार जी ने गीत प्रस्तुत किया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अभय राज, तेयुप के अध्यक्ष तरुण जैन, महिला मंडल की अध्यक्षा इंदिरा सेठिया और सूर्य प्रकाश आदि वरिष्ठ अतिथियों ने भगवान महावीर के जीवन-दर्शन पर प्रकाश डाला। श्रावक सूर्य प्रकाश सामसुखा ने महावीर के जीवन पर मुख्य अनेकांत, अपरिग्रह आदि की तुलना वर्तमान में की। कुलदीप सुराणा ने महावीर की साधना की चर्चा की। मनोज धारीवाल ने उपस्थित श्रावकों का धन्यवाद प्रस्तुत किया।

नालासोपारा (मुंबई)

भगवान महावीर स्वामी जन्म-कल्याणक के उपलक्ष्य में इतिहास में प्रथम बार अद्‌भुत, अद्वितीय, अलौकिक ४ संप्रदाय की रथयात्रा वरघोड़ा कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

संवेदनाकार द्वारा विशिष्ट स्पीच, नेपाली रितिका बेन का संयम जीवन तरफ प्रयाण १४ साल की नालासोपारा की नेपाल की राजकुमारी मुमुक्षु रितिका का बहुमान किया एवं मुमुक्षु की स्पीच से सभी गद्‌गद हो गए।

भगवान महावीर जन्म-कल्याणक दिवस के अवसर पर तेयुप अध्यक्ष किशन कोठारी की अध्यक्षता में एवं तेयुप मंत्री दिनेश धाकड़ के निर्देशन में तेयुप कोषाध्यक्ष मनोज सोलंकी का मार्गदर्शन किया।

कार्यक्रम में तेरापंथ सभा अध्यक्ष लक्ष्मीलाल मेहता, मंत्री पारस बाफना, कोषाध्यक्ष नरेंद्र सोलंकी, तेयुप उपाध्यक्ष प्रथम मोहन कुमठ, तेयुप सहमंत्री-द्वितीय विशाल चोरड़िया सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्यजन उपस्थिति रहे।

भीलवाड़ा

सकल जैन समाज द्वारा भगवान महावीर का २६२२वाँ जन्म कल्याणक महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। तेयुप, भीलवाड़ा का अच्छा सहयोग रहा। सकल जैन समाज महावीर युवक मंडल एवं तेरापंथ युवक परिषद के संयुक्त तत्त्वावधान में चित्रकूट धाम में विशाल रक्तदान शिविर आयोजित हुआ। इस शिविर में तेयुप अध्यक्ष कमलेश सिरोहिया के नेतृत्व में एवं पूरी टीम के सहयोग से ४३१ रक्तदान किया गया। तेयुप की पूरी टीम का हर व्यवस्था में सराहनीय सहयोग रहा।

सभा अध्यक्ष जसराज चोरड़िया, सकल जैन समाज के संयोजक योगेश चंडालिया निर्मल गोखरू, तेयुप मंत्री राजू कर्णावट, महिला मंडल, किशोर मंडल और बड़ी संख्या में संस्था के पदाधिकारी एवं सदस्यगण उपस्थित रहे। समाज की सभी संस्थाओं के प्रति अनुमोदना जिन्होंने रक्तदान में सहयोग करके इस शिविर को सफल बनाया।

✦ *श्रावक बारहव्रतों को स्वीकार करें तो कुछ अंशों में संयम जीवन में आ जाएगा।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

मनोनुशासनम्

❑ **आचार्य तुलसी** ❑

आसनों का वर्गीकरण

स्वास्थ्य के मूल तत्त्व हैं–(१) वीर्याशन की शुद्धि, (२) नाड़ी-संस्थान की शुद्धि, (३) पाचन-संस्थान की शुद्धि, (४) वायु-शुद्धि, (५) उत्सर्ग-शुद्धि।

वीर्याशय की शुद्धि के लिए उपयोगी आसन–(१) भुजंगासन, (२) संप्रसारण-भूनमनासन, (३) कंदपीड़नासन, (४) कुक्कुटासन, (५) योगमुद्रा, (६) मत्स्येन्द्रासन, (७) महामुद्रा।

नाड़ी-संस्थान की शुद्धि के लिए आसन–(१) कुक्कुटासन, (२) वीरासन।

पाचन-संस्थान की शुद्धि के लिए आसन–(१) सुप्त पद्मासन (पद्मासन में लेटना), (२) अर्धलकुटासन (पैरों को ऊपर उठाए रखना), (३) महामुद्रा, (४) योगमुद्रा, (५) मत्स्येन्द्रासन, (६) सोड्डीयान पद्मासन, (७) पश्चिमोत्तानासन, (८) धनुरासन, (९) सर्वांगासन।

वायु-शंद्धि के लिए उपयोगी आसन–(१) पवनमुक्तासन, (२) उत्थितपद्मासन।

ये श्वास-शुद्धि के लिए भी उपयोगी हैं।

उत्सर्ग-शुद्धि के लिए उपयोगी आसन–(१) सोड्डीयान पद्मासन, (२) बद्धपद्मासन, (३) मुष्टियुक्तयोगमुद्रा (योगमुद्रा में दोनों मुट्ठियों को एड़ियों के पास सटाकर बैठना), (४) अर्धलकुटासन (उचित पादासन)।

शरीर के विभिन्न अवयवों की उपयोगिता की दृष्टि से भी आसनों के कुछ वर्गीकरण किए जा सकते हैं।

सिर, नाक, कान और आँख के लिए उपयोगी आसन–(१) सर्वांगासन, (२) ऊर्ध्वपद्मासन।

गर्दन और कंधों के लिए उपयोगी आसन–(१) सर्वांगासन, (२) हलासन, (३) मत्स्यासन, (४) जालंधरबंध।

छाती, फेफड़े और हृदय के लिए उपयोगी आसन–(१) भुजंगासन, (२) धनुरासन, (३) पवनमुक्तासन, (४) प्राणायाम।

हाथ और पैर के लिए उपयोगी आसन–(१) उत्थित पद्मासन।

वृषण-वृद्धि के लिए उपयोगी आसन–(१) सर्वांगासन, (२) शीर्षासन।

आसन संबंधी सामान्य निर्देश

(१) आसनकाल में मन तनाव से मुक्त रहना चाहिए। शारीरिक तनाव मानसिक तनाव से पैदा होता है। मन जितना खाली होगा, उतना ही शरीर तनावमुक्त होगा अर्थात् आसन के प्रायोग्य होगा।

(२) जिस अवयव-संबंधी आसन करें, उसी अवयव में मन को टिकाए रखें।

(३) श्वास दीर्घ और मंद लें। मन की गति आसन से संबंधित अवयव पर होती है तो श्वास का अंतःप्रवाह मुख्य रूप से उस अवयव की ओर सहज ही हो जाता है।

(४) आसन का प्रयोग शुद्ध हवा में करना चाहिए।

(५) पद्मासन-सुखासन जैसे मृदु आसनों को छोड़कर शेष अधिकांश आसन भोजन के पश्चात् तीन घंटे से पहले नहीं करने चाहिए। कठोर आसन करने के पश्चात् आधे घंटे से पहले भोजन नहीं करना चाहिए।

साधारणतया शौच से निवृत्त होने के पश्चात् प्रातःकाल में आसन करना अति उपयुक्त है अथवा रात्रिकाल में।

(६) आसन करने वाले को डटकर भोजन नहीं करना चाहिए। उसका भोजन सात्त्विक होना चाहिए।

(७) आसन के पश्चात् उसका प्रतिलोम आसन अवश्य करना चाहिए। जैसे–

अनुलोमप्रतिलोम

सर्वांगासन	**मत्स्यासन**
भुजंगासन	पश्चिमोत्तानासन

प्रतिलोम आसन की काल-मर्यादा अनुलोम आसन से आधी होनी चाहिए। यदि दस मिनट सर्वांगासन हो तो मत्स्यासन पाँच मिनट करना चाहिए।

(८) प्रत्येक आसन के पश्चात् एक मिनट का उत्तानशयन (शवासन) करना चाहिए और आसन के पूरे क्रम की समाप्ति पर उक्त आसन पाँच मिनट से पंद्रह मिनट तक करना चाहिए।

(९) आसन-काल में कसा हुआ वस्त्र, जो रक्त संचार में बाधा डाले, नहीं पहनना चाहिए किंतु कोपीन आवश्यक है।

(१०) हर आसन के साथ मूल-बंध अवश्य करना चाहिए।

आसन का सामान्य प्रयोजन

भगवान् महावीर ने आसन को तप का एक प्रकार बतलाया है। उनकी भाषा में आसन का नाम कायक्लेश है। आसन के द्वारा शरीर को कुछ कष्ट होता है। उस कष्ट से मानसिक धैर्य और सहिष्णुता का विकास होता है। यह आसन का आध्यात्मिक लाभ है।

आसन के द्वारा धमनियों में रक्त का संचार उचित प्रकार से होता है। अवस्था के साथ हृदय की धमनियाँ कठोर और संकरी होती जाती हैं। उन्हें रोकने का उपाय आसन के द्वारा समुचित मात्रा में रक्त पहुँचाते रहना है। इस प्रकार आध्यात्मिक और शारीरिक दोनों दृष्टियों से आसन मूल्यवान है।

जैन साधना पद्धति में आहारविजय, आसनविजय और निद्राविजय का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आहार और निद्रा–ये दोनों शरीर की अनिवार्य आवश्यकताएँ हैं। आहार के बिना जैसे शरीर शक्तिशाली और स्वस्थ नहीं रहता वैसे ही निद्रा के बिना वह स्वस्थ और कार्यक्षम नहीं रहता। आहार के लिए जैसे मात्रा का प्रश्न है, वैसे ही निद्रा के लिए भी मात्रा का प्रश्न है। आहार के लिए जैसे सामान्य नियम है–जितनी भूख उतना भोजन, वैसे ही निद्रा के लिए भी सामान्य नियम यह है–जितनी जरूरत उतनी नींद। निद्राविजय का अर्थ निद्रा को कम करना नहीं है किंतु निद्रा की जरूरत को कम करना है। शरीर में जितना विष जमा होता है उसे शरीर निकालता है। उसे निकालने की एक प्रक्रिया निद्रा है। प्रवृत्ति जितनी अधिक और उत्तेजित होती है। उतनी ही निद्रा की जरूरत अधिक होती है। वह जितनी कम और शांत होती है उतनी ही निद्रा की जरूरत कम हो जाती है। निद्रा के लिए ऐसा कोई स्थूल नियम नहीं बनाया जा सकता कि छह घंटा ही सोना है अथवा उससे कम या अधिक सोना है। मानसिक विश्राम, मन की स्थिरता और निर्विकल्पता से नींद की जरूरत अपने आप कम हो जाती है। हठपूर्वक निद्रा को कम करने का प्रयत्न शरीर और मन–दोनों के लिए हितकर नहीं होता। नींद लेने के बाद शरीर हल्का, मन प्रसन्न और इंद्रियाँ कार्यक्षम हों तो समझना चाहिए कि नींद पर्याप्त ली गई है। कायोत्सर्ग या शिथिलीकरण के समय जो विश्रांति होती है, वह कई घंटों की नींद का काम कर देती है। वह सूत्र स्मृति में रखना होगा कि निद्राविजय का अर्थ है निद्रा की आवश्यकता का अल्पीकरण।

(१२) वाचां संवरणं मौनम्।।

(१२) वाणी के संवरण को मौन कहा जाता है। यह वचन-गुप्ति है। पहले काय की गुप्ति होती है, फिर वचन की गुप्ति होती है, तत्पश्चात् मन की गुप्ति होती है।

मौन

चंचलता का बहुत बड़ा हेतु वाणी है। यदि वाणी नहीं होती तो हमारा दूसरों के साथ संपर्क नहीं होता। हम एक-दूसरे से कटे हुए होते। उस कटाव की स्थिति में या पारस्परिक संबंधों के अभाव की स्थिति में हमारी प्रवृत्तियाँ सीमित हो जाती हैं। फलतः हमारी चंचलता मिट जाती है। पूज्यपाद ने लिखा है कि जन-संपर्क में वाणी का प्रयोग होता है। उससे चंचलता बढ़ती है। मानसिक स्थिरता चाहने वाला व्यक्ति वचन की स्थिरता नहीं करता तो इसका अर्थ होगा कि उसकी मानसिक स्थिरता की चाह वास्तविक नहीं है।

जब भाषा गौण होती है और मन प्रधान होता है तब हम चिंतन की स्थिति में होते हैं और जब मन गौण होता है और भाषा प्रधान होती है तब हम बोलने की स्थिति में होते हैं। जब भाषा और मन अलग-अलग हो जाते हैं तब हम ध्यान की स्थिति में होते हैं।

प्रयोजन के बिना व बोलना वाणी की प्रवृत्ति नहीं है, फिर भी प्रस्तुत प्रकरण में उसे मौन कहना इष्ट नहीं है। मौन के पीछे न बोलने का दृढ़ मानसिक संकल्प होना चाहिए। यह संकल्प ही उसकी विशेषता है। मौनकाल में दोनों होंठ मिले हुए रहने चाहिए। उदान वायु पर विजय पाने का यह बहुत महत्त्वपूर्ण उपाय है। बोलने से शक्ति क्षीण होती है। मौन के द्वारा सहज ही उससे बचाव हो जाता है। इस प्रकार मौन अनेक मार्गों से मन की एकाग्रता में सहायक होता है।

(१३) इंद्रिय-कषायनिग्रहो विविक्तवासश्च प्रतिसंलीनता।

(१४) इंद्रियाणां विषय-प्रचारनिरोधो विषय-प्राप्तेषु अर्थेषु राग-द्वेष-निग्रहश्च इंद्रिय-प्रतिसंलीनता।

(१५) क्रोधादीनां उदय-निरोधस्तेषामुदय प्राप्तानां च विफलीकरणं कषाय-प्रतिसंलीनता।

(१६) ऐकाग्र्योपघातक-तत्त्व-रहितेषु स्थानेषु निवसनं विविक्तवासः।।

(१३) पाँ इंद्रिय (स्पर्शन, रसन, घ्राण, चक्षु और श्रोत्र) चार कषाय (क्रोध, मान, माया और लोभ) के निग्रह तथा विविक्तवास (एकांतवास) को प्रतिसंलीनता (प्रत्याहार) कहा जाता है।

इस परिभाषा से प्रतिसंलीनता के तीन प्रकार फलित होते हैं–(१) इंद्रियप्रतिसंलीनता, (२) कषायप्रतिसंलीनता, (३) विविक्तवास।

(१४) इंद्रियों के विषय-प्रचार को रोकने (विषयों का ग्रहण न करने) तथा जो विषय प्राप्त हों उन पर राग-द्वेष न करने को इंद्रियप्रतिसंलीनता कहा जाता है।

(१५) क्रोध, मान, माया और लोभ को उदय में न जाने तथा वे उदय में आ जाएँ तो उन्हें विफल करने को कषाय-प्रतिसंलीनता कहा जाता है।

(१६) एकाग्रता में बाधा डालने वाले तत्त्वों से रहित स्थान को विविक्तवास कहा जाता है।

(क्रमशः)

संबोधि

❑ **आचार्य महाप्रज्ञ** ❑

बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(४) प्रहाण्या कर्मणां किञ्चिद्, आनुपूर्व्या कदाचन।
जीवाः शोधिमनुप्राप्ता, आव्रजन्ति मनुष्यताम्।।

कर्मों की हानि होते-होते जीव क्रमशः विशुद्धि को प्राप्त होते हैं और विशुद्ध जीव मनुष्यगति में जन्म लेते हैं।

(५) लब्ध्वाऽपि मानुषं जन्म, श्रुतिर्धर्मस्य दुर्लभा।
यां श्रुत्वा प्रतिपद्यन्ते, तपः क्षान्तिमहिंसताम्।।

मनुष्य का जन्म मिलने पर भी उस धर्म की श्रुति दुर्लभ है, जिसे सुनकर लोग तप, क्षमा और अहिंसक वृत्ति को स्वीकार करते हैं।

(६) कदाचिच्छ्रवणे लब्धे, श्रद्धा परमदुर्लभा।
श्रुत्वा नैर्यात्रिकं मार्गं, भ्रश्यन्ति बहवो जनाः।।

कदाचित् धर्म को सुनने का अवसर मिलने पर भी उस पर श्रद्धा होना अत्यंत कठिन है। पार पहुँचाने वाले मार्ग को सुनकर भी बहुत से लोग भ्रष्ट हो जाते हैं।

(७) श्रुतिञ्च लब्ध्वा श्रद्धाञ्च, वीर्यं पुनः सुदुर्लभम्।
रोचमाना अप्यनेके, नाचरन्ति कदाचन।।

धर्म-श्रवण और श्रद्धा प्राप्त होने पर भी वीर्य दुर्लभ है। अनेक लोग श्रद्धा रखते हुए भी धर्म का आचरण नहीं करते।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ **मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'** ❑

कर्म बोध

प्रकृति व करण

प्रश्न १ : कर्म किसे कहते है।?

उत्तर : शुभ-अशुभ प्रवृत्ति के द्वारा आत्मा के चिपकने वाले तथा अच्छे-बुरे का परिणाम देने वाले पुद्गलों को कर्म कहते हैं।

प्रश्न २ : कर्म की कितनी प्रकृतियाँ (प्रकार) हैं?

उत्तर : कर्म की आठ प्रकृतियाँ हैं– (१) ज्ञानावरणीय, (२) दर्शनावरणीय, (३) वेदनीय, (४) मोहनीय, (५) आयुष्य, (६) नाम, (७) गोत्र, (८) अंतराय।

इसके और भी प्रकार हो सकते हैं। कर्म के ये आठ प्रकार स्थूल रूप से हैं। इनमें लगभग सभी प्रवृत्तियों से आकर्षित होने वाली कर्म वर्गणाओं का समाहार हो गया है।

प्रश्न ३ : कर्म की उत्तर प्रकृतियाँ कितनी हैं?

उत्तर : कर्म की उत्तर प्रकृतियाँ निम्नोक्त हैं–

ज्ञानावरणीय कर्म की पाँच प्रकृतियाँ हैं–(१) मति ज्ञानावरण, (२) श्रुत ज्ञानावरण, (३) अवधि ज्ञानावरण, (४) मनःपर्यव ज्ञानावरण, (५) केवल ज्ञानावरण।

दर्शनावरणीय कर्म की नौ प्रकृतियाँ हैं–(१) चक्षु दर्शनावरण, (२) अचक्षु दर्शनावरण, (३) अवधि दर्शनावरण, (४) केवल दर्शनावरण, (५) निद्रा, (६) निद्रा निद्रा, (७) प्रचला, (८) प्रचला प्रचला, (९) स्त्यानर्द्धि।

वेदनीय कर्म की दो प्रकृतियाँ हैं–(१) सात (सुख) वेदनीय, (२) असात (दुःख) वेदनीय।

मोहनीय कर्म की दो प्रकृतियाँ है।–(१) दर्शन मोहनीय, (२) चारित्र मोहनीय।

दर्शन मोहनीय की तीन प्रकृतियाँ हैं–(१) सम्यक्त्व मोहनीय, (२) मिथ्यात्व मोहनीय, (३) मिश्र मोहनीय।

चारित्र मोहनीय की पचीस प्रकृतियाँ हैं–

१ – ४ अनंतानुबंधी कषाय चतुष्क	–	क्रोध, मान, माया, लोभ
५ – ८ अप्रत्याख्यानी कषाय चतुष्क	–	क्रोध, मान, माया, लोभ
९ – १२ प्रत्याख्यानी कषाय चतुष्क	–	क्रोध, मान, माया, लोभ
१३ – १६ संज्वलन कषाय चतुष्क	–	क्रोध, मान, माया, लोभ

नौ कषाय–हास्य, रति, अरति, भय, शोक, जुगुप्सा (घृणा), स्त्री वेद, पुरुष वेद, नपुंसक वेद।

आयुष्य कर्म की चार प्रकृतियाँ हैं–(१) नरक आयुष्य, (२) तिर्यंच आयुष्य, (३) मनुष्य आयुष्य, (४) देव आयुष्य।

नाम कर्म की दो प्रकृतियाँ हैं–(१) शुभ नाम, (२) अशुभ नाम।

गोत्र कर्म की दो प्रकृतियाँ हैं– (१) उच्च गोत्र, (२) नीच गोत्र।

अंतराय कर्म की पाँच प्रकृतियाँ हैं–(१) दानान्तराय, (२) लाभान्तराय, (३) भोगांतराय, (४) उपभोगांतराय, (५) वीर्यान्तराय।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

❑ **आचार्य महाश्रमण** ❑

आचार्य तुलसी

श्रावक श्री बहादुरमलजी भंडारी

जोधपुर-राज्य उन जैसे बुद्धिमान् व्यक्ति से अंत तक उपकृत होता रहा। जोधपुर-नरेश महाराज जसवंतसिंहजी ने उनकी मृत्यु से लगभग चार महीने पूर्व उन्हें राजकोष संभालने तथा सुसंगठित करने का कार्य सौंपा। उन्होंने उस कार्य का प्रारंभ तो किया, परंतु बीच में ही रुग्ण हो जाने तथा कुछ समय पश्चात् दिवंगत हो जाने से पूर्ण नहीं कर सके। उनकी मृत्यु के पश्चात् वह कार्य उनके सबसे बड़े पुत्र किसनमलजी भंडारी को सौंपा गया। वे उसे सं० १९५६ तक सुचारु रूप से संभालते रहे।

सादा जीवन, उच्च विचार

भंडारीजी के जीवन-व्यवहार में सादगी का अच्छा स्थान था। वेशभूषा में ही नहीं, किंतु रहन-सहन में भी वे सादापन ही पसंद करते थे। वे प्रतिदिन प्रातःकाल नरेश को मुजरा करने जब राजमहल में जाते तब घोड़ा साथ में रखते, परंतु जाते पैदल ही, वापस आते समय उसकी सवारी करते थे। उसमें उनका ध्येय रहता था कि पैदल चलने की आदत बनी रहे तथा स्वास्थ्य ठीक रहे।

उनके घर में बहलियाँ तथा रथ रहा करते थे, परंतु वे अपनी पुत्रवधुओं को कहा करते कि अन्य सभी स्थानों में इनका प्रयोग यथेच्छ किया जा सकता है, परंतु जब किसी की मृत्यु के अवसर पर संवेदना प्रकट करने जाना हो तथा अपने पीहर जाना हो तब इनका प्रयोग न करें। अपने वैभव से यदि किसी के मन में ईर्ष्या-भाव जागे तो फिर वैसे वैभव का भोग निरर्थक है। यह उनके विचारों की उच्चता का उदाहरण कहा जा सकता है।

परिवार और व्यवस्था

बहादुरमलजी के चतुर्भुजजी और पंचाणदासजी नाम के दो छोटे भाई थे। वे उनका अपने पुत्रों से भी अधिक ध्यान रखते थे। जब कोई उन्हें पूछता कि भाइयों को इतना महत्त्व देने का क्या कारण है? तो वे कहते–'भाई तो मेरी भुजाएँ हैं, उनको न्यून कैसे समझा जा सकता है?'

भंडारीजी के चार पुत्र और एक पुत्री थी। वे पाँचों संतानों को समान दृष्टि से ही देखा करते थे। भारतीय समाज पुत्रों को जितना अधिक महत्त्व देता है उतना पुत्रियों को नहीं। पुत्री 'हांती' की अधिकारिणी मानी जाती है। 'पांती' की नहीं। फिर भी भंडारीजी ने उस बात की परवाह न करके अपनी संपत्ति के बराबर पाँच विभाग किए और उनमें से एक अपनी पुत्री को दिया।

उन्होंने अपने चारों पुत्रों को संपत्ति-विभाजन के पश्चात् जो उसका अधिकार-पत्र दिया, उसमें सीर की वस्तुओं की सुरक्षा के लिए लिखा–'चारूं भाई सीर नै शील बराबर समझसी।' सीर-साझे को अपनी शील के समान ही पवित्र समझ कर उत्तरदायित्व वहन करने की बात उनके हृदय की पवित्रता को तो व्यक्त करती ही है, साथ ही उन व्यक्तियों को दिग्बोध भी कराती है, जो संयुक्त उत्तरदायित्व में बंधते हैं।

अटल धर्मानुराग

जोधपुर के एक यतिजी के वहाँ भंडारीजी का काफी आना-जाना था। यह शायद प्रारंभिक वर्षों की बात है। उन्होंने यतिजी को कह रखा था कि आप तेरापंथ और उसके आचार्यों के प्रति यदि कोई निंदात्मक बात कहने लगेंगे तो अपना यह प्रेम-भाव निभ नहीं सकेगा। मैं उसी दिन से यहाँ आना छोड़ दूँगा। यतिजी इसके लिए वचनबद्ध थे कि वे कभी किसी के सम्मुख ऐसी कोई बात नहीं करेंगे। परंतु उस युग में तेरापंथ के विषय में बात न करना कठिन कार्य था। जैनों के प्रत्येक संप्रदाय में धर्म की चर्चा चलते ही घूम-फिर कर बहुधा वह तेरापंथ पर आ जाती थी। कहीं उसका स्वरूप प्रशंसात्मक होता तो कहीं निंदात्मक। यतिजी वादा करके भी उसे निभा नहीं पाए। भंडारीजी के सम्मुख तो वे बचते रहे, पर पीछे से निंदा करते रहे। एक दिन यतिजी किसी के साथ निन्दात्मक बातें कर रहे थे कि अचानक भंडारीजी आ गए। उनके अंदर आते ही यतिजी ने बात का रुख बदल दिया, परंतु वे बाहर खड़े रहकर पहले ही बातों का सारा सिलसिला सुन चुके थे। अपनी पूर्व प्रतिज्ञा के अनुसार उन्होंने यतिजी को जता दिया और फिर कभी उस उपाश्रय में नहीं गए। उन जैसे धर्मानुरागी व्यक्ति भला अपने गुरु की निंदा कैसे सुन व सहन कर सकते थे? यतिजी ने उस विषय को लेकर कई बार क्षमा-याचना भी की, परंतु भंडारीजी ने स्पष्ट कह दिया कि एक बार जिसने वचन-भंग कर दिया वह दूसरी बात नहीं करेगा, इसका क्या विश्वास है? मैं अब कभी नहीं आऊँगा।

(क्रमशः)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
1 - 7 मई, 2023

✦ *व्यक्ति नशे के दुष्परिणामों को समझ ले तो नशे की लत से छुटकारा मिल सकता है। गलत कार्यों में व्यक्ति धन का नियोजन क्यों करे?*

—आचार्यश्री महाश्रमण

साध्वीप्रमुखाश्री जी के मनोनयन दिवस पर विशेष

मनोनयन का प्रथम वर्ष

❐ साध्वी शुभ्रयशा ❐

आदरणीया साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा एक नाम है तप और जप से भावित चेतना का।

एक नाम है–विनय, समर्पण और गुरुदृष्टि की आराधिका का।

एक नाम है–शुभ अध्यवसाय में रहने वाली साधिका का। आप आचार्य तुलसी के शासनकाल से ही व्यवस्थाओं से जुड़ गए। समण दीक्षा लेते ही आप प्रथम समणी नियोजिका के रूप में समणियों की व्यवस्था संभालते थे। आपने लंबे समय तक मुमुक्षु बहनों की व्यवस्था भी की।

आचार्य महाप्रज्ञ के शासनकाल में आपने संघीय कार्यों में विशेष रूप से अपनी भूमिका निभाई। चाड़वास मर्यादा महोत्सव पर साध्वियों की व्यवस्था का कार्य-भार संभाला। २०१७ में आचार्यश्री महाश्रमणजी ने साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के साथ साध्वियों की व्यवस्था में योजित कर दिया। आप पूज्यप्रवरों द्वारा प्राप्त कार्यों को करने में अपने समय व शक्ति का नियोजन करते रहे। शासनमाता के कालधर्म को प्राप्त होने के बाद दिल्ली में आचार्य महाश्रमणजी ने अनिश्चित काल के लिए साध्वी समाज की व्यवस्था का निर्देश दिया।

अकल्पित उद्घोषणा : १५ मई, २०२२ सरदारशहर, तेरापंथ भवन उषाकाल का समय आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अकल्पित, अनायोजित, अघोषित एक आयोजन की उद्घोषणा की। वह आयोजन था साध्वीप्रमुखा पद की नियुक्ति। किसी ने शायद सोचा भी नहीं था कि आर्यवर इतनी जल्दी साध्वीप्रमुखा पद की नियुक्ति करेंगे। पूज्यप्रवर द्वारा इस अकल्पित उद्घोषणा से सारा संघ हर्षोल्लास से आप्लावित हो गया। लोग अपनी-अपनी दृष्टि से अटकलें लगाने लगे, साध्वी समाज में भी एक ऊहापोह था, प्रश्न था–कौन होगा? उत्तर भी स्पष्ट था। दो में से एक होगा। ऊहापोह वहाँ होता है, जहाँ सामने विकल्प हो, जहाँ कोई विकल्प न हो वहाँ ऊहापोह विराम को प्राप्त हो जाता है। मुख्य नियोजिकाजी भी दो प्रकार के संभाषण का चिंतन करके पधारे थे। साध्वियों ने गीत की पंक्तियाँ भी दो प्रकार की बनाई थीं। पूज्यप्रवर की उद्घोषणा के साथ ही सारा ऊहापोह समाप्त हो गया। अनेक प्रकार की संचार व्यवस्थाओं के माध्यम से देश-विदेशों से बधाई के संदेश आने लगे।

अहोभाव से वर्धापन : कार्यक्रम समाप्त होते ही नव निर्वाचित साध्वीप्रमुखाश्री जी सर्वप्रथम दुगड़ गेस्ट हाउस में पधारे। रत्नाधिक साध्वियों को सविधि वंदना की। साध्वियों ने अत्यधिक हर्ष के साथ आपके हाथों को अपने हाथों में थमा लिया। किसी-किसी ने तो आपके हाथों को सिर पर भी लगा लिया, मानो वे आपको बद्धांजलि वंदना कर रही है। मालू गेस्ट हाउस से अनेक रत्नाधिक व अवमरात्निक साध्वियाँ आपकी अगवानी में दुगड़ गेस्ट हाउस पहुँच गई। वहाँ का दृश्य आनंददायक था, सात्त्विक सुखानुभूति कराने वाला था। साध्वियों के प्रवास में मानो बसंतोत्सव आ गया हो।

आचार्य महाश्रमणजी ने साध्वी समाज को एक बनी-बनाई साध्वीप्रमुखा प्रदान की है। यह पूज्यप्रवर की साध्वी समाज पर विशिष्ट कृपा है। आप एक अनुभव प्रवीण साध्वीप्रमुखा हैं। आपने शासनमाता के साथ रहकर व्यवस्था-कौशल के अनेक गुणों को आत्मसात किया है। आप एक संवेदनशील व करुणाशील साध्वीप्रमुखा हैं।

संवेदना के क्षण : घटना प्रसंग ७ मार्च, २०२३ का है। वर्षीतप के उपलक्ष्य में चैन्नई से डागा परिवार श्रीचरणों में उपस्थित हुआ। बड़ोदा में साध्वियों का प्रवास फ्लैटों में रखा हुआ था। उस दिन धूप प्रखर थी। आप लगभग ३ बजे पूज्यप्रवर की सेवा से पधारे। डागा परिवार के सभी लोग सेवा करने के लिए आपका इंतजार कर रहे थे। लोग प्रायः धूप में ही खड़े थे। साध्वियों ने निवेदन किया, आप अभी आधा किलोमीटर से पधारे हैं, गर्मी बहुत है। अतः आप हॉल के अंदर विराजकर लोगों को सेवा कराने की कृपा करें। आपने फरमाया–इतने लोग हॉल में कैसे आ सकेंगे। ये भी तो कितनी देर से धूप में खड़े हैं। ऐसा फरमाते हुए आप भी हॉल से बाहर पधार गए। लोगों को अच्छी तरह सेवा करवाई। आपके ये शब्द–"लोग भी तो कितनी देर से धूप में खड़े हैं, फिर मेरे क्या दिक्कत है?" लोगों के मानस में अंकित हो गए और सेवा करके जाते-जाते परस्पर बतियाने लगे–ये भी एक संवेदनशील साध्वीप्रमुखा हैं। कुछ व्यवहार व घटना प्रसंग व्यक्ति के भीतर छिपी अर्हता को उजागर कर उसके व्यक्तित्व को उन्नत बनाने में योगभूत बन जाते हैं। उनमें एक ओर प्रसंग है जो साध्वीप्रमुखाश्री जी की विशेषता को व्यक्त करने में अपनी अहम् भूमिका निभाता है।

नीर एक भाव दो : छापर में उपासिका प्रशिक्षण शिविर था। एक बहन आपके पास आई और कहने लगी कल मेरा ऑरल पेपर है। २० मिनट तक एक विषय पर ही बोलना है। मुझे बहुत भय लगता है। मैं कैसे बोल सकूँगी। साध्वीश्री जी आप मेरा मार्गदर्शन करें, कहते-कहते उसकी आँखें सजल हो गईं। आपने कहा–आचार्यवर के दर्शन करके, दर्शन केंद्र पर ध्यान करो। श्वास के साथ यह अनुचिंतन करो–भय का भाव दूर हो रहा है, मैं धारा प्रवाह भाषण बोल रही हूँ। आप द्वारा निर्दिष्ट प्रयोग सफल रहा। उसने आपके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए सजल नेत्रों से निवेदन किया–मैं निर्भय होकर धारा प्रवाह भाषण दे सकी, यह आपकी कृपा का परिणाम है। नयनों के नीर में भावों का बड़ा अंतर था। पहले असफलता के भय से नयन सजल थे अब सफलता की खुशी से नयन नम थे।

मृदु अनुशासन शैली : समस्या समाधान के संदर्भ में ऐसे एक नहीं अनेक घटना प्रसंग हैं, यात्रा के दौरान अनुभव हुआ। आप रत्नाधिक साध्वियों के चिंतन को सम्यक् प्रकार से ग्रहण कर उसे क्रियान्वित भी करते हैं तो शेष– अवमरत्नाधिक साध्वियों पर इतना मृदु अनुशासन करते हैं कि उन्हें अनुशासन भार नहीं, उपहार लगने लगता है। कभी कोई नई व्यवस्था का प्रसंग आता है तो आप अग्रगामी (साँझपति) साध्वियों की एक छोटी संगोष्ठी आहूत करते हैं। सहचिंतन से सर्वजन कल्याण कार्य करते हैं। कभी कोई छोटी साध्वी प्रतिक्रमण, अर्हत् वंदना में पंक्तिबद्ध नहीं बैठती तब आप कहते हैं–"क्या आप पंक्ति बनाने में सहयोग कर सकते हैं? अनुशासन की इस शब्दावली को सुनकर साध्वियाँ गद्-गद् हो जाती हैं और पंक्ति कुछ ही सैकेंडों में व्यवस्थित हो जाती है।

प्रमुखा पद नवम् होकर भी प्रथम : आपका यह प्रथम मनोनयन दिवस है। आप एक ऐसी साध्वीप्रमुखा हैं जो नवम् प्रमुखा पद पर आसीन होकर भी कुछ बातों में प्रथम हैं।

(१) आचार्यों के दीक्षा दिवस पर साध्वीप्रमुखा पद की नियुक्ति प्रथम बार।

(२) आचार्यों द्वारा नियुक्ति पत्र के साथ रजोहरण व प्रमार्जनी प्रदान करना, प्रथम बार।

(३) पूर्ववर्ती साध्वीप्रमुखा के साथ रहकर प्रशिक्षण व अनुभव प्राप्त करने वाली साध्वीप्रमुखा पर नियुक्ति, प्रथम बार।

(४) समण श्रेणी की प्रथम नियोजिका प्रमुखा पर पर नियुक्त, प्रथम बार।

(५) अंग्रेजी भाषा में संभाषण, आलेखन करने वाली साध्वीप्रमुखा पद पर नियुक्त, प्रथम बार।

(६) विशेष यात्रा करके साध्वीप्रमुखा बनने वाली साध्वी, प्रथम बार।

(७) जैन विश्व भारती संस्थान से एम०ए० करके साध्वीप्रमुखा बनने वाली साध्वी प्रथम बार।

आपका व्यक्तित्व-कर्तृत्व असीम है। बहुत से ऐसे अनछूए प्रसंग हैं जो आपकी महानता को उजागर करते हैं। उन सबको अपने मस्तिष्क में संरक्षित, सुरक्षित रखती हुई मैं आपके प्रथम मनोनयन दिवस पर अभिनंदन कर गौरव का अनुभव कर रही हूँ। आप साध्वियों की चित्त समाधि में व संघीय व्यवस्थाओं में अपने समय व शक्ति का नियोजन कर पूज्यप्रवर के श्रम को हल्का कर रहे हैं। यही अंतःतोष का विषय है। आपकी गुरु निष्ठा, गुरु भक्ति व संघनिष्ठा के संस्कार हमारे भीतर भी उद्भुत हों। आपके नेतृत्व में साध्वी समाज अनवरत विकास की राह पर गतिशील बने। चाहत के अनुसार विकास की हर 'खिड़क' (छोटा दरवाजा) से आलोक प्राप्त कर सके, यही हमारी आपके प्रति विनीत भाव से करणीय कर्तव्य है। आपका ईशारा प्राप्त कर पथ पर अग्रसर होते रहें।

भगवान महावीर जन्म कल्याणक

पार्श्वनाथ सिटी।

शासनश्री साध्वी सत्यवती जी के सान्निध्य में पार्श्वनाथ सिटी में गुलाब डागा के निवास स्थान पर भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण के द्वारा राजुल बांठिया, कीर्ति दुगड़, मनीषा सिंघी ने किया।

छोटा बालक भावित रांका ने कविता द्वारा अपनी प्रस्तुति दी। साध्वी रोशनीप्रभा जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि भगवान महावीर अपने जीवन में करुणाशील थे। उनका चित्त स्वच्छ दर्पण व जीवन खुली किताब के समान था। पर्श्वनाथ सिटी की महिलाओं द्वारा रोचक प्रस्तुति दी गई। सारिका सिपानी, विनीता सेठिया, लता बांठिया, प्रियंका बोटिया, अंजलि सिंघी व शैली बोथरा ने अपने भावों की प्रस्तुति दी।

साध्वी शशिप्रभा जी ने बताया कि महावीर अहिंसा, अपरिग्रह व अनेकांत की भाषा में बोलते थे। उनका चिंतन आध्यात्मिक था। पार्श्वनाथ सिटी के बच्चों ने अपने भावों को एक लघु नाटिका के माध्यम से प्रस्तुत किया। साध्वी पुण्यदर्शना जी ने कहा कि भगवान महावीर सामाजिक कुरीतियों व हिंसा के तम को चीरने वाले भास्कर थे। तेयुप, सरदारपुरा की भी सहभागिता रही।

शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी ने कहा कि हमारा जीवन महावीर जैसा बने, ऐसी शक्ति जगाएँ। हमारी साधना उत्कृष्ट बने, हम भगवान महावीर के सच्चे अनुयायी बने रहें। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुरेश जीरावला ने अपने विचार व्यक्त किए। तेयुप के अध्यक्ष महावीर चौधरी ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन सुनील डागा ने किया। शाम को धम्म जागरण का कार्यक्रम हुआ। शासनश्री साध्वी सत्यवती जी के मंगलपाठ से कार्यक्रम संपन्न हुआ।

अहिंसा और शांति सेमिनार का आयोजन

उत्तर-मध्य, कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में महावीर जन्म कल्याणक के उपलक्ष्य में एक दिन अहिंसा और शांति सेमिनार का आयोजन किया गया। जिसमें बंगाल सरकार की उद्योग मंत्री शशि पांजा, राज्यपाल श्यामल कुमार सेन विशेष रूप से उपस्थित थे।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि भारतीय संस्कृति अध्यात्म प्रधान संस्कृति है। अध्यात्म की आत्मा अहिंसा है। अहिंसा शाश्वत है। अहिंसा सांप्रदायिकता नहीं सार्वभौम व्यापकता है। अहिंसा शांति का सर्वोत्तम साधन है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि व्यक्ति रोटी, अशिक्षा, तनाव, वैर-प्रतिशोध सत्ता का उन्माद, अर्थ की प्रतिस्पर्धा में आकर हिंसा करता है, हिंसा से शांति नहीं मिलती है। अहिंसा से शांति मिलती है, अहिंसा की शुरुआत स्वयं से करें, अहिंसा के विकास के लिए संयम, समता, सादगी, संतोष की साधना करें।

मुनि कुणाल कुमार जी ने अहिंसा गीत का संगान किया। बंगाल सरकार के उद्योग मंत्री शशि पांजा ने इस अवसर पर कहा कि भगवान महावीर ने जो कहा है उसे सिखना व अपनाना चाहिए। पूर्व राज्यपाल श्यामल कुमार ने कहा कि जैन धर्म में त्याग बहुत हैं। ऐसे सम्मेलनों से शिक्षा लेनी चाहिए। प्रो० रवींद्रनाथ भट्टाचार्य डीन कोलकाता यूनिवर्सिटी, प्रो० तनवीर अरसद एसिस्टेंट, प्रो० प्रेसिडेंसी यूनिवर्सिटी ने अपने विचार रखे।

कार्यक्रम का शुभारंभ तेममं द्वारा गीत से हुआ। स्वागत भाषण तेरापंथ सभा के उपाध्यक्ष रूपचंद श्रीमाल, आभार व अतिथियों का परिचय राजेंद्र संचेती व संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। इस अवसर पर समाज के प्रतिष्ठित व गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

साध्वीप्रमुखाश्री मनोनयन दिवस पर विशेष

गुरु की अमृत दृष्टि प्राप्त नवम साध्वीप्रमुखा

❐ समणी सत्यप्रज्ञा ❐

दुनिया को अपने अनुरूप बनाने में कुछ लोग अहर्निश लगे रहते हैं। दुनिया में सारा विकास इसी तरह के लोगों पर निर्भर है। अहिंसा, संयम, समता, तपस्या और वीतरागता के पुरोधा पुरुष आचार्यश्री महाश्रमण जी हैं। उनका जीवन इसी तरह के सद्गुणों से सृष्टि को अनुप्राणित करने के लिए है। संयम की सुवास को व्यापक बनाने के लिए अनेक ऊर्जामय आस्थान भी उन्होंने प्रतिष्ठित किए हैं। इनमें एक महत्त्वपूर्ण आस्थान का नाम है—नवम साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा।

जैन धर्म की प्रगतिशीलता की एक पहचान तेरापंथ धर्मसंघ है। इसमें साध्वीप्रमुखा के रूप में कार्य करते हुए साध्वी विश्रुतविभा जी को एक वर्ष हो रहा है। यह जो इनका 'आज' है, न जाने कितने 'कल' इसकी बुनियाद में हैं। इनके परिचय की पृष्ठभूमि में गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी द्वारा कर्तव्यषट् त्रिशिका में लिखित एक श्लोक सामने आ जाता है—

गुरु दृष्टि मनु दृष्टि रिंगितं चेंगितं तथा।
विचारो ऽनुविचारं स्यात्।।

गुरु कभी साधारण नहीं होता। सृष्टि का कोई कर्ता है या नहीं? दर्शन जगत में यह पक्ष-प्रतिपक्ष का विषय हो सकता है, लेकिन शिष्य के भाग्य निर्माण में गुरु का योग सभी जगह और सभी के द्वारा लगभग एक मत से स्वीकार किया जा सकता है। हाँ, कब, किसके सामने कौन गुरु बनकर आया—इसमें विविधता संभव है। साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी के परिचय का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष गुरु के प्रति सर्वात्मना समर्पण का है। जिन शासन के तेरापंथ धर्मसंघ की अंतरंग सदस्या बनने के साथ ही उनकी यह समर्पण यात्रा गतिशील है।

साध्वीप्रुखाश्री विश्रुतविभा जी का मानना है, जीवन एक नाव की तरह है, इसकी सही जगह पानी पर ही है। लेकिन पानी को नाव में घुसने नहीं दिया जा सकता, उससे तो नाव डूब जाती है। इसी तरह तेरापंथ धर्मसंघ में विकास की सारी यात्रा गुरु दृष्टि के अनुरूप आराधना साधना करने में है। गुरु के इंगित आकार के अनुसार वर्तन करने में हैं। गुरु के विचारों से भावित अपने आचार में रंग भरने में हैं। संक्षेप में कहें तो गुरु के साथ तादात्म्य सध जाने के बाद 'अपना मन' जैसा कुछ रह ही नहीं जाता। गुरु की इच्छा ही शिष्य का संपूर्ण संसार है।

इस विचार यात्रा के आलोक में यदि उनकी जीवन यात्रा पर दृष्टिपात करें तो लगता है—ये उनके शब्द या मान्यता ही नहीं जीवन भी है।

गुरुदेव श्री तुलसी ने समण श्रेणी का एक सपना देखा। उसे आकार देने, उसमें रंग भरने सबसे पहले जो साहसी व समर्पित बारह कदम आगे बढ़े, उनमें दो कदम मुमुक्षु सविता के थे। समण श्रेणी में दीक्षा के साथ ही गुरुदेव श्री तुलसी ने उन्हें समणी स्मितप्रज्ञा का अभिधान दिया। प्रथम समणी नियोजिका, पारमार्थिक शिक्षण संस्था की व्यवस्था में प्रथम समणी निर्देशिका, साध्वी वर्ग में प्रथम मुख्य नियोजिका आदि के दायित्वशील पदों ने आपकी साधना को 'संगच्छध्वम्' साथ-साथ चलने का प्रारूप प्रदान किया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ की अध्यात्म-रश्मियों से भावित होकर आपने आत्मनिष्ठा व गुरुनिष्ठा में अद्वैत सा स्थापित कर लिया। विविध परिस्थितियों में भी इस अद्वैत की राह पर चलने के आपके सामर्थ्य ने आपको विशेष विभा प्रदान की।

कुछ नाम, काम, गुण, समान आदि चुंबक की तरह होते हैं। आचार्यश्री महाश्रमण इसी तरह के चुंबकीय व्यक्तित्व के धनी हैं। उनके आभावलय में अभिभूत हो अंतर के तार गुनगुनाने लगते हैं—'मोहे लागी लगन---।' इसी तरह की लगन से अनुप्राणित है साध्वी विश्रुतविभाजी का अंतरंग व्यक्तित्व। तेरापंथ धर्मसंघ के साध्वी-समणी वर्ग के व्यवस्था पक्ष से आप गुरुदेव श्री तुलसी के युग से आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार जुड़े रहे हैं।

शासनमाता साध्वीप्रमुख कनकप्रभा जी का सुखद साया साध्वी-समाज को सुदीर्घ काल तक उपलब्ध रहा। उनके व्यवस्था कौशल व मातृ-वत्सल हृदय ने साध्वी समाज को पर्याप्त संपोष प्रदान किया। मार्च, २०२२ में समय धर्म ने उनकी प्रत्यक्ष सन्निधि को, उनके स्थान को रिक्त कर दिया। साध्वी विश्रुतविभा जी पहले मुख्य नियोजिका के रूप में आचार्यवर के इंगित अनुसार साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा को साध्वी समाज की व्यवस्था को सुगम बनाने में योग देती थी, हाथ बँटाती थी। अब आचार्यवर से सीधा संपर्क उनका इस संदर्भ में हो गया। सरदारशहर में आचार्यप्रवर ने साध्वीप्रमुखा के रिक्त स्थान की पूर्ति की। प्रायः एक सहजता के साथ जैसे एक साँस से जुड़कर दूसरा साँस चलता है, गहन गांभीर्य और मृदुता के सुमनों से सज्जित आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा जी को नवम साध्वीप्रमुखा के महनीय पद पर प्रतिष्ठित कर दिया। तेरापंथ धर्मसंघ में साध्वी समाज के सर्वोच्च पद पर आसीन साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी को देखते हुए मेरे स्मृति कोश से भी कुछ प्रसंग उभरकर दस्तक सी देने लगे। पहला प्रसंग है लगभग १९८६ का, जिसमें मुझे बोध हुआ—व्यवस्थापक गुरुदृष्टि की सृष्टि को आकार देने में माध्यम बनते हैं। गुरु व्यवस्थापक को सघन-सघनता-सघनतम छाया प्रदान करते हैं। आचार्य श्री तुलसी उस समय लाडनूं में विराज रहे थे। पारमार्थिक शिक्षण संस्था का व्यवस्था पक्ष लगभग प्रभारी संयोजक कल्याणमलजी बरड़िया, राणमलजी जीरावला, मेरूलालजी बरड़िया आदि के माध्यम से व मुमुक्षु बहनों में 'बड़ी बहिन' से चल रहा था। आचार्यप्रवर ने उस व्यवस्था में कुछ मोड़ देते हुए मुमुक्षु बहनों की अंतरंग व्यवस्था में समणी जी को जोड़ा। संस्था की बहनों में संसार निर्माण व सारणा-वारणा में यह नया प्रयोग था। प्रथम व्यवस्थापिका के रूप में समणी स्मितप्रज्ञा जी को नियुक्त किया गया। पूरे वर्ग के साथ इनका प्रवास पारमार्थिक शिक्षण संस्था के प्रांगण में ही ऊपर के कक्ष में होता। समय-समय पर विविध संगोष्ठी, कार्यक्रम आदि आयोजनों के साथ दैनिक गतिविधियाँ—प्रार्थना आदि भी इनके सान्निध्य में होते। इस रूप में संस्था में रहकर मुमुक्षु बहनों के संचालन का यह प्रथम प्रसंग था। नई व्यवस्था से नया माहौल संस्था में बना हुआ था। कुछ ही समय बाद, संभवतः दो-चार महीने बाद ही एक अनपेक्षित वातावरण संस्था में बना। संभव है, किसी बहन को नई व्यवस्था के प्रति कुछ अन्यथा भाव आया हो या हास्यवश अनपेक्षित बात की हो, व्यवस्थापिका समणीजी के संदर्भ में खाने-पीने आदि के विषय में उसने बात की और पर्याप्त फैलाई भी। बात व्यवस्थापक समणीजी के कानों में भी पहुँची और आचार्यवर तक भी। आचार्यप्रवर को समणीजी के प्रति दृढ़ विश्वास था कि वे ऐसा नहीं कर सकते। बात जो हो रही है, वह सही नहीं है। आचार्यवर ने तत्काल समणी जी के साथ सभी मुमुक्षु बहनों की मीटिंग बुलाई। भिक्षु विहार के पूर्व भाग के कक्ष में गुरुदेव विराजे हुए थे। कड़ी दृष्टि के साथ बात का उल्लेख करते हुए आचार्यप्रवर ने पूछा—यह बात किस-किस मुमुक्षु बहन को पता है, इसको सुना है या अपने मुँह से किसी को बताया है। प्रायः काफी बहनें खड़ी हो गई। क्योंकि किसी ने सुनना चाहा हो या सुनाया गया हो---शायद ही कोई बहन बची हो। मूल बात कहाँ से उठी या किसने उठाई—इसकी खोज तो बाद में सामने आई। गलत सुनने या जानकारी होने मात्र से भी सब बहन प्रायश्चित्त करने योग्य हैं, इस संस्कार को पुष्ट करते हुए आचार्यवर ने सभी को एक-एक एकासन प्रायश्चित्त स्वरूप प्रदान किया। और भविष्य की प्रेरणा व सजगता व संदेश देते हुए कहा—'उतरती गणी-गण तणी, कोई मती करो, मत सुणो सैण हो। भीखणजी स्वामी। भारी मर्यादा बांधी संघ में'।

तेरापंथ धर्मसंध की जन्मघुट्टी के साथ मिले ये संस्कार हैं। व्यवस्थापकों के प्रति सम्मान के भाव संघ की चिर-जीविता के हेतु हैं। एक आचार्य का नेतृत्व सुव्यवस्था व सुगमता के लिए 'सहसुबाहु' वाला भी होता है। व्यवस्थापक आचार्य के ही प्रतिनिधि होते हैं। सूर्य साक्षात हर कमल कोश तक पहुँच पाए या नहीं, उसकी रश्मियाँ ही कमल के विकास के लिए पर्याप्त हैं। हर व्यवस्थापक उसी रश्मि के रूप में है। समणी स्मितप्रज्ञा को मिली गुरुदेव श्री तुलसी की वह छत्रछाँव आज भी आँखों के सामने जीवंत है।

सन् १९९१ में समणी दीक्षा में प्रवेश के साथ ही मुझे समणी स्मितप्रज्ञा के साथ ११ माह रहने का सौभाग्य मिला। चूँकि उसके बाद श्रेणी आरोहण के साथ वे साध्वी विश्रुतविभा की अभिधा प्राप्त कर लिए। साधना-शिक्षा का अनुकूल माहौल व प्रेरणा उस प्रारंभिक दौर में मुझे सुलभ हुआ। मेरी दीक्षा के लगभग दो वर्ष बाद किसी प्रसंग में मैं आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के पास बात कर रही थी। ध्यान योगी आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने मार्गदर्शन करने के साथ-साथ ही पूछा—'पहले तो तुम समणी स्मितप्रज्ञा के साथ थी, अलग ही साधना का माहौल था, अब कैसा, क्या चल रहा है?' आगे की वार्ता की यहाँ प्रसंग न भी हो। प्रासंगिक यह है कि जिनकी साधना व जिनकी साधना से भावित आस-पास के वातावरण के प्रति पूज्यप्रवर इस तरह विश्वस्त हों, उनकी साधना व सौभाग्य की सराहना सहज हो जाती है। इस तरह की अमिय गुरु दृष्टि जिनसे जुड़ी हो, उसकी तुलना में क्या कुछ अन्य ठहर सकता है। कदापि नहीं। उस परम पावन गुरु दृष्टि की छत्रछाँव में साध्वी विश्रुतविभा जी की बाल सुलभ निश्छलता तो देखी ही, निगर्विता भी देखी, सहज साधना, सौम्यता व तपस्या भी देखी।

हर दिन नया सूर्य सामने आता है, नया प्रकाश, नया तेज लिए आचार्यश्री महाश्रमण तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम दैदीप्यमान भास्कर हैं। आपश्री के सान्निध्य में साध्वीप्रमुखा के रूप में उन्हें देखकर वही छत्रछाँव नित्य नवीनता के साथ साकार हो रही है।

गुरु-निष्ठा व आत्म-विश्वास के पैरों से सतत गतिशील उनकी जीवन यात्रा विविध सृजनात्मक पहलू लिए हुए है। आगम-स्वाध्याय में गहन-अवगाहन के साथ संयम-संपोषण पहलू उजागर हो रहे हैं। साहित्य, शोध, भाषा आदि के शैक्षणिक पहलू, तप, जप, ध्यान आदि के साधनाशील पहलू, संगीत, शिल्प आदि के कलात्मक पहलू उनके माध्यम से साध्वी समाज में पल्लवित-पुष्पित हो रहे हैं।

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण का सान्निध्य तेरापंथ धर्मसंघ को सतत कल्पतरु की सुखद छाँव प्रदायक है। इस कल्पतरु के माध्यम से साध्वीप्रमुखा के रूप में एक मनोहार सुमन साध्वी समाज को विशेष रूप से उपलब्ध हुआ है। संपूर्ण धर्मसंघ व मानव जाति को इस सुमन की सौरभ से अनुप्राणित होने का अवसर मिल सके। यही मंगलकामना है। एक वर्ष की 'साध्वी प्रमुखा' के रूप में हुई यह यात्रा आगामी वर्षों में संघ श्री वृद्धि, ही वृद्धि और धी वृद्धि का माध्यम बनती रहे। गुरुदेव श्री तुलसी के शब्द हैं—'शुभ भविष्य है सामने'। इन शब्दों में निहित अंतरात्मा नित्य नवीन आकार में संघ-चमन को सुरभित करती रहे—यही अभ्यर्थना है।

तेयुप द्वारा सेवा कार्य

राजाजीनगर।

तेयुप, राजाजीनगर द्वारा सेवा के अंतर्गत मानव सेवा Need Base India (Junior Girls Home) बैंगलोर में संपादित हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से किया गया। ट्रस्ट में ६५ बच्चियों को नाश्ता कराया गया।

बच्चियों द्वारा अपनी भावी जीवन की महत्त्वाकांक्षाओं को परिषद परिवार के समक्ष व्यक्त की। ट्रस्ट के प्रभारी ने इस कार्यक्रम की सराहना करते हुए परिषद परिवार के प्रति हार्दिक धन्यवाद व्यक्त किया।

इस अवसर पर सेवा कार्य हेतु तेयुप, राजाजीनगर मंत्री कमलेश चोरड़िया, रनीत कोठारी, भावेश मूथा, राजेश देरासरिया एवं अरिहंत गन्ना की उपस्थिति रही। सेवा कार्य के संयोजक मुकेश भंडारी एवं विक्रम बोहरा का श्रम नियोजित हुआ।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
1 - 7 मई, 2023

✦ *इंद्रियाँ अपने आप में अशुभ नहीं होतीं। किंतु जब उनके साथ मोह का योग हो जाता है तो ये कर्मबंधन का कारण बन जाती हैं।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

गुलाबबाग में ४ वर्षीतप के पारणे का आयोजन

व्यक्ति चिंतन करे कि व्यवहारिक जीवन में धर्म कैसे लाए

गुलाबबाग।

मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी के सान्निध्य में वर्षीतप करने वाले चार तपस्वी का अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित हुआ। मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी ने कहा कि आज का दिन देने का एवं लेने का है। भगवान ऋषभ ने लिया एवं श्रेयांस कुमार ने दिया। श्रावक भी अपनी कमी का त्याग करें एवं कुछ ग्रहण करके जाएँ। तपस्या करने का मूल कारण होता है–आत्मशुद्धि। तप वही कर सकता है जिसकी आहार की आसक्ति छूट जाती है। संकल्प के सामने तपस्या अपने आप प्रारंभ हो जाता है। त्याग की भावना, अध्यात्म की भावना आगे बढ़ती है तभी व्यक्ति तप कर सकता है। व्यक्ति चिंतन करे कि व्यवहारिक जीवन में धर्म को कैसे लाएँ। धर्म के पथ पर कैसे आगे बढ़ें। मनुष्य में मनुष्यत्व के संस्कार जागृत रहें। संयम के भाव बढ़ते रहें। प्रभु ऋषभ के जीवन से त्याग और संयम की प्रेरणा ग्रहण करें। तपस्या करना अपने आपमें बहुत कठिन है। खाना सरल होता है क्योंकि भोग में आकर्षण होता है। त्याग में संयम करना होता है। आज के दिन रसास्वादन तो बहुत सारे लोग करते हैं, लेकिन साथ में यह संकल्प भी करें कि मैं अपनी वाणी में, अपने व्यवहार में इक्षुरस जैसी ही मिठास रखूँगा। कम से कम एक दिन तो वाणी में कड़वाहट न लाएँ।

मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि अक्षय तृतीया का दिन सुपात्र दान देने का शुभ अवसर है। संयमी को दान देने से कितना महान पुण्य का बंध होता है। तीर्थंकर की साधना उत्कृष्ट होती हैं उनको आहार का दान देना कितना महान कार्य होता है। भव्य आत्मा को ही यह पुण्य अवसर मिलता है। श्रावक को बहुत बड़ा अवसर प्रभु ऋषभ ने दिया। दान, शील, तप, भाव जो मोक्ष के हेतु हैं उनमें सबसे पहले दान आता है। तपस्या के क्षेत्र में श्रावकों को आगे बढ़ना चाहिए। संयम, मौन त्याग-तपस्या की साधना करनी चाहिए।

मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी स्वयं तपस्वी साधक संत हैं। साधना उनकी दिनचर्या का हिस्सा है। तपस्या की जितनी अनुमोदना की जाए वह कम है। चारों तपस्वी ने वर्षीतप के साथ विभिन्न प्रकार की तपस्या की है। चारों तपस्वी धन्य हैं। सभी व्यक्ति अपने प्रति मंगलकामना करें कि मुझे भी अपने जीवन में तप करना है। सभी श्रावकों को झूठा नहीं छोड़ने का संकल्प करना चाहिए, जिससे जीव हिंसा से भी बचा जा सकता है। व्यक्ति आहार संयम के साथ-साथ इंद्रिय संयम की साधना करता रहे।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि प्रभु ऋषभ को बारह महीने और चालीस दिन की तपस्या का पारणा उन्हीं के प्रपौत्र श्रेयांस कुमार ने इक्षुरस से करवाया था। उन्होंने जीवों को कष्ट देने के लिए नहीं किंतु व्यवस्था के लिए पशुओं के मुँह पर छिंकी बंधवाई थी। उससे भी इतने अंतराय कर्म बंध गए तब हमें भी सोचना चाहिए कि हम कितनी अंतराय देते रहते हैं तो हमारा क्या होगा? त्याग, तपस्या में, दीक्षा में, धर्म साधना में कभी अंतराय नहीं देनी चाहिए।

मुनि बिमलेश कुमार जी ने कहा कि अक्षय तृतीया यानी यह तृतीया अक्षय हो गई। कहना बहुत सरल होता है, लेकिन करना बहुत कठिन होता है। जिसका मनोबल मजबूत होता है वह करके दिखाता है। इतिहास बनाने के लिए व्यक्ति को तपना पड़ता है। बिना कुछ किए कुछ पाया नहीं जा सकता। भगवान ऋषभ का जीवन अपने आपमें प्रेरक था। हजारों वर्ष व्यतीत होने पर भी आज भी हजारों-हजारों साधक वर्षीतप की आराधना करते हैं। तप का जीवन में बहुत महत्त्व रहा है। तप की साधना से तन-मन एवं जीवन पावन होता है।

मुनि सुबोध कुमार जी ने कहा कि अनादिकाल से यह पर्व मनाया जा रहा है। भारतीय संस्कृति पर्व प्रदान रही है। अक्षय तृतीया लौकिक एवं लोकोत्तर दोनों से जुड़ा हुआ है। धर्म एवं कर्म का समन्वय है। सिर्फ कर्म का ही नहीं धर्म का जीवन भी जीना है। अपनी आत्मा को निर्मल एवं पवित्र बनाना है इसके लिए तप का जीवन जीना है। हमारी साधना आत्मशुद्धि के लिए होनी चाहिए।

कार्यक्रम का शुभारंभ पूजा संचेती के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण सभा अध्यक्ष सुशील संचेती ने दिया। तेयुप, गुलाबबाग अध्यक्ष मोहित संचेती, महिला मंडल, ज्ञानशाला परिवार, कन्या मंडल, अभातेयुप अध्यक्ष पंकज डागा, महासभा उपाध्यक्ष नेमीचंद बैद, नेपाल-बिहार सभा अध्यक्ष भैरुदान भूरा, पूर्णिया क्षेत्र के विधायक विजय खेमका, वर्षीतप परिवार से विजय चोपड़ा, नीलू हागा, बरड़िया बहन-बेटी, प्रिया सेठिया-नीतू डागा ने विचारों की अभिव्यक्ति दी।

तेरापंथ सभा, गुलाबबाग द्वारा वर्षीतप करने वाले सुशील रामपुरिया, संगीता सेठिया, सरला बरड़िया, इंद्र चोपड़ा का अभिनंदन पत्र, साहित्य के द्वारा सम्मान किया गया। आभार ज्ञापन सभा मंत्री सुनील भंसाली ने किया। सम्मान संयोजन सभा उपाध्यक्ष मनोज पुगलिया ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि बिमलेश कुमार जी ने किया।

साधना का विरल स्रोत है तपस्या

लाडनूं।

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में अक्षय तृतीया का पर्व जैन विश्व भारती सेवा केंद्र के व्यवस्थापक मुनि रणजीत कुमार जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया।

ऋषभ द्वार भवन में आयोजित समारोह में मुनि रणजीत कुमार जी ने कहा कि तपस्या साधना का विरल स्रोत है उन्होंने कहा कि महापुरुष जिस पर चल पड़ते हैं, वहीं पर सबके लिए प्रशस्त हो जाता है। आदि तीर्थंकर भगवान ऋषभ धन, वैभव को ठोकर मारकर तपस्या और साधना के पथ पर आगे बढ़े।

मुनि विनोद कुमार जी ने कहा कि वर्षीतप की साधना से व्यक्ति का आत्मबल मजबूत बनता है। मुनि कौशल कुमार जी ने कहा कि तीर्थंकर भगवान ऋषभ की तपस्या की परिसंपन्नता का दिन दुनिया-भर में अक्षय तृतीया के रूप में मनाया जाता है। तेरापंथी सभा के पूर्व मंत्री राजेंद्र खटेड़, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष शांतिलाल बैद, तेममं मंत्री नीता नाहर, राज कोचर, रेणु कोचर, चंद्रकांता दुगड़ आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। प्रारंभ में तेममं की सदस्याओं ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संयोजन आलोक खटेड़ ने किया।

इससे पूर्व वृद्ध साध्वी सेवा केंद्र में वर्षीतप तपस्विनी साध्वी शीलवती जी ने शासन गौरव साध्वी कल्पलता जी के सान्निध्य में आयोजित समारोह में अपने तप का पारणा कर तप को विराम दिया। इस अवसर पर साध्वी कल्पलता जी ने तप की महत्ता को रेखांकित किया। इस अवसर पर साध्वी लक्ष्यप्रभा जी एवं सहवर्ती साध्वियों ने अपनी गीतिका का संगान किया।

इस अवसर पर साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी द्वारा प्रेषित शुभकामना संदेश का वाचन आलोक खटेड़ ने किया। समारोह में सुधीर बैद आदि ने अपने विचार व्यक्त किए।

अक्षय तृतीया के कार्यक्रम का आयोजन

शाहदरा।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में अक्षय तृतीया का कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुनिश्री ने कहा कि आज स्थान-स्थान पर समस्त जैन भगवान ऋषभ के पारणे का कार्यक्रम मना रहे हैं। भगवान ऋषभ का जन्म तृतियारे के अंत में पिता नामि, माता मरुदेव के घर में हुआ। आप इस अवसर्पिणी काल के प्रथम राजा, प्रथम मुनि एवं प्रथम तीर्थंकर हुए। भगवान ने तेरह महीने, दस दिन तक भूख-प्यास को समतापूर्वक सहन किया और आज के दिन ही अपने प्रपोत्र श्रेयांस कुमार के हाथों से इक्षुरस से पारणा किया। इसलिए वैसाख शुक्ला तीज का दिन अक्षय तृतीया नाम से अमर हो गया। उसी का अनुसरण करके आज सैकड़ों-हजारों भाई-बहन एक दिन छोड़कर एक दिन अथवा भगवान के दीक्षा दिवस के दिन चैत्रवदि अष्टमी से तप प्रारंभ कर वैसाख शुक्ला तृतीया को अपने तप का पारणा करते हैं। तपस्या का लक्ष्य कर्म निर्जरा होना चाहिए जिससे स्वास्थ्य आदि क्रम भी अपने आप स्वस्थ हो जाते हैं।

जसकरण पारख, पारसमल बोथरा, मेमबाई जैन ने तपस्या का पारणा किया। कुछ भाई-बहनों ने इनके साथ अग्रिम वर्ष के लिए प्रत्याख्यान किए। मुनि कमल कुमार जी का ४४वाँ वर्ष संपन्न हुआ। आगे भी निरंतर गतिमान है। कार्यक्रम में मुनि अमन कुमार जी, मुनि नमि कुमार जी, संजय खटेड़, पन्नालाल बैद, कमल गांधी, अशोक बैद, बाबूलाल दुगड़, तेजकरण सुराणा, दीपक कुचेरिया, मुकेश जैन, आनंद बुच्चा, मंजु सोनी, मंजु बांठिया आदि ने अपने-अपने विचार प्रकट किए। महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण किया। कार्यक्रम का समापन संघगान के पश्चात मंगलपाठ से हुआ।

अक्षय तृतीया शौर्य, श्रेयस और समरस का प्रतीक

बायतु।

साध्वी जिनबाला जी के सान्निध्य में अक्षय तृतीया का आयोजन तेरापंथ भवन, बायतु में किया गया। महिला मंडल सहमंत्री जसोदा छाजेड़ ने भगवान ऋषभ को समर्पित गीतिका के माध्यम से कार्यक्रम का मंगलाचरण किया।

साध्वी जिनबाला जी ने कहा कि अक्षय तृतीया पर्व जैन धर्म में जिस रूप में मनाया जाता है उसके तीन प्रतीक चिह्न हैं–ऋषभ, श्रेयांस और इक्षुरस। ऋषभ शौर्य के प्रतीक हैं, श्रेयांस श्रेयस के प्रतीक हैं और इक्षुरस समरस, समता का प्रतीक है। आज के इस पर्व पर हमें शक्ति, शौर्य, श्रेयस व समरस में रमण करने की प्रेरणा मिलती है। यदि हम अपने जीवन में शक्ति, श्रेयांस, समरस को अपनाने की कोशिश करेंगे तो इस पर्व को मनाने की सार्थकता सिद्ध हो सकती है।

साध्वी करुणाप्रभा जी ने कहा कि भगवान ऋषभ को केवल जैन समाज ही नहीं अपितु वैष्णव व मुस्लिम समाज के लोग भी मानते हैं। भगवान ऋषभ से संबंधित इतिहास की जानकारी देते हुए आपने अक्षय तृतीया के पर्व के महत्त्व की जानकारी दी।

साध्वी भव्यप्रभाजी ने भगवान ऋषभ को एक महासंकल्पी बताते हुए किस प्रकार उन्होंने कर्मयुग व धर्मयुग का प्रवर्तमन किया उसके बारे में बताया। तेमम की महिलाओं ने भगवान ऋषभ को समर्पित सामूहिक गीत की प्रस्तुति दी। कन्या मंडल व ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने संयुक्त रूप से अक्षय तृतीया के इतिहास को लघु नाटिका के माध्यम से प्रस्तुति देकर जनता को मुग्ध कर दिया।

सुखदान चरण व कन्या मंडल संयोजिका कोमल भंसाली ने गीत व भाषण के माध्यम से आदिनाथ प्रभु की अभ्यर्थना की।

कार्यक्रम में जैन समाज के साथ-साथ जैनेत्तर समाज के लोगों की उपस्थिति रही। मंच संचालन साध्वी प्राचीप्रभा जी ने किया।

भक्तामर - एक कल्पवृक्ष अनुष्ठान

नाथद्वारा।

तेरापंथ भवन में साध्वी डॉ० परमयशा जी के सान्निध्य में 'भक्तामर - एक कल्पवृक्ष आध्यात्मिक अनुष्ठान' के कार्यक्रम का समायोजन हुआ।

साध्वी डॉ० परमयशा जी ने कहा कि जैन परंपरा में कई प्राणवान यंत्र, मंत्र, जाप है। जिससे विघ्न-बाधाओं का निवारण होता है। अशुभ कर्म दूर होते हैं, शुभ कर्मों का अभ्युदय होता है। भक्तामर एक महाप्रभावक स्तोत्र है। इसकी महिमा अपरंपार है। पग-पग पर होता चमत्कार है। इसके रचनाकार हैं आचार्यश्री मानतुंग। जो जैन धर्म के प्रभावक आचार्य हुए हैं। जिन्हें राज्य की ओर से किसी वजह से ४८ तालों की जेल में बंद कर दिया गया। वे आशु कवि थे। धुरंधर पंडित थे। उन्होंने कारागृह में आदिनाथ भगवान की स्तुति की। भक्तामर के श्लोकों की रचना की। स्तुति में इतने तल्लीन हो गए कि कारागृह के ४८ ताले टूट पड़े। सब जन आचार्यप्रवर के चरणों में नतमस्तक हो गए।

साध्वीवृंद द्वारा गीत का संगान किया गया तथा भक्तामर का अनुष्ठान रिद्धि, मंत्र आदि के द्वारा करवाया गया।

प्रो. मुनि महेंद्र कुमारजी के प्रति आध्यात्मिक उद्‌गार

अर्हम्

● मुनि प्रशांत कुमार ●

तेरापंथ धर्मसंघ मानव रत्नों की खान है। न जाने कितने ही रत्न इस खदान में से निकले हैं और कितने ही इसके गर्भ में छिपे रहते हैं।

ऐसे ही एक मूल्यवान रत्न थे मुनिश्री महेंद्र कुमारजी। महेंद्र मुनि एक प्रतिभाशाली संत थे। उनकी प्रतिभा भी बहुमुखी थी। संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी, गुजराती आदि अनेक भाषाओं पर उनका अधिकार था। जैन दर्शन, सिद्धांत आगम के मर्मज्ञ विद्वान संत थे। विज्ञान उनकी रुचि का प्रिय विषय था। प्रेक्षाध्यान के प्रशिक्षक और व्याख्याकार मुनि थे। प्रेक्षाध्यान के सिद्धांत और प्रयोगों को वैज्ञानिक आधार के साथ प्रस्तुत करने में मुनिश्री की विशेष भूमिका रही थी।

परम पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के निर्देशन में लगने वाले प्रेक्षाध्यान शिविरों में मुनिश्री के द्वारा प्रयोग और प्रशिक्षण की विशेष कक्षाएँ आयोजित होती थी। महेंद्र मुनिजी का संसारपक्षीय पूरा परिवार प्रेक्षाध्यान के प्रति समर्पित रहा है। मुनिश्री के संसारपक्षीय पिताश्री जेठाभाई झवेरी स्वयं वैज्ञानिक थे। उन्होंने योगक्षेम वर्ष में साधु-साध्वियों की अध्ययन कक्षाओं में अच्छा प्रशिक्षण दिया था। प्रेक्षाध्यान का वैज्ञानिक विश्लेषण साथ प्रस्तुत करने में उनकी विशेष सेवाएँ रही। उनके पुत्र रश्मिभाई, अरुणभाई आदि ने भी विभिन्न रूपों में धर्मसंघ की सेवा की है। महेंद्र मुनि ने आगम सूत्रों के टिप्पण, भाष्य लेखन और आगमों का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद करने का गुरुतर कार्य किया है।

महेंद्र मुनिजी का विनोदी स्वभाव भी बहुत अच्छा था। संतों के साथ भी प्रायः खूब मनोविनोद करते थे। वे अच्छे पुरुषार्थी संत थे। अनेक रूपों में तेरापंथ धर्मसंघ की श्रीवृद्धि में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। तीनों ही आचार्यों की कृपा उन्हें प्राप्त हुई। ऐसे विशिष्ट प्रतिभाशाली मुनिप्रवर के देवलोकगमन से संघ में एक क्षति हुई है। मुनिश्री अजित कुमार जी स्वामी बहुत वर्षों से मुनिश्री के साथ रहकर उनकी सेवा करते रहे हैं। अजित मुनिजी स्वयं तपस्वी संत हैं। तपस्या करते हुए भी सेवा कार्य में सदा तत्पर रहते हैं। मुनिश्री जम्बू कुमार जी अच्छे संगायक और व्याख्यानी संत हैं। मुनि अभिजीत कुमार जी, मुनि सिद्धकुमार जी, मुनि जागृत कुमार जी सभी संतों ने सेवा के साथ-साथ मुनिश्री से ज्ञानार्जन कर अपनी दक्षता प्राप्त की है। मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी ने जो धर्मसंघ की सेवा की है, वह अद्‌भुत है। उनके कार्यों को संघ सदा स्मरण करेगा। मुनिश्री आध्यात्मिक विकास की मंगलकामना। भावपूर्ण श्रद्धाभिव्यक्ति करता हूँ।

अर्हम्

● मुनि अमृत कुमार ●

प्रेक्षा प्राध्यापक, आगम मनीषी मुनिश्री प्रो० महेंद्र कुमार जी स्वामी का मुंबई में अचानक देहावसान हो गया। वे हमारे धर्मसंघ में बहुश्रुत परिषद् के संयोजक के रूप में प्रतिष्ठित थे। मुझे उनके पास लंबी अवधि तक रहने का सौभग्य प्राप्त हुआ। वे एक अच्छे विद्वान वक्ता, अवधानी के रूप में प्रसिद्ध थे। उन्होंने मुझे आगे आने के बहुत अवसर दिए। आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ के विशेष कृपा पात्र संतों में गिने जाते थे। आचार्यश्री महाश्रमणजी उनका बहुत सम्मान करते थे। उनका अभाव धर्मसंघ की अपूरणीय क्षति है। मैं उनके भावी आध्यात्मिक मंगलकामना करता हूँ।

✦ हर व्यक्ति के मन में कुछ होने की कामना हो। इसके लिए कुछ अपेक्षानुसार कठोर जीवन जीने का अभ्यास करना चाहिए। जीवन में प्रतिस्रोतगामिता रहे।

– आचार्यश्री महाश्रमण

अर्हम्

● डॉ० मुनि मदन कुमार ● मुनि सिद्धार्थ कुमार

धर्मसंघ के यशस्वी और मनस्वी संत श्रद्धेय मुनिश्री महेंद्रकुमार जी स्वामी का मुंबई में प्रयाण हो गया। वे एक विशिष्ट संत थे, बहुश्रुत और आगम विशेषज्ञ थे, प्रबुद्ध और विद्या संपन्न थे तथा श्रम और साधना के पुजारी थे। उनका वियोग धर्मसंघ के लिए एक बड़ी क्षति है। जिसकी आपूर्ति बहुत कठिन है। ऐसे मेधावी और आचार-निष्ठ संत धर्मसंघ की महान संपदा/धरोहर होते हैं। वे अनेक गौरवशाली अलंकरणों से विभूषित थे। प्रेक्षा प्राध्यापक, आगम मनीषी आदि होना विशेष बात है।

मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी ने परमपूज्य आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी और आचार्यश्री महाश्रमणजी से विशेष सम्मान एवं स्नेह प्राप्त किया। उनका कर्तृत्व अद्‌भुत था, वैदुष्य था और अनेक भाषाओं पर जबर्दस्त अधिकार था। वे बहुश्रुत परिषद् के सम्मानित सदस्य और संयोजक थे। वे विरल विशेषताओं के धनी और संघ हितैषी संत थे।

मुझे (मुनि मदन कुमार को) उनके साथ अनेक वर्षों तक रहने का सौभाग्य मिला, संस्कार मिले और ज्ञानार्जन का अपूर्व अवसर मिला। वे मेरे विद्या-गुरु थे। मुझे उनकी सदा कृपा प्राप्त हुई। ऐसे निर्माता-मुनि दुर्लभ होते हैं। श्रद्धेय तपस्वी मुनि अजित कुमार जी स्वामी, अभिजीत कुमार जी, जम्बू कुमार जी, जागृत कुमार जी, सिद्धकुमार जी आदि संतों को उनकी अहर्निश सेवा का सौभाग्य मिला। सचमुच बड़भागी हैं। मुनिश्री के आध्यात्मिक विकास की मंगलकामना।

अर्हम्

● मुनि यशवंत कुमार ●

प्रो० मुनि महेंद्रकुमार जी स्वामी तेरापंथ धर्मसंघ में विशिष्ट व्यक्तित्व के धनी थे। आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा बहुश्रुत परिषद् के संयोजक पद मनोनीत करना उनकी विशिष्टता को उजागर करता है। तीन आचार्यों के वे कृपापात्र रहे हैं। जैन विश्व भारती, जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) के दीर्घकाल तक प्रभारी रहते हुए इनके विकास में योगभूत बने। प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान के विकास में भी आपका महान् योगदान रहा है। आप जैन विद्या और जैन आगमों का ज्ञाता होने के साथ-साथ साहित्य निर्माण, आगम-संपादन में अनवरत लगे रहते थे। भगवती जैन आगम संपादन में आपके श्रम, शक्ति और समय नियोजन को तेरापंथ धर्मसंघ कभी विस्मृत नहीं कर सकता।

प्रो० मुनि महेंद्रकुमार जी स्वामी की अर्हता और कार्यों को देखते हुए समय-समय पर आचार्यों द्वारा सम्मानित भी होते रहे हैं। वे प्रेक्षा प्राध्यापक, आगम मनीषी, बहुश्रुत परिषद् के सम्माननीय सदस्य और बाद में इस परिषद् के संयोजक बनाए गए। ऐसे व्यक्तित्व का चला जाना अपने आपमें धर्मसंघ के लिए महान क्षति है।

मुनि अजित कुमार जी स्वामी तपस्वी होने के साथ-साथ सेवाभावी भी हैं। उनकी सेवा से मुनिश्री निश्चिंत होकर कार्य में लगे रहते थे। मुनि जम्बूकुमार जी स्वामी, मुनि अभिजीत कुमार जी, मुनि जागृत कुमार जी और मुनि सिद्धकुमार जी को भी उनकी सन्निधि में रहकर विकास का और साथ ही सेवा का अवसर प्राप्त हुआ।

वैरागी काल और दीक्षा के बाद समय-समय पर मुनिश्री की सन्निधि का अवसर मुझे भी मिलता रहा है। मुनिश्री विद्वान होने के बावजूद विनोदप्रिय स्वभाव के भी थे। मुनिश्री के साथ जुड़े पल अनेक बार स्मृति पटल पर आते रहते हैं।

मुनिश्री की आत्मा शीघ्र अपने चरम लक्ष्य मुक्तिश्री का वरण करे। मंगलकामना।

अर्हम्

● मुनि रमेश कुमार ●

बहुश्रुत परिषद् के संयोजक, आगम तत्त्ववेत्ता, ज्ञान विज्ञान के विज्ञाता, विज्ञान के अनुसंधाता, श्रद्धेय मुनिश्री महेंद्र कुमार जी स्वामी ने अपनी संपूर्ण प्रतिभा को गुरु चरणों में समर्पित करके जो कार्य किए हैं, धर्मसंघ को जो सेवाएँ दी हैं, उन्हें शताब्दियों तक याद किया जाएगा। आपका समग्र जीवन गुरु चरणों में समर्पित रहा।

आपश्री का जीवन खुली पुस्तक के समान था। एक ओर विद्वत्ता की पराकाष्ठा को छूने वाला आपका व्यक्तित्व दूसरी ओर अहर्निश आगम अनुसंधान से जिन शासन की प्रभावना में सक्रियता।

तेरापंथ धर्मसंघ को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने वाले अंतर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंसों का संचालन द्वारा आचार्यश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ के अहिंसा, शांति के अवदानों को व्यापकता दी। आपके जीवन की अगणित विशेषताओं को मेरे जैसा अल्पज्ञ बताने में असमर्थ है। मन-मस्तिष्क में विचारों का ज्वार है, परंतु वे शब्द नहीं जिनको व्यक्त कर सकूँ।

मेरे जीवन निर्माता मुनिश्री सुमेरमल जी 'सुमन' यथाअवसर आपश्री के आगम विद्या, तत्त्व विद्या, आत्म विद्या में निपुणता की चर्चा कराते रहते। मेरे ऊपर सदैव आपका कृपामय वात्सल्य रहा। मेरे जीवन के वे अमूल्य क्षण हैं। सदैव स्मृति पटल पर अंकित रहेंगे। ऐसे दुर्लभ व्यक्तित्व के प्रति श्रद्धानत प्रणत होकर श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ।

सह दीक्षित, तपस्वी मुनिश्री अजित कुमार जी स्वामी, मुनि जम्बू कुमार जी, मुनि अभिजीत कुमार जी, मुनि सिद्धकुमार जी, मुनि जागृत कुमार जी आदि सभी संतों ने तन-मन सर्वात्मना समर्पित भाव से सेवा की है, सदैव स्तुत्य रहेगी। विशेषकर मुनिश्री अजित कुमार जी स्वामी ने सेवा, स्वाध्याय-ध्यान तपस्या की त्रिवेणी से मुनिप्रवर का हृदय जीता। मुनि अभिजीत कुमार जी ने अपना स्वयं का व साथ वाले सभी संतों के विकास में अहम् भूमिका निभाई है।

अर्हम्

● मुनि निकुंज ●

बहुश्रुत परिषद् के संयोजक, आगम मनीषी प्रो० मुनिश्री महेंद्र कुमार जी स्वामी जैन जगत के एक उज्ज्वल नक्षत्र बनकर रहे। उच्चतम शिक्षा, श्रेष्ठता से उत्तीर्ण कर सत्य को यथार्थ रूप में गहराई से समझकर आचार्यश्री तुलसी के करकमलों द्वारा संयम अंगीकार किया। आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञजी एवं आचार्यश्री महाश्रमण जी ये तीनों ही आचार्यप्रवर की सन्निधि में आपश्री ने अप्रमत्त बोध से चारित्र की पालन की एवं संघ को अपनी विशेष सेवाएँ प्रदान की। प्रेक्षाध्यान के विकास में आपश्री का अथक् परिश्रम रहा। कई भाषाओं के जानकार आपश्री ने जैन-जैनेत्तर लोगों के जीवन में अध्यात्म को उतरवाया। अनेकानेक नेशनल, इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस में आपकी विद्वत्ता सराहनीय रही। आप साइंस एवं स्प्रिच्युअलिटी के संगम स्थल रहे। बचपन से ही मुझे कई बार आपकी सेवा-उपासना का अवसर मिला। संसारपक्षीय पारिवारिकजन या अन्य श्रावक के माध्यम से आपश्री मुझे कई प्रेरणा प्रदान कराते रहे। इस बार की मेरी गुजरात यात्रा में तो यह विशेष रहा। शासनश्री प्रेक्षा प्राध्यापक मुनि किशनलाल जी स्वामी के प्रति आपका प्रमोद भाव सदैव स्मृति में रहेगा। सभी सहवर्ती संतों ने विशेष आत्मीय भाव से मुनिश्री की सेवा की जो उन संतों की सरलता और सेवा साधना के साथ ही धर्मसंघ में सेवा की महानता का सूचक है।

मैं और सहयोगी मुनि श्रद्धेय दिव्य आत्मा के शीघ्रातिशीघ्र मोक्षश्री के वरण की आध्यात्मिक अभिलाषा करते हैं।

प्रो. मुनि महेंद्र कुमारजी के प्रति आध्यात्मिक उद्‌गार

आध्यात्मिक, वैज्ञानिक व्यक्तित्व का महाप्रयाण

● मुनि संजय ● मुनि प्रसन्न ● मुनि धैर्य ● मुनि सिद्धप्रज्ञ

जैन तेरापंथ धर्मसंघ एक महान धर्मसंघ है। इस धर्मसंघ में अनेक विशिष्ट साधु-साध्वी हुए हैं। यशस्वी एवं तेजस्वी साधु-साध्वियों में मुनि महेंद्र कुमार जी भी विलक्षण प्रतिभा के धनी थे।

उस समय की कॉलेज एम०एस०सी०, बी०एस०सी० विज्ञान की शिक्षा प्राप्त कर जैन तेरापंथ में गणाधिपति गुरुदेवश्री तुलसी के हाथों दीक्षित हुए। उसके बाद गुरुकुलवास में रहकर आगम शास्त्रों का गहन अध्ययन किया। अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान होने से अन्य दर्शनों का ज्ञान भी अच्छा हो गया। आध्यात्मिक और आधुनिक, वैज्ञानिक व्यक्तित्व के रूप में उभरकर संघ में तैयार हो गए। आचार्यश्री तुलसी एवं महाप्रज्ञ के संयुक्त प्रयास से उस समय प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, अणुव्रत, अहिंसा प्रशिक्षण आदि अवदानों को व्यापक एवं गति देने में मुनि महेंद्र कुमारजी और संसारपक्षीय पिताजी जेठाभाई जवेरी का बहुत बड़ा सहयोग रहा। पिता पुत्र की जोड़ी ने प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान को वैज्ञानिकता का आधार प्रमाण देकर प्रमाणित करने में बहुत बड़ा सहयोग रहा है। गुरुदेव तुलसी एवं महाप्रज्ञ के बहुत सहयोगी रहे हैं। वर्तमान आचार्यश्री महाश्रमण जी के भी बहुत सहयोगी रहे हैं। हम बंधुत्रय संत इसके साक्षी रहे हैं। जिस समय लाडनूं में गुरुदेव तुलसी ने योगक्षेम वर्ष में सैकड़ों साधु-साध्वियों का प्रशिक्षण शुरू किया उस योजना आयोग के प्रमुख निर्देशक आप ही थे। साथ में महाश्रमण जी भी थे और उस समय पूरा आयोग शासनश्री सोहनलाल जी (डूंगरगढ़) के ग्रुप में आ गया और हम बंधुत्रय संत मिलकर १० संतों से पूरे वर्ष-भर साथ रहने का योग मिला था। इस प्रकार कई बार साथ-साथ रहने का बहुत काम पड़ा था। मुनिश्री की मिलनसारिता, आत्मीयता ने छोटे-बड़े सभी साधु-साध्वियों को बहुत प्रभावित किया है। उनका जीवन विनय, विवेक, विद्या के गुणों का संगम था। तपस्वी मुनि अजित कुमार जी ने बड़े आत्मीय भाव से लंबे समय तक सेवा की है। यह अनुकरणीय है। लगता है पूर्व के गहरे संस्कार हैं। अंतिम समय में मुनि अभिजीत कुमार जी, मुनि जम्बू कुमार जी आदि ने भी अच्छी सेवा की। दिवंगत आत्मा के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना।

अर्हम्

● मुनि जम्बू कुमार ● मुनि धवल कुमार

मुनि अजित कुमार जी स्वामी को निवेदनार्थ।

मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी बहुश्रुत परिषद् के संयोजक थे। हमारे धर्मसंघ में आप प्रथम ग्रेजुएट दीक्षित हुए। वे संघ एवं संघपति के प्रति समर्पित थे। वे धर्मसंघ की विरल विभूति थे। उनकी अध्ययनशीलता, श्रमशीलता दोनों उनके जीवन की विरल विशेषताएँ थीं। अनेक भाषाओं पर उनका आधार था। आगम कार्य काफी वर्षों से कर रहे थे। प्रेक्षाध्यान व जीवन विज्ञान का गहरा अध्ययन था। वे विद्वान एवं साहित्यकार थे। उनकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। तीनों आचार्यों के असीम कृपा प्राप्त थे।

मुनि अजित कुमार जी स्वामी ने बहुत वर्षों तक आत्मीय भाव से सेवा कर उन्हें समाधि पहुँचाई है। सेवा के साथ तपस्वी संत हैं। मुनि जम्बू कुमार जी को सुअवसर प्राप्त हुआ। मुनि अभिजीत कुमार जी अध्ययनशील साधु हैं। मुनि जागृत कुमार जी व मुनि सिद्ध कुमार जी ने भी अच्छा विकास किया है। सहवर्ती सभी संत मुनिश्री की चित्त समाधि में निमित्त बनें। उनकी आत्मा यथाशीघ्र शाश्वत सुखों को प्राप्त हो, मंगलकामना।

अर्हम्

● मुनि प्रतीक कुमार ●

ज्ञात हुआ तेरापंथ धर्मसंघ के बहुश्रुत परिषद् के संयोजक, आगम मनीषी, प्रो० मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी का प्रयाण हो गया।

वे हमारे धर्मसंघ के वरिष्ठ संतप्रवर थे। एक महान् वैदुष्यपूर्ण संतप्रवर थे। उनकी वैदुष्यता उनके द्वारा आलेखित ग्रंथों को पढ़ने से प्रतीत होती है। जैन आगमों में सबसे विशाल 'भगवती सूत्र' जैसे आगम के भाष्य को लिखना अपने आपमें एक दुरूह कार्य था, जिसे मुनिश्री ने आगमिक, पारंपरिक, वैज्ञानिक ढंग से लिखकर लगभग पूर्ण कर दिया था।

मुनिश्री के ज्ञान की चेतना विकसित थी, जिससे वे कठिन से कठिन ग्रंथों का परायण कर लेते थे। हमारे धर्मसंघ में १८ भाषाओं के जानकार संभवतः मुनिश्री ही थे। वे एक सफल अवधान प्रयोक्ता भी थे।

मुनिश्री का जीवन संघ व संघपति के प्रति पूर्ण समर्पित रहा है। वे एक 'इंगियारसंपन्न' मुनिप्रवर थे। संघ विकास के लिए हमेशा कुछ न कुछ चिंतन-मनन करते रहते थे।

एक बार जब हम श्रद्धेय मंत्री मुनिप्रवर की सन्निधि में अणुव्रत भवन, दिल्ली में प्रवास कर रहे थे, तब मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी भी वहाँ पधारे हुए थे, उन दिनों मैंने मुनिश्री से प्रश्न पूछा था—

Q.: Whats your experience about life and success? at that time **heanaursed** —

Ans.: In my life. I learn no challange is too big and no spirit is to small to start. I belive that apportunities are the winder to opecience happiness....

इस प्रकार की प्रेरणा से वे सामने वाले व्यक्ति को कैसे जीवन में सफलता के पथ पर अग्रसर होना है, इसका बोध करवाते थे।

मुनिश्री का जीवन पंचशीलों से युक्त था—निष्ठाशील, श्रमशील, सहनशील, अनुशासनशील, विनयशील।

यदि मुनिश्री के समग्र जीवन को देखें तो उन्होंने शास्त्र की वाणी 'एवं हवई बहुस्सुए' अर्थात् 'ऐसे होते हैं बहुश्रुत' को चरितार्थ किया है।

मुनि अजित कुमार जी स्वामी, मुनि जम्बू कुमार जी स्वामी, मुनि अभिजीत कुमार जी स्वामी, मुनि जागृत कुमार जी स्वामी और मुनि सिद्ध कुमार जी, जिन्हें आदरणीय मुनिश्री महेंद्र कुमार जी स्वामी की मंगलकारी, कल्याणकारी सन्निधि में दीर्घ समय तक रहने का अवसर प्राप्त हुआ है।

एक महान् संतप्रवर के धर्मसंघ से विदा हो जाने से उनका स्थान रिक्त हो गया है। आशा करते हैं कोई तो इस क्षति की पूर्ति कर सके।

दिवंगत बहुश्रुत, आगम मनीषी, प्रो० मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी की आत्मा के उन्नयन की मंगलकामना।

अर्हम्

● साध्वी पीयूषप्रभा ● साध्वी भावनाश्री
● साध्वी सुधा कुमारी ● साध्वी दीप्तियशा

बहुश्रुत परिषद् के संयोजक, आगम मनीषी प्रेक्षा प्राध्यापक प्रो० मुनि महेंद्र कुमार जी का जीवन अनेक विशेषताओं का संगम था। आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञजी एवं आचार्य महाश्रमणजी की दृष्टि के आराधक संत थे। संघनिष्ठा, गुरुनिष्ठा और आत्मनिष्ठा की त्रयी से जीवन समन्वित था। अंग्रेजी, गुजराती, हिंदी, संस्कृत आदि अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे। ज्ञान चेतना और अध्यात्म चेतना के द्वारा संघ विकास में आपका अहर्निश योगदान प्रणम्य है। अप्रमत्त जीवन शैली सभी के लिए प्रेरक है। भिक्षु शासन में अपनी साधना को शिखर तक पहुँचाया। आपका व्यक्तित्व यशस्वी, तेजस्वी और वर्चस्वी था। आपके कर्तृत्व की गाथा सबकी जुबान है। ऐसे साधक मुनि महेंद्र कुमार जी ने अपनी संयमी यात्रा को सानंद संपन्न किया। निरंतर उनकी आत्मा अध्यात्म के सोपान पर आरोहण करती रहे और अपने लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करे। यही हम सभी साध्वियों की मंगलकामना।

अर्हम्

● मुनि मुनिव्रत ● मुनि गिरीश कुमार ● मुनि विनीत कुमार

बहुश्रुत मुनिश्री महेंद्र कुमार जी स्वामी तेरापंथ धर्मसंघ के—
विलक्षण मुनिप्रवर थे।
मुनिश्री संघ समर्पित थे।
मुनिश्री गुरुदृष्टि आराधक थे।
मुनिश्री अप्रमत्त साधक थे।
मुनिश्री आत्मज्ञ संत थे।
मुनिश्री तत्त्ववेत्ता संत थे।
मुनिश्री प्रखर वक्ता थे।
मुनिश्री श्रुताराधक थे।
मुनिश्री आगमज्ञाता थे।
मुनिश्री आगमों के अंग्रेजी अनुवादक थे।
मुनिश्री आगम मनीषी थे।
मुनिश्री प्रेक्षा प्राध्यापक थे।
मुनिश्री अवधान विद्या में निपुण थे।
मुनिश्री सरल स्वभावी थे।
मुनिश्री प्रसन्नमना साधु थे।
मुनिश्री विनोदप्रिय थे।
मुनिश्री श्रमनिष्ठ साधु थे।

मुनिश्री तेरापंथ धर्मसंघ की अमूल्य निधि थे। अनेकों विशेषताओं के धनी थे। तीन-तीन आचार्यों के कृपापात्र थे।

मुनि अजीत कुमार जी आदि पाँचों संतों को ऐसे महान् मुनिप्रवर के पास रहने का, सेवा करने का और शिक्षण-प्रशिक्षण का अवसर मिला।

आध्यात्मिक मंगलकामना करते हैं मुनि महेंद्र कुमार जी की आत्मा के प्रति कि वो उत्तरोत्तर विकास करती हुई मोक्षश्री को वरण करे।

अर्हम्

● मुनि सुव्रत ●

छुप गया एक तारा,
भूल नहीं पाएँगे मुनिवर प्यारा नाम तुम्हारा।

छोटी-सी उमर में तुमने, संयम पथ अपनाया,
तुलसी महाप्रज्ञ ने तुमको आगे खूब बढ़ाया,
आगम मंथन किया शुभंकर, गुरुदृष्टि से सारा,
छुप गया एक तारा।।

प्रेक्षा प्राध्यापक अलंकरण गुरु तुलसी से पाया,
अपनी तीक्ष्ण बुद्धि से, शासन में नाम कमाया,
शासनश्री मुनिवर जी तुमने, भर दिया ज्ञान भंडारा,
छुप गया एक तारा।।

महाश्रमणजी ने भी तेरे ज्ञान की करी प्रशंसा,
गुरु भी जिव की करे प्रशंसा, काम किया हाँ वैसा,
गुरु कृपा से मुनिवर तेरा, चमका भाग्य सितारा,
छुप गया एक तारा।।

संतों ने भी सेवा करके, अपना फर्ज निभाया,
तुममें भी श्रम करके संतों को भी खूब पढ़ाया,
संयम की कर शुद्ध साधना, जग से लिया किनारा,
छुप गया एक तारा।।

सुव्रत, मंगल, शुभम् मुनि, श्रद्धांजलि अर्पित करते,
तेरा हाँ उपकार मुनिवर, भूल नहीं हम सकते,
तेरे पावन चरणों में शत्-शत् है नमन हमारा,
छुप गया एक तारा।।

लय : संयममय जीवन हो---

प्रो. मुनि महेंद्र कुमारजी के प्रति आध्यात्मिक उद्‌गार

अर्हम्

● मुनि तत्त्वरुचि 'तरुण' ● मुनि संभव कुमार

आदरणीय अजीत मुनिजी को सादर वंदना, मुनि जम्बू कुमार जी, मुनि अभिजीत कुमार जी, मुनि जागृत कुमार जी, मुनि सिद्धकुमार जी को सुखपृच्छा।

प्रो० मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी तेरापंथ धर्मसंघ के विशिष्ट और विज्ञ मुनि थे। उनका ६ मार्च, २०२३ को मुंबई में देवलोकगमन हो गया। वे धर्मसंघ के बहुउपयोगी और मेरे अनन्य उपकारी संत थे। सौभाग्य से मुझे उनके साथ (९१-९८ तक) आठ वर्ष रहने का सुअवसर प्राप्त हुआ। मुनिश्री के सान्निध्य में वह मेरी विद्यार्जन यात्रा थी। मुझे आपने बी०ए० और एम०ए० करने का मौका दिया। साथ ही प्रेक्षाध्यान में निष्णात बनाया। मैं मानता हूँ आज मैं जो कुछ हूँ वह उनकी देन है।

यूँ तो मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी अनेक गुणों के धारक थे। लेकिन संघ और संघपति के प्रति समर्पण का भाव उनका सर्वोपरि गुण था। वे आचार्यप्रवर द्वारा निर्दिष्ट कार्य को पूर्ण करने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा दते। चाहे उसके लिए रात्रि जागरण भी क्यों न करना पड़े।

मुनिश्री भले ही वैज्ञानिक नहीं थे किंतु वे किसी वैज्ञानिक से कम नहीं थे। उनका मस्तिष्क वैज्ञानिक था। वे सदैव सत्य की खोज में लगे रहते।

मुनिश्री विद्वान होकर भी विनोदी प्रकृति के थे। उनके विनोदी प्रसंग आज भी हमारे जेहन में गुदगुदी पैदा किए बगैर नहीं रहते।

मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी का भाषायी ज्ञान विशिष्ट था। वैसे तो देश-विदेश की अनेक भाषाओं के जानकार थे। परंतु अंग्रेजी भाषा के वे विशेषज्ञ थे। उनके द्वारा प्रयुक्त अंग्रेजी शब्दों पर अंग्रेज विद्वान भी अभिभूत हो जाते।

मुनिश्री ने वैयक्तिक तौर पर ध्यान भले अधिक न किया हो। किंतु आगम कार्य अवधानपूर्वक करते। वे उच्च कोटि के अवधानकार थे। उनका ध्यान के विषय में ज्ञान बहुत गहरा था।

मुनिश्री आचार्यों के विश्वास पात्र थे। गुरु की कृपा उसी पर बरसती है जो विश्वास पात्र होता है। आचार्य तुलसी मुनिश्री के बारे में कहा करते—धर्मसंघ को एक नहीं सौ महेंद्र कुमार जी चाहिए। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने उनकी योग्यता का मूल्यांकन कर प्रेक्षा प्राध्यापक से संबोधित किया। वर्तमान युगप्रधान आचार्य महाश्रमण जी ने उनको बहुश्रुत परिषद का संयोजक बनाया। यह सब बिना गुरु कृपा के संभव नहीं। और यह सच है कि कृपा विश्वास पात्र पर ही बरसती है।

मुनिश्री स्वास्थ्य लाभ हेतु पिछले कुछ वर्षों से मुंबई महानगर में प्रवास कर रहे थे। मुनिश्री का स्वास्थ्य चाहे अनुकूल कम रहा हो, लेकिन स्वाध्याय का क्रम अनवरत चलता रहा।

मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी उत्तम तप के श्रेष्ठ साधक थे। शास्त्रों में स्वाध्याय को उत्तम तप बतलाया है। मुनिश्री ने उपवास आदि की बड़ी तपस्या भले न की हो लेकिन स्वाध्याय रूपी उत्तम तप में हमेशा लगे रहते। अध्ययन-अध्यापन उनकी रुचि का विषय था।

मुनिश्री महेंद्र कुमार जी स्वामी पुण्याई के पुतले थे। सचमुच में वे पुनवान पुरुष थे। बिना पुनवानी के सुखद संजोग नहीं मिलते। उन्होंने सुसंस्कारी परिवार में जन्म लिया, उन्होंने तेरापंथ जैसा अनुशासित-व्यवस्थित संघ पाया, गुरुओं की कृपा और आशीर्वाद पाया, योग्यता अर्जित की और अपनी क्षमता का शत-प्रतिशत उपयोग किया। शुभाशुभ जीवन का क्रम है लेकिन मुनिश्री को जो अनुकूलता प्राप्त हुई उसमें मूल उपादान उनकी पुण्याई थी।

मुनिश्री का जीवन योगक्षेम का प्रतीक था। नया प्राप्त करना और प्राप्त का संरक्षण करना ही तो योगक्षेम है। मुनिश्री का अधिकांश समय शुभ प्रवृत्ति में व्यतीत होता जो निर्जरा के साथ पुण्यार्जन का हेतु बना।

मुनिश्री वफादारी के आदर्श पुरुष थे। वे संघ विकास के लिए सतत जागरूक थे। वे सदैव संघ और संघपति की बढ़ती-चढ़ती ही पसंद करते। मुझे उन्हें धर्मसंघ का हनुमान कहने में कोई आपत्ति नहीं।

प्रेक्षा प्राध्यापक, आगम मनीषी, बहुश्रुत परिषद के संयोजक संत महेंद्र कमार जी स्वामी की आत्मा उत्तरोत्तर आध्यात्मिक विकास करती रहे, परम लक्ष्य को शीघ्रातिशीघ्र प्राप्त करे, मंगलकामना।

मुनिश्री के सहवर्ती, मेरे सहपाठी तपस्वी सेवाभावी संत मुनि अजीत कुमार जी स्वामी, गुरुकुलवासी शासन गौरव मुनि मधुकरजी स्वामी के लाड़ले मुनि जम्बू कुमार जी मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी के सान्निध्य में निखरी प्रतिभाएँ मुनि अभिजीत कुमार जी, मुनि जागृत कुमार जी, मुनि सिद्धकुमार जी सभी के चित्त समाधि और आध्यात्मिक विकास की मंगलकामना।

मुंबई का श्रावक-श्राविका समाज अपने दायित्व के प्रति बहुत जागरूक है। वह इसी प्रकार धर्मसंघ की सेवा करता हुआ अपना आध्यात्मिक विकास करता रहे, शुभकामना, मंगलकामना।

मुनि महेंद्र कुमार जी के प्रति उद्‌गार

● पदमचंद पटावरी ●

श्रद्धेय मुनि अजित कुमार जी, मुनि जम्बूकुमारजी (मिंजूर), मुनि अभिजीत कुमार जी, मुनि जागृत कुमार जी, मुनि सिद्धकुमार जी! सादर सविधि वंदना।

तेरापंथ धर्मसंघ के बहुप्रतिष्ठित, बौद्धिक सोच के धनी, आगम मर्मज्ञ, वर्तमान में बहुश्रुत परिषद् के संयोजन श्रद्धेय मुनिश्री महेंद्र कुमार जी द्वितीय के स्वर्गारोहण का संवाद डॉ० शांता जैन ने फोन पर प्राप्त हुआ। दो मिनट के लिए ठहर जाना पड़ा।

इतिहास का झरोखा खुला पड़ा है। यद्यपि मैं उस समय मात्र १४ वर्ष का किशोर था पर मुझे स्मरण है कि वि०सं० २०१४ के सुजानगढ़ में आपश्री की जैन भगवती दीक्षा परम प्रतापी आचार्यश्री तुलसी के करकमलों से हुई थी तब पूरे धर्मसंघ में अपूर्व हर्ष, उल्लास और उत्सुकता का वातावरण निर्मित हो गया था। उस समय बाहरी शिक्षा की विशिष्ट डिग्री के साथ-साथ आपका अंतर्यात्रा की ओर अग्रसर होना एक अजूबा-सा लग रहा था। इन सबके साथ-साथ समादरणीय जेठाभाई झवेरी जैसे सुश्रावक का सुपुत्र होना भी आपकी विशेष पहचान थी। गौर वर्ग, चमकीली आँखें, शरीर सौष्ठव आपका बाहरी व्यक्तित्व भी सबको भा रहा था।

समय की सूई सरकती चली गई। प्रतापी आचार्यों की पीढ़ियाँ बदलती गईं पर धनु के धनी इस मुंबईया बाबू ने अपने कर्तृत्व के अनेकों आलेख गढ़ दिए। अवधान विद्या के शुरुआती दौर में महेंद्र मुनि का नाम सिरमोड़ था। आचार्यों के साथ यात्राओं का प्रभावी लंबा दौर भी चला। ध्यान, योग एवं बौद्धिक गोष्ठियों में महेंद्र मुनि का रहना सबको आश्वस्त करता था। आचार्यों ने भी उन्हें मान-सम्मान देने एवं अनुग्रह की वर्षा करने में कोई कमी नहीं रखी। स्वास्थ्य संबंधी कारणों से कुछ वर्षों से मुंबई प्रवास करना पड़ा। आप हर समय आगम ग्रंथों से एक तरह से घिरे रहते थे। कुछ नया करना खोजी मानसिकता बनाए रखना आपका स्वभाव था। आपकी विशेषताओं की लंबी लिस्ट है। आप संतों को अंत तक उनकी छाया बनकर सेवा करने एवं उनके उपपात में रहने का सौभाग्य मिला। हर श्रावक की तरह मुनिश्री की मेरे पर, मेरी बेटी प्रभा एवं जशराजजी मालू पर अतिशय कृपा रही। जीवन और मृत्यु की प्रवाह में उन्होंने अपने प्राण त्याग दिए। यह यकायक आकस्मिक हो गया। दिवंगत आत्मा को प्रणाम।

अर्हम्

● साध्वी जिनप्रभा ● साध्वी सुषमा कुमारी

मुनिवर! शासन महिमा महकाई श्रम की मूरत मनभाई,
श्रुत सेवा आजीवन इकसार है,
हो मुनिवर! जनमानस में यादें साकार हैं।

मोहमयी मुंबई नगरी से बने आप निर्मोही,
महारथिक गुरु तुलसी कर से संयम रथ आरोही,
तीनों गुरुओं के थे दिलवासी, गुरुचरणों मथुरा काशी,
प्रेक्षा से खोला प्रज्ञाद्वार है।।

पुण्यात्मा थे, भव्यात्मा थे सहज सरल व्यवहारी,
विद्वत्ता के साथ विनोदी भाव रहा सहचारी,
लेखन भाषण की अद्‌भुत शैली, गुण गाथा गण में फैली,
चिंतन मंथन से निकला सार है।।

मुंबई के जौहरी ये पक्के, चुनते हीरे मोती,
उन मुक्ता हीरों से अनुपम मेधा हार पिरोती,
आगम सागर में डुबकी लेते, पौरुष से नैया खेते,
रहते हरपल हर क्षण गुलजार हैं।।

प्रभुवर अभिनंदन में मुनिवर ने उत्कर्ष चलाया,
मुंबई के घर-घर में मानो श्रुत का दीप जलाया,
श्रावक समुदाय में जोश जगाया, स्वागत का रंग चढ़ाया,
असमय में क्यों पहुँचे सुरद्वार है।।

आगम मनीषी ज्ञान विधान

● साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा ●

आगम मनीषी ज्ञान विधान।
बहुश्रुत परिषद् के संयोजक मुनि थे मतिमान---आगम।।

मोहमयी मुंबई में जनमें, फिर भी प्रखर विरक्ति मन में।
पाई ऊँची लौकिक शिक्षा, तुलसी गुरु कर से ली दीक्षा।
किया निछावर जीवन सारा, पाया गहरा ज्ञान---आगम।।

गण-गणपति से थी इकतारी, महकी सद्‌गुण से फूलवारी।
प्रेक्षा प्राध्यापक प्रोफेसर, पाए सुगुरु से संबोधन वर।
महाप्रज्ञ और महाश्रमण से पाया वर सम्मान---आगम।।

दिया प्रशिक्षण पूर्ण वर्ष भर, थे विद्यार्थी स्वयं आर्यवर।
विश्व शांति सम्मेलन अवसर, करते सुघड़ हिंदी भाषांतर।
सतरह भाषाओं के ज्ञाता, विज्ञाता विद्वान---आगम।।

जब भी हॉस्पिटल में जाते, पुनः स्वस्थ हो वापस आते।
भगवती सेवा में लग जाते, युवकों सा नव जोश दिखाते।
किंतु अधूरा छोड़ गए क्यों? गुरु दर्शन अरमान---आगम।।

लय : कितना बदल गया---

✦ *दुनिया में चार चीजें दुर्लभ मानी गई हैं–मनुष्यत्व, धर्मश्रवण, श्रद्धा और संयम में पराक्रम।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

प्रो. मुनि महेंद्र कुमारजी के प्रति आध्यात्मिक उद्‌गार

अर्हम्

● **साध्वी पंकजश्री आदि साध्वियाँ** ●

प्रोफेसर महेंद्र कुमार जी स्वामी हमारे धर्मसंघ के विशिष्ट विशेषज्ञ विज्ञान के धनी थे। वह तेरापंथ के नील गगन का ज्ञान सितारा था उनको अस्त हो जाना मानो धर्मसंघ में बहुत बड़ी क्षति हुई है। मुनिश्री जी का जीवन अनेक विशेषताओं का गुलशन था, उनकी मेधा प्रखर थी। पूरे विश्व में अपनी मेधा से जिनशासन, तेरापंथ शासन एवं विज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन कराने में अग्रणी रहे। प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान के अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में मुनिश्री जी के उद्‌बोधनों ने खूब धूम मचाई और संघ की प्रभावना में चार चाँद लगाए। आप पर गुरु तुलसी की अनंत कृपा रही। महायोगी आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के साए में रहकर आपको आगम भाष्य एवं संपादन करने का स्वर्णिम अवसर उपलब्ध हुआ।

तेरापंथ धर्मसंघ के प्रथम पहले बी०एस०सी० करके दीक्षा लेने वाले मात्र एक ही संत थे। मुनिश्री जी अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे। जर्मन भाषा को जानने वाले आप पहले ही संत थे। मुनिश्री जी ने जीवन-भर मोक्ष मार्ग पर चलने का अटूट संकल्प निभाया, उनके जीवन में मुझे आर्षवाणी परिलक्षित होती हुई दिखाई दी। सम्यग् दर्शन, ज्ञान चारित्र–तपांसि मोक्ष मार्ग–इस सूत्र में भगवान महावीर ने चार मार्ग बताए हैं। ज्ञान, दर्शन, चारित्र व तप। मुनिश्री जी ने यौवन के तपते सूरज को रोशनी में मात्र बीस वर्ष की अवस्था में चारित्र ग्रहण किया। संयम के पायदान पर चरण न्यास किया। इन संकरी राहों को पुरुषार्थ से राजमार्ग बनाया। गुरु निष्ठा, संघ निष्ठा, आगम पर अथाह आस्था में आपके विशुद्ध दर्शन के दर्शन होते रहे। अनवरत अंतिम समय तक चलती रही आपकी लेखनी। यह ज्ञान की आराधना मुनिश्री जी के आंतरिक तप का नूर था। ज्ञान सरोवर के परमहंस बनकर ज्ञान मोती चुगते रहे। आप एक शब्द की अनेक प्रकार से व्याख्या करने में प्रख्यात थे। इस प्रकार मुनिश्री जी ने मोक्ष मार्ग के चारों ही द्वारों से सिद्धपुरी में प्रवेश करने का अथक् प्रयास किया। मुनिश्री ने जीवन-भर आचार्यों की दृष्टि की आराधना की। उसका ही श्रीफल है कि प्रो० महेंद्र कुमार जी आगम मनीषी एवं बहुश्रुत परिषद् के संयोजक कहलाए। बहुधा आचार्यश्री महाश्रमण के श्रीमुख से मुनिश्री को विद्वता के प्रसग सुनने को मिले।

मुंबई नगरी में दो बार हमें मुनिश्री का सान्निध्य प्राप्त हुआ। मैंने देखा आपका जीवन पावन पवित्र था, उजला-उजला चारित्र मुनिश्री की सहजता और सरलता का प्रमाण पत्र था। भरूंड पक्षी की तरह अप्रमत्तता आपके जीवन की रोशनी थी। साधु-साध्वियों के प्रति प्रमोद भावना सबको प्रभावित करती थी।

सौभाग्य की बात है कि हमारे धर्मसंघ के विशिष्ट संत की सेवा करने का सेवाभावी तपस्वी मुनिश्री अजित कुमार जी स्वामी को मौका मिला। तन की पछेवड़ी बनकर मुनिश्रीजी के मनोनुकूल सेवा की। मुनि जम्बू कुमार जी स्वामी को भी सौभाग्य से यह स्वर्णिम अवसर मिल गया। डॉ० मुनि अभिजीत कुमारजी स्वामी, सिद्धकुमार जी स्वामी, मुनि जागृत कुमार जी स्वामी ने उनकी विद्वता का खूब लाभ उठाया। ऐसा लगता है सभी संतों की सेवा कृतार्थ हो गई।

प्रो० मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी की आत्मा उत्तरोत्तर मोक्ष मंजिल के लिए पहुँचे। मंगलकामना। क्षेत्र की दूरी होने के कारण हम साध्वियाँ पहुँच नहीं पाईं यहीं से श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं।

अप्रतिम व्यक्तित्व के धनी

● **साध्वी चंदनबाला** ●

आगम मनीषी मुनिश्री महेंद्र कुमार जी स्वामी तेरापंथ धर्मसंघ के अति विशिष्ट संतों की श्रेणी में से एक महान संत थे। धर्मसंघ में उनकी अमूल्य सेवाएँ रही हैं। उनका सरल व मृदु व्यवहार सबके लिए प्रेरक था। वे बहुत ही गंभीर व सूझबूझ के धनी थे। उनका वैदुष्य अपने आपमें गौरवान्वित था। वे मोहमयी नगरी मुंबई के प्रतिष्ठित जवेरी परिवार में प्रेक्षा प्राध्यापक श्री जेठाभाई जवेरी के सुपुत्र थे।

मुनिश्री अनेक भाषाओं के पारंगत विद्वान थे। इंग्लिश व गुजराती तो मानो उनकी पैतृक भाषा थी। हमने अनेक बार देखा जब कोई विदेशी या कोई विशिष्ट व्यक्ति आता तो उस समय श्रद्धास्पद गुरुदेव के सान्निध्य में अंग्रेजी में वार्ता प्रसंग में वे सफल माध्यम बनते।

अध्यात्म और विज्ञान की दृष्टि से धर्म को इतने अच्छे ढंग से व्याख्यायित करते कि विद्वत्‌जन भी अचंभित हो जाते। हर विषय में उनकी पारदर्शी मेधा गहराई से अन्वेषण कर नए तथ्यों को उद्‌घाटित करती। आगमों का भी उन्होंने तलस्पर्शी अध्ययन किया। प्रेक्षाध्यान के विषय में गहराई से उतरकर, स्वयं आत्मसात कर उसकी विधि का सबको प्रशिक्षण दिया। अतः श्रद्धेय प्रवर ने उन्हें प्रेक्षा प्राध्यापक के महनीय विशेषण से नवाजा। मुनिश्री पुरुषार्थ के पुरोधा थे। श्रम का दीप अंतिम क्षण तक प्रज्ज्वलित रहा। पूज्यप्रवर जिस कार्य को करने का संकेत दिराते वे जी-जान से जुट जाते। वर्तमान में भी वे भगवती सूत्र का कार्य करवा रहे थे। हमने देखा एवं सुना कि घोर वेदना में भी उनकी लेखनी अनवरत चलती रही, यहाँ तक कि हॉस्पिटल में भी उनकी लेखनी चलती रहती। उनके इर्द-गिर्द पुस्तकें ही पुस्तकें दिखाई देती मानो पूजयप्रवर का हर एक वाक्य उनके रोम-रोम में रम गया था–'कार्य पूरा किए बिना नहीं जाना' उनका कार्य लगभग संपन्नता पर है।

परंतु नियति को कौन टाल सकता है। गुरुदेव साक्षात् उन्हें दर्शन देने पधार रहे थे पर भावी को मान्य नहीं था। उनके सहवर्ती संत मुनि अजित कुमार जी जो अंतिम क्षण तक तन की पछेवड़ी बनकर, छाया बनकर उनके हर कार्य में कदम से कदम मिलाकर उनके सहयोगी बने रहे, अहर्निश सेवा में तत्पर रहते। अपने सहवर्ती संतों को अनेक विषयों में निष्णात किया, मुनि अभिजीत कुमार जी, सिद्धकुमार जी, जागृत कुमार जी की अर्हताओं को जागृत किया। सौभागी मुनिश्री जम्बू कुमार जी को भी उनके पुनीत साए में रहने का महनीय अवसर प्राप्त हुआ।

मुनिश्री गत कई वर्षों से मुंबई में प्रवासित थे। उनका जहाँ भी प्रवास रहा, अत्यंत प्रभावशाली रहा। श्रद्धेय गुरुदेव की अगवानी में आपने पूरी मुंबई में एक-एक सदस्य में संघनिष्ठा, गुरुनिष्ठा के संस्कार भरने का भरसक प्रयास किया। उत्कर्ष, उत्थान एवं जागो मुंबई जन अभियान आदि अनेक कार्यक्रमों के माध्यम से जन-जन में जागृति का शृंखनाद किया। आपकी छवि प्रत्येक मुंबईवासी के दिल में अंकित है।

गुरुदेव की अगवानी से पहले इस प्रकार आपका अलविदा हो जाना सबके दिलों को मायूस बना रहा है। मेरे पर भी असीम कृपा थी एक बार मैं I. T. School में थी तब आप स्वयं मुझे दर्शन देने ऊपर पधारे। मैं गद्‌गद् हूँ उनके निश्छल व्यवहार तथा अनुपम औदार्य के प्रति–

उस पवित्र आत्मा को अंतहीन प्रणति

अनंत-अनंत मंगलकामना। आप अतिशीघ्र अंतिम लक्ष्य को प्राप्त करें।

अर्हम्

● **साध्वी मधुस्मिता** ●

विद्वत् वरेण्य मुनिश्री महेंद्र कुमार जी का महाप्रयाण हो गया। मुनिश्री परम पूज्य गुरुदेवश्री तुलसी के करकमलों से दीक्षित उच्च स्तरीय शिक्षा प्राप्त प्रथम मुनि के रूप में प्रतिष्ठित संत थे। प्रज्ञा पुरुष आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी द्वारा आविष्कृत प्रेक्षाध्यान प्रणाली के विकास में उनका महनीय योगदान रहा। आचार्यश्री तुलसी ने धर्मसंघ में योगक्षेम वर्ष की आयोजना की। उस वक्त भी आध्यात्मिक, वैज्ञानिक व्यक्तित्व निर्माण की दृष्टि से प्रबुद्ध वर्ग को प्रशिक्षण प्रदान करने का गौरव प्राप्त किया। मुनिश्री की विशिष्ट अर्हताओं का सम्मान करते हुए महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने उनको बहुश्रुत परिषद् के संयोजक के पद पर मनोनीत किया। तीन-तीन युग प्रधान आचार्यप्रवरों की महर नजर प्राप्त मुनिश्री ने आगम समुद्र से अमूल्य रत्नों को उपलब्ध करने में अपनी श्लाघनीय प्रतिभा और प्रवर पराक्रम का प्रयोग किया।

'उत्कर्ष' कार्यक्रम के माध्यम से मुंबई के कण-कण में नई चेतना का संचार किया। प्रायः गुरुकुलवासी रहने वाले मुनिप्रवर को परम पूज्य गुरुदेव के पावन दर्शनों का सुयोग मिल जाता तो 'सोने में सुहागा' उक्ति चरितार्थ हो जाती।

मुनिश्री तपस्वी संत अजीत कुमार जी स्वामी आदि संतों ने मुनिप्रवर की सेवा सुश्रुषा कर धन्यता महसूस की।

इस अवसर पर मैं मंगलकामना करती हूँ कि मुनिश्री की आत्मा ऊर्ध्वारोहण करती हुई निर्बाध सुखों को प्राप्त करे।

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे मुनि महेंद्र कुमार

● **साध्वी काव्यलता** ●

तेरापंथ धर्मसंघ के एक वरिष्ठ, चिंतनशील, गंभीर, प्रबुद्ध, समयज्ञ व्यक्तित्व का नाम था मुनिश्री महेंद्र कुमार जी। प्रेक्षा प्रशिक्षक जेठाभाई जवेरी के पुत्र होने का सौभाग्य था तो उससे सौ गुणा उनका भाग्योदय था कि आचार्य तुलसी जैसे महान गुरु का वरदहस्त एवं दीक्षित-शिक्षित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

आगम मनीषी मुनिश्री महेंद्र कुमार जी सदा आगम में डूबे रहते थे। आगमों का स्वाध्याय, मंथन कर नया-नया नवनीत निकालते रहते थे। आगम से गहरी मित्रता थी। उनकी आगम निष्ठा, आगम संपादन कार्य को देख आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने आगम मनीषी संबोधन से संबोधित किया। मुनिश्री जी ने जीवन पर्यन्त बड़ी जागरूकता से साधना तथा आगम का अवगाहन किया।

आप एक कुशल प्रवचनकार थे। अनुभवों का खजाना था। आपने तीन-तीन आचार्यों की कृपा प्राप्त की। आपमें मुंबई में श्रावक समाज की अच्छी सार-संभाल कर धर्मसंघ की अच्छी प्रभावना की है। आपने अपने पीछे अजित मुनि आदि संतों को अच्छा तैयार किया है। आपकी कार्यकुशलता, व्यवहारकुशलता से आने वाले श्रावक प्रभावित होते। पूज्यप्रवर के दर्शनों की प्रबल इच्छा थी। पर ऐसा नहीं हो पाया। ऐसे महान व्यक्तित्व एवं आत्मार्थी संत के चले जाने से धर्मसंघ में एक बहुत बड़ी क्षति हुई है। मैं ऐसे महान संत के प्रति यह मंगलकामना करती हूँ कि उनकी आत्मा शीघ्र मंजिल को प्राप्त करे।

अणुव्रत समिति का गठन

गाजियाबाद।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी स्वामी के सान्निध्य में अणुव्रत समिति, गाजियाबाद का गठन अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के महामंत्री भीखम सुराणा के निर्देशन एवं संगठन मंत्री कुसुम लुनिया के प्रयासों से हुआ। सुशील सिपानी के रामप्रस्थ स्थित निवास पर मुनिश्री ने कुसुम-हीरालाल सुराणा को गाजियाबाद अध्यक्ष के रूप में मंगलपाठ सुनाया। इस अवसर पर अणुविभा कार्य समिति सदस्य डॉ० धनपत लुनिया आदि विशिष्ट व्यक्तित्वगण ने शुभकामनाएँ प्रेषित की।

कार्यक्रम में कुसुम सुराणा ने अध्यक्ष के लिए, अणुविभा आर्बिटेटर सदस्य शांतिलाल पटावरी एवं अन्य पदाधिकारिगणों तथा सदस्यों को पद व गोपनीयता की संगठन मंत्री डॉ० कुसुम लुनिया ने दिलाई। कार्यक्रम का संचालन अणुविभा के कार्य समिति सदस्य बाबूलाल दुगड़ ने किया। कार्यक्रम में अनेक संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

✦ *जीवन में सदुपदेश का थोड़ा-सा अंश भी उतरना शुरू हो गया तो जीवन में सत् परिवर्तन आ सकता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

प्रो. मुनि महेंद्र कुमारजी के प्रति आध्यात्मिक उद्गार

अर्हम्

● मुनि अर्हत् कुमार ● मुनि भरत कुमार ● मुनि जयदीप कुमार

तेरापंथ धर्मसंघ के एक विशिष्ट ज्ञानी संत, धर्म और विज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन करने वाले बहुश्रुत परिषद् के संयोजक, आगम मनीषी, मानद प्रोफेसर मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी का अकस्मात् देवलोकगमन सुनकर हम स्तब्ध रह गए। व्यक्ति जन्म से नहीं बल्कि अपने कर्म से महान होता है। अपने व्यक्तित्व से नई लकीरें खींचता है और ऐसे ही एक व्यक्तित्व हुए–मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी। जिन्होंने गृहस्थ जीवन में बी०एस०सी० की डिग्री प्राप्त कर संयम जीवन की ओर चरण बढ़ा दिए। उस समय बी०एस०सी० डिग्रीधारी संत धर्मसंघ में वे एक ही थे। गुरुदेव श्री तुलसी से संयम प्राप्त कर आचार्यश्री महाप्रज्ञजी और आचार्यश्री महाश्रमणजी के नेतृत्व में जिन्होंने आगम का बहुत कार्य किया और अंतिम समय तक भी वे वह कार्य पूर्ण निष्ठा के साथ करते रहे। उनकी उर्वरा मेधा शक्ति ने तेरापंथ धर्मसंघ को अनेक प्रकार की सेवाओं द्वारा नए कीर्तिमान स्थापित किए। तीनों ही आचार्यों का उनके सर पर सदैव वरदहस्त रहा। स्वास्थ्य की प्रतिकूलता होने पर भी उनका मनोबल मानो शिखर पर था। छोटी सी वेदना पर व्यक्ति टेंशन से घिर जाता है वहीं पर मुनिश्री का मुख मंडल हमेशा मुस्कान लिए हुए था। तेरापंथ धर्मसंघ में प्रोफेसर की उपाधि प्राप्त करने वाले वे एकमात्र संत थे। उन्हें अनेक भाषाओं पर अधिकार प्राप्त था।

गुरुदेव के पावन दर्शन करने हेतु गुजरात की ओर प्रस्थित थे, तब हमने मुंबई में मुनिश्री के दर्शन करने व उनसे ऊर्जा प्राप्त करने के लिए ५० किलोमीटर का अतिरिक्त मार्ग तय किया और मुनिप्रवर ने भी स्वास्थ्य की प्रतिकूलता को गौण कर हमें अपना असीम वात्सल्य प्रदान किया। हम मुनिश्री की कृपा से अभिभूत हैं। सभी संतों का अपनत्व भाव हृदय को गद्गद् करता है। तपस्वी मुनिश्री अजीत कुमार जी स्वामी ने भी लंबे समय तक मुनिश्री के तन का कपड़ा बनकर, तपस्या के साथ सेवा की है। जो अपने आप प्रेरणादायी है, उदाहरण है। ऐसे सेवाभावी संतों पर हम नाज करते हैं। मुनि जम्बू कुमार जी, मुनि अभिजीत कुमार जी, मुनि जागृत कुमार जी और मुनि सिद्ध कुमार जी सभी संतों ने अपनी सेवा से उनके चित्त को समाधि प्रदान की है। मुनिश्री मुंबई में काफी वर्षों से प्रवासित थे, मुंबईवासियों को भी इस सेवा का दुर्लभ अवसर प्राप्त हुआ। अंतःकरण के भावों से यही मंगलकामना मुनिश्री की पावन आत्मा अपने परम लक्ष्य को शीघ्र प्राप्त करे और उनके गुणों की सुवास सभी के जीवन में सुवासित होती रहे।

तेरापंथ धर्मसंघ के विशिष्ट संत थे मुनि महेंद्र कुमार

सिकंदराबाद।

तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में बंजारा हिल्स स्थित जैन सेवा संघ के चेयरमैन अशोक बरमेचा के निवास स्थान पर साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में बहुश्रुत परिषद् के संयोजक मुनि महेंद्र कुमार जी की स्मृति सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि जैन आगम साहित्य में चार प्रकार के व्यक्तियों का उल्लेख मिलता है। आज के परिप्रेक्ष्य में लगता है मुनि महेंद्र कुमार जी ने भगवान महावीर के इस आगम सुवाक्य को 'जाए सद्दाए निक्खंतो तमेव अणुपालिया' अपने जीवन में अक्षरस जीया है। वे हमारे धर्मसंघ के प्रथम प्रोफेसर के रूप में विख्यात हैं। उन्होंने प्रेक्षाध्यान व आगम आदि का विशिष्ट कार्य किया है।

तेरापंथ संघ में विशिष्ट स्थान प्राप्त मुनिवर महेंद्र कुमार जी एक साधक संत रहे हैं। उन्होंने अपनी मेधा शक्ति से अनेक व्यक्तियों को तैयार किया है। हम कामना करते हैं उनकी आत्मा आध्यात्मिक विकास करे, लक्षित मंजिल का शीघ्र वरण करे। साध्वीवृंद एवं संपूर्ण परिषद् ने लोगस्स ध्यान के साथ भावांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा के पूर्व अध्यक्ष एवं जैन सेवा संघ के चेयरमैन अशोक बरमेचा, महिला मंडल अध्यक्षा अनिता गिड़िया, अणुव्रत समिति अध्यक्ष प्रकाश भंडारी ने मुनिश्री के प्रति अध्यात्म भाव सुमन अर्पित किए। महासभा के प्रतिनिधि क्षेत्रीय प्रभारी लक्ष्मीपत बैद ने महासभा परिवार की ओर से भाव व्यक्त किए।

मुनि सिद्धकुमार जी के संसारपक्षीय पिताजी अश्विनी चोरड़िया ने कहा कि दीक्षित होने के बाद मेरे संसारपक्षीय पुत्र को मुनि महेंद्र कुमार जी का विशिष्ट सान्निध्य प्राप्त हुआ, यह हमारा परम सौभाग्य है।

साध्वी राजुलप्रभा जी ने कहा कि मुनिश्री ने गुरुत्रय का अति विश्वास प्राप्त किया। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी, साध्वी सिद्धियशा जी, साध्वी राजुलप्रभाजी, साध्वी चैतन्यप्रभा जी, साध्वी शौर्यप्रभा जी ने अपनी भावना समूह संगान से अभिव्यक्ति की। तेरापंथ सभा के सहमंत्री राकेश सुराणा, मार्ग सेवा प्रभारी संपत गोलछा, राजकुमार बोकड़िया एवं जयपुर से समागत विमल कोठारी उपस्थित रहे।

मुनि महेंद्र कुमार जी की गुणानुवाद सभा

गंगाशहर।

तेरापंथ धर्मसंघ के विशिष्ट संत मुनि महेंद्र कुमार जी की स्मृति सभा गुणानुवाद सभा शांति निकेतन में आयोजित की गई। इस अवसर पर मुनि चैतन्य कुमारजी 'अमन' ने कहा कि मुनि महेंद्र कुमार जी तेरापंथ के ऑल राउंडर वैज्ञानिक संत थे। आगम मनीषी, प्रेक्षा प्राध्यापक एवं बहुश्रुत परिषद् के संयोजक थे। अनेक भाषाओं के भाषाविद् होने के साथ अंग्रेजी भाषा पर उनका विशेष अधिकार था। वातावरण को सरस बनाने में वे माहिर थे। तीन आचार्यों की उन्हें विशेष कृपा प्राप्त थी।

मुनि श्रेयांस कुमार जी ने उनकी विशेषताओं को उजागर करते हुए पद्यों को प्रस्तुत करते हुए गीतिका का संगान किया। शासनश्री साध्वी शशि रेखा जी ने कहा कि विचारों का आदान-प्रदान कराने में माहिर संत थे।

साध्वी ललितकला जी ने कहा कि आगमों के गहन ज्ञाता ही बहुश्रुत कहलाता है। प्रबुद्ध चेतना मुनि महेंद्र कुमार जी अंतिम समय तक गण का भंडार भरते रहे। इस अवसर पर नवकार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

साध्वियों ने समूह स्वरों में गीत प्रस्तुत किया। तेरापंथी महासभा के संरक्षक जैन लूणकरण छाजेड़, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अमरचंद सोनी, अणुव्रत समिति के मनोज छाजेड़, तेयुप से उपाध्यक्ष विनीत बोथरा, तेमम उपाध्यक्षा संजु लालाणी ने मुनि महेंद्र कुमार जी की विशेषताओं को बताते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। अंत में चार लोगस्स के ध्यान से मुनिवर के प्रति श्रद्धा समर्पण की। कार्यक्रम का संचालन देवेंद्र डागा ने किया।

ज्ञानशाला के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव

फरीदाबाद।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में ज्ञानशाला का वार्षिकोत्सव एवं नए सत्र की ज्ञानशाला का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम के संचालन में ज्ञानशाला व्यवस्थापकों एवं प्रशिक्षिकाओं का श्रम रहा।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि भविष्य दृष्टा आचार्यश्री तुलसी ने तेरापंथ समाज के सुंदर भविष्य के निर्माण के लिए ज्ञानशाला का महत्त्वपूर्ण उपक्रम प्रदान किया। ज्ञानशाला एक ऐसा उपक्रम है जहाँ संस्कारों के सुमन खिलते हैं। संस्कारों की तालीम सिर्फ ज्ञानशाला में ही प्राप्त हो सकती है, इसलिए बच्चों को ज्ञानशाला जरूर भेजें।

साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने कहा कि बच्चे परिवार की रौनक, समाज का भविष्य होते हैं, देश के भावी कर्णधार यह बाल पीढ़ी ही हैं, इनको संस्कारित करना पूरी सदी को संस्कारित करना है।

डॉ० साध्वी सुधाप्रभा जी ने आगामी कार्यक्रमों की सूचना संप्रेषित की। साध्वी समत्वयशा जी ने तीर्थंकर स्तुति का संगान किया।

सभाध्यक्ष गुलाबचंद बैद ने कहा कि संस्कारविहीन विकास विनाश का कारण बन सकता है। ज्ञानशाला के पूर्व संयोजक बहादुरसिंह दुगड़, मुख्य प्रशिक्षिका मंजु लुनिया ने विचार व्यक्त किए। आभार ज्ञापन सभा मंत्री संजीव जैन ने किया व कार्यक्रम का संचालन ज्ञानशाला संयोजक राजेश जैन ने किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों दीहर जैन, पंखुड़ी जैन, भूमि जैन, यशस्वी जैन, तृशा बैद, ऋषभ बैद, कनिष्का जैन, मृगांक जैन, प्रियल रामपुरिया, हर्ष बांठिया, नंदनी जैन, हिमानी बेगवानी, दिव्यांक सिंघी इत्यादि ने प्रस्तुतियाँ देकर सबका मन मोह लिया।

ज्ञानशाला द्वारा साप्ताहिक प्रतियोगिता का आयोजन

सिकंदराबाद।

साध्वी डॉ० मंगलप्रभा जी के निर्देशन में तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में महावीर जयंती के उपलक्ष्य में नगरत्रय में संचालित २२ ज्ञानशालाओं में साप्ताहिक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। महावीर जयंती हैदराबाद ज्ञानशाला ने आध्यात्मिक प्रतियोगिता के द्वारा मनाई।

गीता में मुक्तक कविता, क्विज प्रतियोगिता, ड्राइंग प्रतियोगिता, वीडियो मेकिंग सभी तरह की प्रतियोगिता रखी गई। इन प्रतियोगिताओं में सभी ज्ञानार्थी और शिक्षिकाओं ने भाग लिया। बच्चों को महावीर के बारे में काफी कुछ सीखने को मिला। बच्चे, अभिभावक और प्रशिक्षिकाएँ सभी उत्साहित थे।

ज्ञानशाला के बच्चों की प्रस्तुति

अगरतला।

भगवान महावीर के जन्म-कल्याणक महोत्सव के अवसर पर ज्ञानशाला के बच्चों ने प्रस्तुतियाँ दी। बच्चों में धार्मिक संस्कार निर्माण की दिशा में श्रम और निष्ठा के साथ ज्ञानशाला संयोजिका किरण देवी पटावरी एवं उनकी टीम जो श्रमसाध्य कार्य कर रही है। उसके लिए बहुत-बहुत साधुवाद।

सभा की ओर से उपाध्यक्ष उम्मेद सिंह हिरावत ने कहा कि बच्चों में संस्कार निर्माण का जो कार्य ज्ञानशाला द्वारा किया जा रहा है वह सराहनीय है। तेमम, अगरतला की सहभागिता रही। महिला मंडल अध्यक्ष राजू देवी हिरावत ने इस अवसर पर सभी को शुभकामनाएँ दी। कार्यक्रम में अगरतला के श्रावक समाज, तेयुप तथा महावीर रिलीजियस ट्रस्ट के सदस्यों की उपस्थिति रही।

✦ *व्यक्ति परिवार व समाज में जीता है। यदि उसका क्रोध और आवेश पर नियंत्रण नहीं है और वाणी में माधुर्य नहीं है तो वह पविार और समाज में सम्मान प्राप्त नहीं कर सकता।*

✦ *आप किसी को मानते हो या नहीं मानते हो पर आप जो कुछ करते हो, उसमें नैतिकता व प्रामाणिकता को रखने का प्रयास करना चाहिए।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
1 - 7 मई, 2023

✦ *आस्तिक विचारधारा का आधार अध्यात्म है, जबकि नास्तिक विचारधारा भौतिकवाद से संपृक्त है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्य तुलसी डायग्नोस्टि सेंटर का भव्य उद्घाटन

गुवाहाटी।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् गुवाहाटी द्वारा अमेज शॉपिंग मॉल, ए०टी० रोड, गुवाहाटी में आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एवं आचार्य तुलसी डेटल केयर का भव्य उद्घाटन जैन संस्कार विधि से किया गया। समणी निर्देशिका विपुलप्रज्ञाजी एवं समणी आदर्शप्रज्ञाजी के मंगलपाठ के पश्चात उद्घाटन किया गया। ज्ञातव्य है कि एटीडीसी में रियायती दरों पर ब्लड, यूरिन, स्टूल आदि की जाँच तथा दंत चिकित्सा की जाएगी।

उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुए अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने तेयुप गुवाहाटी की टीम को बधाई देते हुए मानव सेवा के इस महनीय प्रकल्प में अनुदान प्रदान करने वाले तथा सहयोगी बने समस्त महानुभावों एवं कार्यकर्ताओं के प्रति आभार ज्ञापित किया एवं कहा कि आज तेरापंथ युवक परिषद् गुवाहाटी द्वारा इस एटीडीसी के उद्घाटन से अभातेयुप द्वारा संचालित मानव सेवा की इस राष्ट्रव्यापी शृंखला में एक कड़ी और जुड़ी है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित अभातेयुप के महामंत्री पवन मांडोत ने कहा कि स्वस्थ समाज : स्वस्थ राष्ट्र की संरचना के साथ आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् का अपनी शाखा परिषदों के माध्यम से संचालित और प्रबंधित मानव सेवा को समर्पित महत्त्वपूर्ण उपक्रम है। वर्तमान में देश के विभिन्न क्षेत्रों में ७२ एटीडीसी संचालित हैं, जिनमें रियायती दरों पर विभिन्न प्रकार के चिकित्सा परीक्षण किए जाते हैं।

इस अवसर पर तेयुप गुवाहाटी के अध्यक्ष मनीष सिंघी एवं मंत्री विकास झाबक ने सभी कार्यक्रमों को सफल बनाने हेतु सभी समाज बंधुओं का आभार ज्ञापन किया। उन्होंने एवं अन्य वक्ताओं ने कहा कि आज गुवाहाटीवासियों के लिए यह गौरव का पल आया है कि तेरापंथ युवक परिषद् गुवाहाटी अभातेयुप के निर्देशन में चिर-प्रतीक्षित एटीडीसी का शुभारंभ करने जा रही है। यह स्वप्न कई पूर्व अध्यक्ष-मंत्रियों के अथक् परिश्रम के परिणामस्वरूप है कि हम आज इस दिशा में आगे बढ़ पाए हैं। उल्लेखनीय है कि देश के १३ राज्यों के अंतर्गत यह ७२वाँ एटीडीसी है। परिषद् मानव सेवा के क्षेत्र में नित नए आयाम स्थापित कर रही है। रक्तदान एवं नेत्रदान के क्षेत्र में किए गए सराहनीय कार्यों के लिए विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित हो चुकी है।

अतिथियों के साथ ही एटीडीसी के उदारमना दानदाता एवं उद्घाटनकर्ता संतोकचंद विनोद अक्षय डागा परिवार एवं गौतम कंस्ट्रक्शन प्रा०लि० परिवार का सम्मान किया गया। साथ ही विशाल मेगा मार्ट में एटीडीसी हेतु निःशुल्क स्थान उपलब्ध करवाने के लिए सुरेश गोयल एवं इस कार्य में सेतु का काम करने वाले मुकेश बेताला का भी सम्मान किया गया।

आयोजन में अभातेयुप के उपाध्यक्ष रमेश डागा, महामंत्री पवन मांडोत, कोषाध्यक्ष भरत मरलेचा, तेरापंथी सभा गुवाहाटी के अध्यक्ष एवं अभातेयुप नेत्रदान सलाहकार बजरंग कुमार सुराणा, गुवाहाटी शाखा प्रभारी एवं नेत्रदान के राष्ट्रीय सहप्रभारी सुनील दुगड़, जैन संस्कार विधि के राष्ट्रीय प्रभारी राकेश जैन, अभातेयुप कार्यसमिति सदस्य आशीष कोचर, दीपक बोथरा, क्षेत्रीय सहयोगी संदीप डागा, समिति सदस्य सुनील जमड़ एवं परिषद् अध्यक्ष सहित सभी पदाधिकारी, कार्यकारिणी सदस्य, संस्था के पूर्व अध्यक्ष, मंत्रीगण, सभी संघीय संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं किशोर मंडल के ऊर्जावान कार्यकर्तागण उपस्थित थे।

इस अवसर पर तेयुप द्वारा विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। सर्वप्रथम प्रशिक्षक ताराचंद ठोल्या के निर्देशन में प्रातः ५:३० बजे तेरापंथ धर्मस्थल में 'फिट युवा : हिट युवा' कार्यक्रम संपन्न हुआ। तत्पश्चात ८ बजे तेरापंथ धर्मस्थल से विशाल मेगामार्ट तक 'नेत्रदान जागरूकता रैली' निकाली गई। प्रातः ११ बजे से आईटीए सेंटर माछखोवा में 'मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव' का आयोजन किया गया। केंद्रीय पदाधिकारियों के साथ कार्यकारिणी की बैठक आयोजित की गई। सायं ५:३० बजे से 'एक शाम : तुलसी के नाम' भव्य भजन संध्या एवं सम्मान समारोह का आयोजन आई०टी०ए० सेंटर में किया गया, जिसमें प्रसिद्ध गायिका मीनाक्षी भूतोड़िया अपने सुमधुर कंठ से भजन गाकर श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया। गुवाहाटी एटीडीसी को बनाने में तेयुप गुवाहाटी के कोषाध्यक्ष विवेक डागा का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन मंत्री विकास झाबक ने किया।

भगवान महावीर जयंती पर विविध कार्यक्रमों के आयोजन

निःशुल्क मधुमेह, रक्तचाप एवं थाइराइड जाँच

राजाजीनगर।

भगवान महावीर स्वामी के जन्म कल्याणक के उपलक्ष्य में तेयुप द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम द्वारा मानव सेवा के अंतर्गत फ्रीडम पार्क कुंडलपुर नगरी में आयोजित जन्मकल्याणक महोत्सव में निःशुल्क मधुमेह, रक्तचाप एवं थाइराइड फंक्शन से संबंधित कुल ५ जाँचें की गई हैं। १८६ सदस्यों ने इस आयोजन का लाभ लिया। सभी सदस्यों को एटीडीसी द्वारा प्रदत्त विभिन्न सेवाओं से अवगत करवाया गया।

इस अवसर पर स्थानकवासी संप्रदाय की साध्वी रिद्धिमा जी ने शिविर पर पधारकर मंगलपाठ सुनाया।

शिविर के अंतर्गत राजाजीनगर विधायक सुरेश कुमार कर्नाटक सरकार, पूर्व शिक्षा मंत्री का पधारना हुआ तथा तेयुप, राजाजीनगर को शुभकमानएँ संप्रेषित की। तेरापंथ सभा ट्रस्ट, राजाजीनगर के पूर्व अध्यक्ष शांतिलाल पितलिया ने तेयुप साथियों का उत्साहवर्धन किया। शिविर को व्यवस्थित आयोजन करने में तेयुप निवर्तमान अध्यक्ष मनोज मेहता, परामर्शक प्रवीण नाहर, तेयुप सदस्य अभिषेक पीपाड़ा, दीपक गिलुंडिया, भावेश मूथा, पंकज चोरड़िया, अनिल भंडारी, रणित कोठारी, चेतन टेबा, ललित मुणोत, हरीश पोरवाड़ एवं राजेश देरासरिया का विशेष श्रम नियोजित हुआ। इस आयोजन को सफल बनाने में एटीडीसी स्टॉफ स्मिता, अश्वेता एवं दीपाश्री का अथक श्रम रहा।

महावीर जयंती पर रक्त जाँच शिविर का आयोजन

अमराईवाड़ी-ओढ़व।

आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, अमराईवाड़ी द्वारा महावीर जैन युवा संघ के सहयोग से ब्लड टेस्ट कैंप का आयोजन सिंघवी भवन में किया गया। पूरी तेयुप टीम ने इस कैंप को सफल बनाने में अपना योगदान दिया। एटीडीसी संयोजक मुकेश सिंघवी ने नवकार मंत्र से कैंप की शुरुआत की। तेयुप अध्यक्ष हेमंत पगारिया ने सभी का स्वागत किया। कैलाश बाफना ने कैंप के प्रति शुभकामनाएँ प्रेषित की।

कैंप में ६ सदस्यों ने प्रोफाइल पैकेज का लाभ लिया। पधारे हुए सभी लोगों ने एटीडीसी के इस कैंप के कार्य की सराहना की।

इस कैंप में दिनेश चंडालिया, दिनेश सिंघवी, अशोक सिंघवी, सुरेश सुराणा, राजेंद्र बाफना, ओमप्रकाश सिंघवी, मनोज बाफना, मनोज चिप्पड़, हितेंद्र सिंघवी, दिनेश टुकलिया, रवि चंडालिया सहित अनेकजनों की तथा सभा, तेयुप की विशेष उपस्थिति रही। तेयुप मंत्री हितेश चपलोत ने आभार ज्ञापन किया।

सम, शम और श्रम के पुजारी थे श्रमण महावीर

बीदासर।

साध्वी रचनाश्री जी के सान्निध्य में महावीर जयंती मनाई गई। सर्वप्रथम साध्वीश्री जी के मंगलपाठ के साथ अहिंसा रैली निकाली गई, जो बीदासर के मुख्य मार्गों से होते हुए पुनः समाधि केंद्र में पहुँचकर सभा में परिवर्तित हो गई।

साध्वी रचनाश्री जी ने कहा कि अहं से अर्हं की ओर, भोग से योग, प्रदर्शन से दर्शन, चिंता से चिंतन, वासना से उपासना, कोलाहल से मौन, तनाव से संतुलन की प्रेरणा देता है यह महावीर का उत्सव। भगवान महावीर ने आत्मिक यंत्र, तंत्र और मंत्र का अवदान दिया। साध्वी संघप्रभा जी ने बताया कि भगवान का संपूर्ण जीवन ही प्रेरणा है। आत्म विकास चाहने वाला व्यक्ति भगवान की तरह स्वयं पुरुषार्थ करे। शासनश्री साध्वी अमितप्रभा जी ने कहा कि धर्म क्या है? समता ही धर्म है। समता को जीवन में उतारें, यही इस दिवस को मनाने की सार्थकता है। साध्वी विमलप्रभा जी ने गीत की प्रस्तुति दी। साध्वी लब्धियशा जी ने सम, शम और श्रम के पुजारी श्रमण महावीर के प्रति अपने विचार व्यक्त किए।

साध्वीवृंद ने सामूहिक गीत को स्वर दिया। कन्या मंडल और सुमन सेठिया, महिला मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला के बच्चों ने आकर्षक प्रस्तुति दी। सभा की ओर से रवि सेखानी ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन साध्वी गीतार्थप्रभा जी ने किया।

अक्षय तृतीया के कार्यक्रम का आयोजन

सिरियारी।

जैन धर्म के सबसे प्राचीन त्योहार, जो सहस्राब्दियाँ बीत जाने पर भी उसी उत्साह और उमंग के साथ मनाया जा रहा है। किसी ने सोचा था तब की एक छोटी सी घटी घटना आज एक वटवृक्ष की भाँति विस्तार को प्राप्त होगी।

कार्यक्रम का शुभारंभ शासनश्री मुनि मणिलाल जी के नमस्कार महामंत्रोच्चार से हुआ। उसके बाद वर्षीतप के उपलक्ष्य में भीलवाड़ा के राकेश कोठारी ने गीत की प्रस्तुति दी। सिरियारी के पूर्व सहमंत्री उत्तम सुकलेचा ने अपने विचारों की प्रस्तुति दी।

मुनि आकाश कुमार जी ने आचार्यश्री तुलसी द्वारा रचित गीत की व्याख्या की तथा भगवान ऋषभ के जीवन पर संक्षिप्त प्रकाश डाला तथा हमेशा सकारात्मक बने रहने की प्रेरणा प्रदान की। मुनि हितेंद्र कुमार जी ने आर०आई०एस०एच०ए०बी०एच० शब्द की व्याख्या की तथा सभी को ऋषभ की तरह शक्तिशाली व समताशील बने रहने की प्रेरणा दी।

इस बार सिरियारी में पाँच तपस्वियों ने पारणा किया—भीलवाड़ा से विमला देवी सिंघवी का पहला, गिलुंड से अनिता ओस्तवाल का पहला, पाली से इचरज देवी कुंडलिया का पाँचवाँ, पाली से संतोष देवी नौलखा का सातवाँ तथा गंगाशहर से विमला देवी भंसाली ने ग्यारहवाँ वर्षीतप का पारणा किया। सभी ने अपने-अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। उनके परिवार वालों ने तपोनुमोदना की। लगभग ३५० लोगों की सामूहिक उपस्थिति में ओम भिक्षु-जय भिक्षु का सामूहिक जप भी किया। काफी लोगों ने त्याग-प्रत्याख्यान भी किए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि हितेंद्र कुमार जी ने किया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में सिरियारी संस्थान के मैनेजर महावीर व कल्याण सिंह का श्रम रहा।

भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव

उधना।

मुनि उदित कुमार जी स्वामी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में सकल जैन समाज उधना द्वारा महावीर जयंती का आयोजन किया गया।

अहिंसा के अग्रदूत भगवान महावीर का २६२२वाँ जन्म कल्याणक दिवस के अवसर पर उधना में जैनों के चारों फिरकों द्वारा भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया। जिसमें चारों फिरकों द्वारा भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया। जिसमें चारों संप्रदाय श्वेतांबर, मूर्तिपूजक, दिगंबर, तेरापंथी तथा स्थानकवासी समाज के श्रावक-श्राविकाओं ने विशाल संख्या में भाग लिया। रैली महावीर भवन, उधना से शुरू होकर आचार्य तुलसी मार्ग, आचार्य तुलसी सर्कल, उधना मैन रोड, चंदनवन सोसाइटी होते हुए तेरापंथ भवन, उधना में पूर्ण होकर धर्मसभा के रूप में परिवर्तित हुई।

इस अवसर पर मुनि उदित कुमार जी ने कहा कि भगवान महावीर ने सभी को अहिंसा का उपदेश दिया। भगवान महावीर ने कहा कि कोई ऊँचा नहीं होता, कोई नीचा नहीं होता। सभी जीव एक समान होते हैं, इसलिए हमें सभी से समान व्यवहार करना चाहिए। भगवान महावीर ने हमें कर्मवाद का सिद्धांत दिया। मनुष्य जैसा कर्म करता है उसे वैसा ही फल भोगना पड़ता है। इसलिए हमें किसी का अहित नहीं करना चाहिए।

मुनि अनंत कुमार जी ने कहा कि भगवान महावीर अमृत पुरुष थे। भगवान महावीर को जब तक केवल ज्ञान नहीं प्राप्त हुआ, तब तक उन्होंने कोई उपदेश नहीं दिया। भगवान महावीर ने कहा कि ज्ञान के बिना कोई क्रिया मत करो। दूसरों के दोष देखने से पहले हमे स्वयं आत्मदर्शन-आत्म निरीक्षण करना चाहिए। मुनि रम्य कुमार जी ने गीतिका की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम की शुरुआत मुनिश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ हुई। तत्पश्चात उधना महिला मंडल, स्थानकवासी महिला मंडल और तेरापंथ भजन मंडली द्वारा गीतों की प्रस्तुति दी गई। ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा नाटिका की प्रस्तुति दी गई। सभा अध्यक्ष बसंतीलाल नाहर ने स्वागत वक्तव्य में आए हुए सभी मेहमानों का स्वागत किया।

स्थानकवासी संप्रदाय से मंत्री राजूभाई दानी ने भी अपने भावों की प्रस्तुति दी। रैली में श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, उधना के पदाधिकारियों, चंदनबाला महिला मंडल, नवयुवक मंडल, तेरापंथ समाज की सभी संस्थाओं के श्रावक-श्राविकाओं एवं कार्यकर्ताओं की विशाल उपस्थिति रही।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उधना क्षेत्र के विधायक मनुभाई पटेल, विशिष्ट अतिथि-सूरत महानगर पालिका के स्टैंडिंग कमिटी चेयरमैन परेश भाई पटेल, स्लम डवलपमेंट कमिटी के चेयरमैन दिनेश राजपुरोहित, पीएसी रेलवे कमिटी मेंबर छोटू भाई पाटिल, नगरसेवक दीनानाथ महाजन, नगर सेविका उर्मिला त्रिपाठी, पूर्व नगरसेवक प्रकाश भाई देसाई, मूलजीभाई ठक्कर, शैलेंद्र त्रिपाठी आदि उपस्थिति रहे। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री सुरेश चपलोत ने किया। अंत में आभार ज्ञापन संजय बोथरा ने किया।

✦ *व्यक्ति अहिंसा को समझकर उसे आत्मसात् करने का प्रयास करे तो श्रेय की दिशा मे गति कर सकता है।* — **आचार्यश्री महाश्रमण**

अक्षय आनंद और अक्षय शक्ति की हो....

(पृष्ठ २८ का शेष)

धर्मनीति के आदि पुरुष के रूप में भी भगवान ऋषभ थे। चैत्र कृष्णा अष्टमी के दिन वे महान संत बन गए। दीक्षा के साथ ही उनके वर्षीतप सहज में प्रारंभ हो गया। वर्तमान में भी वर्षीतप की साधना करने वाले चैत्र कृष्णा अष्टमी से ये तप प्रारंभ करते हैं। उनको उपयुक्त भिक्षा नहीं मिली थी। तपस्या करते-करते आज के दिन उनको भिक्षा मिली। इक्षुरस से उनका आज के दिन पारणा हुआ।

अक्षय तृतीया वर्षीतप संपन्नता का दिन है, तो दान दिवस भी है। श्रेयांस कुमार ने भगवान ऋषभ को इक्षुरस का दान दिया था। इक्षुरस में मिठास है, तो हमारी वाणी में भी मिठास हो। यहाँ या बाहर जिन्होंने वर्षीतप की साधना की है, वे आध्यात्मिक अनुमोदना के पात्र हैं। साधु-साध्वियों, समणियों ने भी वर्षीतप किया है। विहार के साथ वर्षीतप की साधना विशेष बात हो जाती है। कई-कई वर्षीतप के बीच में लंबी तपस्या भी कर लेते हैं। पर वर्षीतप का खंडन न हो।

वर्षीतप तो बड़ा सुंदर और सुगम तप है। काम के साथ तप भी चलता रहता है। पूज्यप्रवर ने वर्षीतप के ८ नियम बताए—(१) प्रतिदिन ॐ ऋषभाय: नमः की ग्यारह माला, (२) आधा घंटा रोज ध्यान, (३) एक घंटा रोज मौन, (४) ब्रह्मचर्य की साधना, (५) सचित एवं छः जमीकंद का त्याग, (६) पारणे के दिन चौविहार या तिविहार, (७) रोज एक बार प्रतिक्रमण या एक घंटा स्वाध्याय-जप करना, (८) क्षमा की साधना। एक दिन भी कठोर भाषा का प्रयोग हो जाए तो उस दिन नमक, चीनी या लाल मिर्च का सेवन का पूर्णतया वर्जन।

अक्षय शब्द बड़ा सुंदर है। हमारा सम्यक् ज्ञान, दर्शन, आनंद, अनंत शक्ति अक्षय हो। आचार्य भिक्षु से संबंधित हमारा धर्मसंघ है। गुरुदेव तुलसी के समय शुरू हुई ये पारणे की व्यवस्था निरंतर चल रही है। जैसी वर्षीतपस्वियों की पंक्ति लगी है, वैसी पंक्ति हमारे साधु-साध्वियाँ वैरागियों-मुमुक्षुओं की भी लगा दें तो और विशेष बात हो सकती है। मुमुक्षु निर्माण का भी प्रयास हो।

आज ही के दिन चार वर्ष पहले मेरे दीक्षा प्रदाता मंत्री मुनि सुमेरमलजी स्वामी का महाप्रयाण हो गया था। मैं उनका श्रद्धा के साथ स्मरण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। बहुश्रुत परिषद के वे पहले संयोजक थे। उनके द्वारा दीक्षित चारों संत वर्तमान में यहाँ पर उपस्थित हैं। वे धर्मसंघ के वरिष्ठ मुनि थे।

आज के कार्यक्रम में राजनीति के लोग भी उपस्थित हुए हैं। गुजरात के गृहराज्य मंत्री हर्षभाई सिंघवी यहाँ उपस्थित हैं। भगवान ऋषभ से राजनीति की भी पवित्र प्रेरणा मिलती रहे। सूरत में वर्षीतप पारणे की भव्य परिषद है। हम सभी में अपने-अपने ढंग से तपस्विता का, साधना का विकास होता रहे। भगवान ऋषभ से तप की प्रेरणा लेते रहें।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि अक्षय तृतीया लौकिक और लोकोत्तर पर्व है। स्वयं सिद्ध मुहूर्त है। जैन धर्म में आज का दिन तपस्या से जुड़ा दिन है। भारतीय परंपरा में तपस्या का महत्त्व है। तप से ८ प्रकार कर्म शिथिल हो कट जाते हैं। आत्म शुद्धि हो जाती है। गुरु की ऊर्जा व आशीर्वाद से तपस्वी आगे बढ़ सकता है। पूज्यप्रवर के शब्दों में शुभ योग भी तप है।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि दो प्रकार के व्यक्ति होते है।—अनुशरण करने वाले और पथदर्शन करने वालो। पथदर्शन करने वाले का महत्त्व होता है। भगवान ऋषभ ने जनता को पथदर्शन दिया। लोगों को समाज व्यवस्था का ज्ञान दिया। लोकोत्तर ज्ञान देने के लिए उन्होंने अभिनिष्क्रमण भी किया। ये प्रथम राजा, प्रथम साधु और प्रथम अर्हत् बने।

मुख्य मुनि महावीर कुमार जी ने कहा कि भगवान ऋषभ को मानव सभ्यता का आदि पुरुष कहा जाता है। वे प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने लोगों को सामुदायिक जीवन जीने की प्रेरणा दी। आत्म धर्म की भी प्रेरणा दी। तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यप्रवर विराजमान हैं। सभी तपस्वियों की आध्यात्मिक अनुमोदना।

पूज्यप्रवर के श्रीमुख से मंत्रोच्चार के मंगल उच्चारण से कार्यक्रम शुरू हुआ था। वर्षीतप का पारणा करने वालों में १२ वर्ष से लेकर २५ वर्ष के युवा थे तो ६० वर्ष के वृद्ध भी थे। लगभग ११५१ तपस्वियों ने पूज्यप्रवर को ईक्षुरस का दान देकर धन्यता का अनुभव किया। पूज्यप्रवर ने वर्षीतप करने वाले साधु-साध्वियों को पारणा करवाया। नए वर्षीतप शुरू करने वालों को पूज्यप्रवर ने संकल्प ग्रहण करवाए।

गुजरात गृहराज्य मंत्री हर्षभाई संधवी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। पारणा स्थान उपलब्ध कराने वाले मनहर भाई, शंकरभाई ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। अपनी भावना भी अभिव्यक्त की। २०२४ अक्षय तृतीया औरंगाबाद में होने वाली है। औरंगाबाद अक्षय तृतीया २०२४ के बैनर का अनावरण श्रीचरणों में हुआ। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

'उर्वी मुखरित दीवारें' कार्यक्रम का आयोजन

कालू।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं के तत्त्वावधान में कालू कन्या मंडल द्वारा उर्वी मुखरित दीवारें कार्यक्रम किया गया। उर्वी मुखरित दीवार के अंतर्गत कालू कन्या मंडल द्वारा गाँव की सेठ दीपचंद डूढाणी आदर्श विद्या मंदिर विद्यालय की दीवार पर पेंटिंग बनाई गई। इस वॉल पेंटिंग के माध्यम से स्वच्छ भारत व सेव एनर्जी का संदेश दिया गया।

पेंटिंग के लोकार्पण में तेममं अध्यक्ष पुष्पा देवी सांड, मंत्री रेणु देवी बोथरा, कोषाध्यक्ष चंद्रकला दुगड़, कन्या मंडल प्रभारी प्रभा देवी सांड, विद्यालय प्रधानाचार्य दुर्गाराम भाटु तथा कन्या मंडल सदस्य आदि उपस्थित रहे। कन्या मंडल संयोजिका हर्षा सांड ने उर्वी मुखरित दीवार कार्य का उद्देश्य सभी को बताया व सभी का आभार व्यक्त किया।

पेंटिंग में नंदिनी भादाणी, एकता भादाणी, ऋतु सांड, प्रिया गोलछा, पुनित गिया, निशा ज्याणी, पूजा सांड, वर्षा सांड, आस्था सांड, सोनु बोथरा, भूमिका सांड, हर्षा सांड का सहयोग रहा।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
1 - 7 मई, 2023

✦ *बड़ों के प्रति सम्मान का भाव रखना विनय है। समुचित रूप में सबके प्रति विनय का भाव रखना चाहिए।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

शक्ति का सदुपयोग करें, दुरुपयोग नहीं : आचार्यश्री महाश्रमण

पर्वत पाटिया, सूरत,
२१ अप्रैल, २०२३

वर्तमान युग के महावीर आचार्यश्री महाश्रमणजी विराट जन सैलाब के साथ पर्वत पाटिया के तेरापंथ भवन में पधारे। जहाँ हजारों की संख्या में श्रावक समाज पलक पावड़ा बिछाए पूज्यप्रवर के दर्शन करने को उत्सुक हो रहा था। मानो सागर में लहरों का सैलाब उठ रहा हो। मानो आज सूरत में धर्म का महासूर्य उदित हुआ हो।

अध्यात्म के महासूर्य ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन दर्शन में कर्मवाद का सिद्धांत है। कर्मवाद जैन दर्शन में विवेचित हुआ है। आठ कर्मों के संबंध में हमें आगम साहित्य और आगमेत्तर साहित्य में भी जानकारियाँ प्राप्त होती हैं। आठ कर्मों में एक आठवाँ घाती कर्म-अंतराय कर्म है। अंतराय कर्म शक्ति को बाधित करने वाला होता है।

आदमी की शक्ति का विकास भी हो सकता है। अनेक प्रकार के बल होते हैं। जन बल, धन बल, तन बल, वचन बल, मनोबल व आत्मबल आदि दुनिया में शक्ति भी होती है। शक्ति की उपासना भी नवरात्रा में की जा सकती है। शास्त्र में कहा गया कि शक्ति का गोपन मत करो। उसका बढ़िया उपयोग करो। शक्ति के बारे में तीन बातें हैं–शक्ति का अपेक्षित विकास करने का प्रयास करना चाहिए। शक्ति का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। शक्ति का सदुपयोग करना चाहिए।

शक्तिशाली बनकर आत्मकल्याण, पर-कल्याण का काम करना चाहिए। दूसरों को आध्यात्मिक शांति पहुँचानी चाहिए। दूसरों का अहित नहीं करना चाहिए। शक्ति दुर्जन और सज्जन दोनों के पास भी हो सकती है। दुर्जन जो दुर्मना होता है, वह अपनी शक्ति से दूसरों को पीड़ित कर सकता है। जबकि सज्जन-साधु की शक्ति दूसरों को त्राण देने में, दूसरों की रक्षा करने में प्रयुक्त हो सकती है। हमारी आत्मशक्ति -मनोबल अच्छा रहे।

हमारे जीवन में शारीरिक स्वस्थता, चित्त की प्रसन्नता और मनोबल का भी महत्त्व है। ये चीजें जीवन में हैं तो मानना चाहिए कि किंचित कुछ जीवन में है। साधु त्यागमूर्ति होते हैं। त्याग से शांति प्राप्त हो सकती है। त्याग-संयम से आत्मशक्ति का विकास हो सकेगा, ऐसा प्रतीत हो रहा है।

भगवान महावीर जैसे महापुरुष दुनिया में हुए हैं। आध्यात्मिक जगत में उनसे बड़ा कोई आदमी हो सकता है क्या? तीर्थंकर अनंत शक्ति संपन्न होते हैं। हमारे में भी आत्म-शक्ति का विकास हो। आचार्य भिक्षु में बहुत आत्मबल था। प्रतिकूलता में भी अनुकूल रहे थे। किस तरह घटना का रूप बदल देते थे। आत्मशक्ति है तो फिर गुस्सा नहीं आना चाहिए। आदमी की सकारात्मक शक्ति बढ़ेगी तो नकारात्मक शक्ति मंद पड़ जाएगी। जितने कषाय मंद पड़ेंगे उतना आत्मशक्ति का विकास हो सकेगा।

अणुव्रत भी भीतर की शक्ति को पुष्ट करने का प्रयास है, कारण अणुव्रत में संयम का बल है। प्रेक्षाध्यान व अध्यात्म शक्ति प्रयोग हमारी आत्मशक्ति को उजागर करने में, विकसित और पुष्ट करने में सहायक बन सकते हैं। वीतरागता पुष्ट हो सकती है। चरित्रात्माएँ तो परिषह सहन करते हुए विकास के सोपान पर चढ़ते रहते हैं। समता से सहन करना आत्मशुद्धि की ओर आगे बढ़ाना होता है।

आज सूरत में पर्वत पाटिया आना हुआ है। साध्वी हिमश्रीजी का चातुर्मास यहाँ कह रखा है। आज पहले दिन का प्रवास है। पर्वत पाटिया में खूब धर्म जागरणा बनी रहे। हम सबमें आध्यात्मिक शक्ति का विकास होता रहे, जब तक पराकाष्ठा को प्राप्त न हो जाए।

आज साध्वियों के दो सिंघाड़े यहाँ मिल गए हैं–साध्वी त्रिशला कुमारी जी एवं साध्वी सम्यक्प्रभा जी। साध्वी सम्यक्प्रभा जी मुनि विनोद कुमार जी की बहन हैं। मुनि विनोद कुमार जी और हम बचपन में साथ रहे हैं। साध्वियाँ खूब विकास करती रहें।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि परमपूज्य का लक्ष्य था छापर से मुंबई तक प्रस्थान करना। चार पड़ाव हुए–बायतु, अहमदाबाद, सूरत और मुंबई। छापर से अब तक लगभग १५०० किलोमीटर की यात्रा हो चुकी है। आचार्यप्रवर ने यात्राओं के साथ मिशन भी बनाया हुआ है। आपश्री में करुणा व परमार्थ की चेतना है। जैसे वृक्ष तप को सहन कर भी छाया प्रदान करवाता है, वैसे ही आप कष्टों को सहन कर हर आने वाले व्यक्ति को शीतलता, शांति प्रदान करवाते हैं। धर्म समाधि देने का प्रयत्न करते हैं।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सिंघाड़े ने गीत से पूज्यप्रवर का स्वागत किया। साध्वी त्रिशला कुमारी जी एवं साध्वी सम्यक्प्रभा जी ने अपनी भावना श्रीचरणों में अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्थानीय सभाध्यक्ष गौतम ढेलड़िया, तेयुप अध्यक्ष प्रवीण सुराणा, महिला मंडल अध्यक्षा ललिता पारख, कुलदीप कोठारी उपस्थित थे।

तेरापंथ महिला मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी। तेयुप ने गीत द्वारा अपनी भावना अभिव्यक्त की। ज्ञानशाला एवं कन्या मंडल की प्रस्तुति भी हुई।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

जीवन में शांति के लिए कषायों का शमन करें : आचार्यश्री महाश्रमण

सायण, सूरत, १६ अप्रैल, २०२३

प्रातः स्मरणीय आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः धवल सेना के साथ लगभग १३:४ किलोमीटर का विहार कर सायण के डीआरजी स्कूल में प्रवास हेतु पधारे। परम पावन ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि वर्तमान अवसर्पिणी के भरत क्षेत्र में चौबीस तीर्थंकर हुए। इनमें सोलहवें तीर्थंकर भगवान शांतिनाथ हुए।

एक भौतिकता का जगत है, दूसरा आध्यात्मिकता का जगत है। दोनों जगत में पद व्यवस्था भी है। भौतिक जगत में सबसे बड़ा पद चक्रवर्ती का होता है। जबकि आध्यात्मिक जगत में तीर्थंकर शिखर पुरुष होते हैं। एक ही जीवन में कोई व्यक्ति भौतिकता के शिखर और अध्यात्म के शिखर पर भी पहुँच सकता है, अगर ऐसा होता है तो यह अति विशिष्ट घटना संभवतः हो जाती है। भगवान शांतिनाथ ऐसे महापुरुष हुए हैं, जो चक्रवर्ती भी बने और तीर्थंकर भी हुए। और भी व्यक्ति ऐसे बने हैं।

शांतिनाथ महर्द्धिक चक्रवर्ती थे, भारतवर्ष का परित्याग किया और वे लोक में शांति करने वाले हैं। वे अनुत्तर गति-सिद्धि गति को प्राप्त हुए हर आदमी के मन में शांति की आकांक्षा रहती है। इसके लिए शांति के अनुरूप कार्य हो और शांति के बाधक तत्त्वों से बचें। शांति के बाधक तत्त्व हैं–भय, चिंता, गुस्सा और लोभ। इनसे शांति नष्ट या प्रतनू हो जाती है। समझदार आदमी इनसे दूर रहें।

भय और चिंता प्रशस्त व अप्रशस्त हो सकते हैं। गुस्सा और लोभ भी शांति में बाधक तत्त्व हैं। जप करते रहें ताकि मानसिक चित्त समाधि रहे। कषाय विजय की साधना होती रहे। शांति तो हमारे भीतर है। देह में उत्पन्न कष्ट को सहन करो। वह महाफल देने वाला, महान निर्जरा का लाभ देने वाला हो सकता है।

हमारा धर्म है–सहन करना। सहन करो, सफल बनो। शांति रखो, सफल बनो। श्रम करो, सफल बनो। निर्जराकारक श्रम करने से हमें लाभ मिल सकता है।

आज चतुर्दशी है, पूज्यप्रवर ने चतुर्दशी पर हाजरी का वाचन करवाया एवं प्रेरणाएँ प्रदान करवाई। हाजरी का दिन मर्यादा-आचार की स्मरणा का दिन होता है। हम आचार्य भिक्षु के ग्रंथों का स्वाध्याय करें। महाप्रज्ञ श्रुत आराधना पाठ्यक्रम भी एक गहन ज्ञानार्जन करने का पाठ्यक्रम है। और भी अनेक पाठ्यक्रम हो सकते हैं। बहुश्रुत बनने का प्रयास करें। ज्ञान के क्षेत्र में पुरुषार्थ करेंगे तो परिणाम आ सकेगा। ज्ञान, साधना और सेवा का विकास करते रहें। अवसर का लाभ उठाना चाहिए। चारित्रात्माओं द्वारा लेख पत्र का वाचन किया।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि जो व्यक्ति पराक्रम-पुरुषार्थ करता है, वह व्यक्ति जीतता है। जैन धर्म की साधना पुरुषार्थ पर आधारित साधना है। जो व्यक्ति पुरुषार्थ करता है, वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। तेरापंथ की हम आचार्य परंपरा को देखें कि सभी ने कितना पुरुषार्थ किया है। पुरुषार्थ का ही परिणाम है कि आज ग्यारहवीं पीढ़ी के प्रति लोगों का आकर्षण बना हुआ है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में सायन सभाध्यक्ष राजेश चोरड़िया ने अपनी भावना व्यक्त की। तेरापंथ महिला मंडल एवं स्थानकवासी महिला मंडल ने गीत प्रस्तुत किया। ज्ञानशाला की प्रस्तुति हुई।

तपगच्छ संप्रदाय के मुनि अमरचंद जी ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

सूरत शहर में पूज्यप्रवर का नागरिक अभिनंदन समारोह

प्रेक्षाध्यान और क्षमा के साधन से करें गुस्से पर नियंत्रण : आचार्यश्री महाश्रमण

भगवान महावीर युनिवर्सिटी, सूरत, २४ अप्रैल, २०२३

आचार्य महाश्रमण नागरिक अभिनंदन समिति, सूरत द्वारा तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी का नागरिक अभिनंदन समारोह का आयोजन किया। सूरत म्युनिसिपल कार्पोरेशन मेयर से लेकर अनेक संस्थाओं के गणमान्य व्यक्तित्व पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ पहुँचे।

महामनीषी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि दुनिया में हार और जीत की स्थितियाँ भी बनती हैं। बाहर की दुनिया में कोई जीत जाता है, हार जाता है तो अध्यात्म के क्षेत्र में भी जीत की बात आई है कि एक योद्धा दस लाख दुर्जेय शत्रुओं को जीत लेता है, वह शूरवीर आदमी है। दूसरा साधक आदमी जो केवल अपनी आत्मा को जीत लेता है। दोनों में बड़ा विजयी कौन?

शास्त्र में कहा गया कि जो एक अपनी आत्मा को जीत ले वह उसकी परम जय हो जाती है। शत्रुओं को जीतने वाले की तो जय होती है। आत्मा अमूर्त है, शरीर हमें स्थूल रूप में दिखाई दे रहा है। अध्यात्म की सिद्धांत प्रणाली में आत्मा अलग, शरीर अलग। यह निश्चय है। शरीर अस्थायी है, आत्मा स्थायी होती है। शरीर एक दिन विनाश को प्राप्त हो जाता है, आत्मा तो अविनाशी है।

प्रश्न है कि आत्मा को जीतने की बात बताई है, पर आत्मा को कैसे जीता जाए। आत्मा का जो स्वरूप है, उसको जिन तत्त्वों ने विकृत बना दिया है, आवृत्त कर दिया है, उन तत्त्वों को दूर करना आत्मा को जीतना होता है। विकृति के कारण आदमी गुस्सा, छलना, लोभ, अहंकार, राग-द्वेष में चला जाता है। आत्मा की प्रकृति शुद्धता है और विकृति अशुद्धता है। अशुद्धता को दूर करने पर शुद्धता नजर आने लगती है।

भौतिक संसाधन आदमी को सुविधा दे सकते हैं। भीतरी सुख साधना से निर्जरा से मिल सकता है। सुविधा के लिए संसाधन होते हैं। साधु तो साधनाशील होते हैं। अध्यात्म की साधना अपने आपको जीतने का तरीका है। गुस्से को दूर करने के लिए उपशम क्षमा की साधना करें। प्रेक्षाध्यान की साधना करें। मोन की साधना करें। यह एक प्रसंग से समझाया कि गुस्सा आए तो मुँह में मिश्री की डली ले लें। स्वयं का गुस्सा शांत करें और दूसरों का भी गुस्सा शांत करने का प्रयास करें।

हमारी अणुव्रत यात्रा चल रही है। हम सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की बातें भी जनता को बताते रहते हैं। समणी चैतन्यप्रज्ञा जी, समणी हिमप्रज्ञा जी अमेरिका से आई हैं। जैनिज्म, प्रेक्षाध्यान प्रचार-प्रसार का काम होता रहे। जनता में, विद्वानों में अच्छा काम हो।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि दो तरह की तस्वीर होती हैं। एक साधना और दूसरी जीवन तपस्वीर। साधारण में आकृति का मूल्य है, तो जीवन में प्रकृति का मूल्य है। आकृति अस्थायी है, प्रकृति का मूल्य स्थायी है। प्रवृत्ति के मूल्यों को बढ़ाने के लिए हम हमारे जीवन में मैत्री भावना व प्रमोद भावना के गुणों का विकास करें।

समणी चैतन्यप्रज्ञा जी ने अमेरिका स्थित फ्लोरिडा इंटरनेशनल युनिवर्सिटी में चल रहे जैन विद्या एवं प्रेक्षाध्यान के कार्यक्रमों की जानकारी श्रीचरणों में प्रस्तुत की। मुमुक्षु ऋजुला ने संस्कृत भाषा में अपनी भावना अभिव्यक्त की।

नागरिक अभिनंदन समारोह में तेरापंथ समाज द्वारा सामूहिक अभिवंदना गीत की प्रस्तुति दी। पूज्यप्रवर की अभिवंदना में आचार्य महाश्रमण अभिनंदना समिति से भरतभाई, गोविंद भाई ढोलकिया, म्युनिसिपल मेयर हेमाली बेन बोधावाला, सौराष्ट्र समाज से कानजीभाई, म्यू-स्टेंडिंग कमिटी चेयरमैन परेशभाई पटेल, गणपतराज चौधरी, पद्मश्री मथुरभाई सवाणी, पद्मश्री यतिनभाई करजीया, ओपेरा ग्रुप से शंकर भाई, प्रमोद भाई चौधरी, पद्मश्री कनुभाई टेलर, जीतू भाई शाह (जैनम ग्रुप से), इस्कान से राधाशरण ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर को अर्पित अभिनंदन पत्र का वाचन संजय भाई जैन ने किया। सभी आगंतुक महानुभावों ने पूज्यप्रवर को अभिनंदन पत्र उपहृत कर धन्यता का अनुभवन किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया। अभिनंदन समारोह का संचालन अनुराग कोठारी एवं विश्वेश संघवी ने किया।

संपादकीय

हे मन मंदिर के देवता हम तुमको आज बधाएँ

हे मन मंदिर के देवता हम तुमको आज बधाएँ।
तुलसी कृति अरु महाप्रज्ञ पट्टधर हम तेरे गौरव गाएँ।
दसों दिशाओं में तेरा यश गूँजे करो युगों तक तुम शासना।
दीक्षा कल्याणक के अवसर पर बस यही है शुभकामना।।

सूरज जब प्रातः उदय होता है तो रात के घनघोर अंधेरे को क्षण-भर में दूर कर देता है। सूर्य जब अपनी रोशनी देता है तो वह धर्म-संप्रदाय नहीं देखता चहूँ ओर अपनी रोशनी से प्रकाश फैलाता है। तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता महासूर्य की भाँति अपनी आध्यात्मिक रोशनी से संपूर्ण मानव जाति का कल्याण कर रहे हैं। सूर्य तो १२ घंटे ही अपनी रोशनी देता है परंतु आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रतिदिन १६ से १८ घंटे जन-जन के कल्याण के लिए लगा रहे हैं। अतः आपको आध्यात्मिक जगत का महासूर्य कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

५० वर्ष पूर्व जब बालक मोहन ने सरदारशहर में संयम पथ अंगीकार किया था तो शायद किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी कि यह साधारण बालक मुनि मुदित से युगप्रधान आचार्य महाश्रमण का सफर तय करेगा। यह सफर विरले व्यक्तित्व ही तय कर पाते हैं। आपकी संघ भक्ति, गुरु के प्रति निश्चल समर्पण, कर्तव्यनिष्ठा, सेवा भावना आपको इस पथ की ओर लेकर गई। आचार्य तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ का आप पर अटल विश्वास और स्नेह था कि उन्होंने संघ की बागडोर बेफिक्र होकर आपके करकमलों में सौंपी। आचार्यद्वय ही नहीं अपितु संपूर्ण धर्मसंघ आपकी शासना में निश्चिंतता का अनुभव करा रहा है।

आपके जीवन को देखें तो ऐसा लगता है कि १२ के अंक का अनूठा संयोग है। जीवन के हर १२ वर्ष बाद कोई न कोई विशेष दायित्व आपने संभाला है। १२ वर्ष की वय में दीक्षा, २४ वर्ष की आयु में महाश्रमण पद, युवाचार्य महाप्रज्ञ के अंतरंग सहयोगी, ३६ वर्ष की उम्र में युवाचार्य मनोनयन, ४८ वर्ष के अवसर पर आचार्य पदाभिषेक और ६० वर्ष के उपलक्ष्य में युगप्रधान।---सचमुच में अद्भुत संयोग।

आचार्य पदाभिषेक के पश्चात् आपने फरमाया कि सबसे पहले मैं सेवा केंद्रों की संभाल करूँगा। सेवाकेंद्र तेरापंथ धर्मसंघ के वह तीर्थ हैं जहाँ १०० वर्षों से भी अधिक समय से अनवरत साधु-साध्वियाँ विद्यमान हैं। अपने साधु-साध्वियों को संभालने स्वयं आचार्य पधारे इससे बड़ी सेवा भावना की बात क्या हो सकती है। नमन आपकी सेवा भावना को।

आचार्य पदारोहण के पश्चात जब आपने सुदूर यात्रा की घोषणा की तब शायद आपका सेवा केंद्रों की सार-संभाल के पश्चात यह उद्देश्य रहा होगा कि देश-विदेश के श्रावक समाज की भी सार-संभाल करें। लाल किले की प्राचीर से प्रारंभ हुई अहिंसा यात्रा नेपाल, भूटान और भारत के २० राज्यों से गुजरी और आपने हर जगह श्रावक समाज की अच्छी सार-संभाल की। इस यात्रा में अनेक विघ्न-बाधाएँ आई परंतु समता के परम साधक ने अडिग रहते हुए संपूर्ण श्रावक समाज को समता का पाठ पढ़ाया। नेपाल प्रवास के दौरान भूकंप की त्रासदी भी आपके चेहरे पर शिकन नहीं ला सकी। समता का इससे बड़ा क्या उदाहरण हो सकता है। समता के साधक को सादर प्रणाम।

अहिंसा यात्रा के दौरान आपने संघ को अनेकों आश्चर्य भरे दृश्य दिखाए। साध्वीवर्या पद का सृजन हो या मुख्य मुनिपद का सृजन, दोनों ही पद सामान्य व्यक्ति की कल्पना से बाहर की बात थी परंतु आपने संघ को इस तरह के उपहार देकर विस्मित कर दिया। आज इन दोनों विभूतियों को देखकर संपूर्ण संघ भविष्य के लिए आश्वस्त है। ऐसे कर्तव्यनिष्ठ आचार्य को सादर प्रणाम।

कीर्तिमानों की बात करें तो शायद आप ही वो विरले आचार्य हैं जिन्होंने अपने आचार्य काल के प्रथम १० वर्षों में दो-दो गुरुओं का शताब्दी वर्ष मनाया। शताब्दी वर्ष के अवसर पर १०० दीक्षा का संकल्प सभी को असंभव लग रहा था, परंतु बीदासर में ४३ दीक्षाओं वाला वृहद् दीक्षा महोत्सव देखकर सबके मुख से एक ही बात निकल रही थी कि हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें ऐसे पूजी महाराज मिले। वंदन कीर्तिधर आचार्य प्रवर को।

आपकी विनम्रता की गहराई की थाह पाना सचमुच में आम इंसान के वश की बात नहीं है। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी को शासनमाता का अलंकरण देना और उसके पश्चात जब असाध्य बीमारी की वजह से शासनमाता दिल्ली पधारी और उनकी स्थिति दिन-प्रतिदिन नाजुक होती जा रही थी तब उनके मुख से निकला कि गुरु दर्शन की अभिलाषा है। जब गुरुदेव को यह बात ज्ञात हुई तो आपने प्रलंब विहार करते हुए शासनमाता को दर्शन दिए। केवल दर्शन ही नहीं दिए, धर्मसंघ के अधिशास्ता द्वारा वंदना करना इतिहास की दुर्लभ घटना बन गई। शासनमाता को दर्शन सेवा के साथ आत्मलोचन करवाकर पवित्रता से अभिष्णात कर दिया। गुरुदेव की यह यात्रा स्तुतीय और स्मरणीय बन गई। वंदन विनम्रता की प्रतिमूर्ति आचार्यप्रवर के चरणों में।

शासनमाता के प्रयाण के पश्चात उनके स्थान पर मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा जी को साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी के रूप में स्थापित कर आपने संपूर्ण साध्वी समाज और श्रावक समाज को आश्वस्त कर दिया। मुख्य मुनि महावीर कुमार जी को बहुश्रुत परिषद का संयोजक मनोनीत कर उत्कृष्ट कर्तव्यनिष्ठा को साक्षात दिखाया। वंदन कर्तव्यनिष्ठ महापुरुष महाश्रमण को।

हम कीर्तिधर आचार्यों के नाम सुनते थे परंतु आपश्री की संयम यात्रा और आचार्य काल में हम कीर्तिमान रचते हुए आपको देख रहे हैं। सूरत के अक्षय तृतीया अवसर पर ११५१ लोगों द्वारा पारणा करना भी तेरापंथ धर्मसंघ में इतिहास दुर्लभ है।

आचार्यप्रवर हम यही कामना करते हैं कि आप स्वस्थ रहें, निरामय रहें और युगों-युगों तक धर्मसंघ और मानव जाति को जीवन की सही राह प्रदान करते रहें। आपके संयम पर्याय के शतक के हम साक्षी बनें, यही कामना---।

संघ पुरुष शतायु हो।
संघ पुरुष चिरायु हो।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
1 - 7 मई, 2023

✦ *कर्मवाद आस्तिक विचारधारा का महत्त्वपूर्ण सिद्धांत है। दो प्रकार की विचारधाराएँ हैं–आस्तिक व नास्तिक।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यप्रवर की सन्निधि में ११५१ तपस्वियों ने किया पारणा

डायमंड नगरी में ऐतिहासिक अक्षय तृतीया कार्यक्रम का भव्य आयोजन

अक्षय आनंद और अक्षय शक्ति की हो प्राप्ति : आचार्यश्री महाश्रमण

भगवान महावीर यूनिवर्सिटी, सूरत, २३ अप्रैल, २०२३

वैशाख शुक्ला तृतीया, अक्षय तृतीया, आखा तीज का दिन श्रमण संस्कृति से जुड़ा दिन है तो सनातन परंपरा से भी जुड़ा दिन है। कहा जाता है कि आज के दिन त्रेता युग का प्रारंभ हुआ था। श्रमण जैन परंपरा में आज का दिन वर्तमान जम्बुद्वीप की अवसर्पिणी काल के भरत क्षेत्र के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान ऋषभ से जुड़ा दिन है।

सूरत में अक्षय तृतीया का विशेष महोत्सव श्रमण परंपरा के शिखर पुरुष आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि एक ऐतिहासिक घटना होने जा रही है। लगभग ११५१ वर्षीतप के पारणे तेरापंथ धर्मसंघ में प्रथम बार परम पुरुष के सान्निध्य में होने जा रहा है। लगभग ५५ हजार से भी अधिक श्रावक समाज की उपस्थिति। एक व्यवस्थित रूप से इतने पारणे सूरत में पहली बार होने जा रहे हैं।

इस पावन अवसर पर तेरापंथ के वर्तमान सरताज महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल अमृत देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि शास्त्र की वाणी है–ज्ञान से भावों को जानता है, दर्शन से उस पर श्रद्धा करता है। चारित्र से निग्रह करता है, तप से परिशोधन करता है। चतुरंग मोक्ष मार्ग है–ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप। आज अक्षय तृतीया का दिन एक तप की सानंद संपन्नता का दिन है।

परम तपस्वी परमात्मास्वरूप भगवान ऋषभ की आंशिक तपस्या की संपन्नता का दिन भगवान ऋषभ इस भरत क्षेत्र के वर्तमान अवसर्पिणी काल के प्रथम तीर्थंकर हुए। पहले उन्होंने लौकिक सेवा के कार्य, सावद्य कार्य भी उन्होंने अपने प्रशिक्षण के विषय बनाए।

एक प्रश्न होता है कि इतने ज्ञानी पुरुष जो तीर्थंकर होने वाले है, इन सांसारिक कार्यों में अपना समय क्यों लगाया। भूमिका-भूमिका में अंतर होता है। जहाँ भूमिका व दायित्व का संबंध होता है, वहाँ सावद्य को गौण कर दिया जाता है, कर्तव्य निर्वाह को मुख्यता दी जा सकती है। भगवान ऋषभ ने ऐसा ही किया। वे जानते थे कि ये असि-मसि सावद्य कार्य है, परंतु उन्होंने लोकानुकंपा व कर्तव्य निर्वाह के लिए सावद्य कार्य भी किया। (शेष पृष्ठ २५ पर)

तपस्वियों में 91 पति-पत्नी के जोड़े शामिल

अक्षय तृतीया महोत्सव में वर्षीतप के 1151 तपस्वियों ने हजारों श्रद्धालुओं की साक्षी में रविवार को पारणा किया। इनमें सूरत के 590 तपस्वी शामिल थे। तपस्वियों में 91 जोड़े पति-पत्नी के भी शामिल थे। इनके अलावा 12 से 25 वर्ष की उम्र के 32 युवा तपस्वी थे तो 80 से 95 वर्ष की आयु के वयोवृद्ध 24 तपस्वियों ने भी पारणा किया। महोत्सव में 18 तपस्वियों ने अपने जीवनकाल का 25वाँ वर्षीतप संपन्न किया तो दो तपस्वियों के 48वें वर्षीतप का पारणा भी हुआ।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के सूरत प्रवास की झलकियाँ

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**